प्रेरितों के काम

१, २ **ओ** थियुफिलुस, जो कुछ यीशु ने किया और सिखाया, मैंने उन सबके बारे में तुम्हें लिखा था। **पवित्र** आत्मा के
३ द्वारा जब वह अपने चुने हुए प्रेरितों को आदेश देने के बाद तक उठाए नहीं गया । **यीशु** के दुःख उठाने के बाद, बहुत
से ठोस सबूतों की मदद से उन्होंने अपने आप को ज़िन्दा दिखाया और वह चालीस दिन तक उन्हें दिखते रहे और
४ परमेश्वर के शासन के बारे मे बताते रहे। **उन** शिष्यों से मिलकर यीशु ने यह आज्ञा दी, कि वे यरुशलेम से बाहर न
जाएँ। यह भी कि स्वर्गिक पिता के उस वायदे के पूरा होने का इन्तज़ार करें, जिसके बारे में उन लोगों ने यीशु से सुना
५ था। **वह** यह कि यूहन्ना ने तुम्हें पानी से बपतिस्मा दिया था, लेकिन बहुत जल्दी ही तुम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा
६ पाओगे। **इसलिए** जब यीशु से उनकी मुलाकात हुयी उन्होंने यह सवाल किया, ''प्रभु स्वामी, क्या आप इस समय इस्त्राएल
७ को-वापस उसकी खोई हुयी ज़मीन देंगे या फिर से हुकूमत चलाने का मौका देंगे। **यीशु** ने उनको उत्तर दिया, ''जिन
८ तारीखों और समयों को स्वर्गिक पिता ने, अपने काबू में रखा है, उन्हें तुमको जानने की ज़रुरत नहीं है। **लेकिन** जब पवित्र

१.१ ''थियुफिलुस'' - लूका १:३ । जिन यीशु के कामों और शिक्षाओं को चार शुभसंदेश की किताबों में लिखा गया, वे उनकी सेवकाई की शुरुआत थी। यीशु की मौत, जी उठने और ऊपर उठाए जाने तक वह अपने लोगों के ज़रिए काम करते रहे। इनमें से कुछ का लेखा-जोखा प्रेरितों के काम नामक पुस्तक में है- २:३३; ३:६,१६,२६; ४:१०,३०; ५:३१; ७:५६; ६:३-१६; १८:६,१०; २६:१५-१८ तुलना करें मत्ती २८:२०, मरकुस १६:२०।

१.२ ६-११ पद मरकुस १६:१६; लूका २४:५१; मत्ती ३:१६; यूहन्ना ७:३६; १४:१६-१७,२६; २०:२२ में पवित्र आत्मा पर नोट्स देखें।, उत्पत्ति १:२ से सम्बधित पदों को भी। 'प्रेरित' शब्द का मतलब वे लोग जो आदेश पाकर भेजे जाते हैं।
''जिन्हें नियुक्त किया'' मत्ती १०:२; मरकुस ३:१३-१६; ६:१२-१६।

१:३ ''अपने वचन के अनुसार'', मत्ती २८:६ पर नोट्स देखें।
''जी उठा'' यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना और मौत। तुलना करें २:२४; १७:३; २६:२३।
''यीशु के दुःख उठाने'' पहले ही से यीशु ने बताया था कि वह जी उठेंगे (मत्ती १६:२१; १७:२३; यूहन्ना १०:१७,१८)। वह जी भी उठे और कहा, कि ऐसा हुआ है। (मत्ती २८:१६-१८; मरकुस १६:१२-१४; लूका २४:३६-४३; यूहन्ना २०:१६-२६; २१:१; १ कुरि १५:५-८)।
यह सबूत इतना ठोस था कि यीशु के सेवक इसे बताने के लिए तकलीफें सहने के लिए तैयार थे। उनकी शिक्षा का यह खास विषय था। सब जगह उन्होंने यह तालीम दी। सभी स्थानों में वे यीशु के जी उठने की बात कर रहे थे (२:२४,३२; ३:१५; ५:३०-३२; १०:४०; १३:३०,३१, १७:३१)। ये सुनकर वहाँ पर बड़ी संख्या में लोगों ने विश्वास कर लिया।
''चालीस दिन'' यहीं वह पद है जो यीशु के जी, उठने और ऊपर उठाए जाने के बीच के समय को बताता है।लूका २४:४४-४७ हमें यीशु की कुछ सिखायी बातें दिखती हैं।
''स्वर्ग का राज्य'' . मत्ती ४:१७। देखिए प्रेरित १:६; ८:१२; १४:२२; १६:८; २०:२५; २८:२३,३१।

१:४,५ जब तक पवित्र आत्मा प्राप्त न हो तब तक प्रेरित सेवा के योग्य नहीं थे। मसीह के बारे में सच्चाई का टाईम और नियम शास्त्र की सुनना मात्र उनको उनकी सेवा के बारे में योग्य नहीं कर सकती थी।
''पिता की प्रतिज्ञा'' देखें लूका ११:१३; २४:४६ यूहन्ना १४:१६,१७,२६। वायदा यह था कि उन्हें पवित्रात्मा का बपतिस्मा मिलेगा। मत्ती ३:११; मरकुस १:८; लूका ३:१६। पौलुस की शिक्षा का निचोड़ यह है कि विश्वासियों को सिर्फ विश्वास से पवित्रात्मा मिलता है। गल ३:२,१४ देखें।

१:६ यीशु मसीह चालीस दिन तक परमेश्वरीय शासन के बारे में सिखा रहे थे (पद ३)। यीशु ने (ओल्ड टेस्टॉमेन्ट के समझने के लिए उनकी समझ को खोल दिया था; लूका २४:४५)। जिस दिन यीशु उठाए गए शिष्यों ने यह सवाल यीशु से कियाथा-पद ६)। इसलिए अज्ञानता में यह सवाल उन्होंने नहीं किया था, लेकिन यह जानते हुए कि इस्त्राएल के लिए उनकी क्या योजना थी। उन्हें यह मालूम था कि परमेश्वर ने उनसे राज्य छीन लिया था (मत्ती २१:४३)। लेकिन जो कुछ यीशु ने सिखाया था, उसके आधार पर उन्होंने यह शक नहीं किया, कि यहोवा परमेश्वर किसी दिन वह राष्ट्र उन्हें वापस करेंगे और दुनिया की निगाहों में ऊँची जगह देंगे (देखें ३:१६-२१; यशा २:२-४; १४:१-२; जक १४:१६-२१)। लेकिन शिष्य यह नहीं जानते थे कि ऐसा कब होगा। ध्यान दें कि उन्होंने यह नहीं पूछा, ''क्या आप इस्त्राएल को राज्य वापस करेंगे'' लेकिन यह, ''क्या आप इस समय इस्त्राएल को राज्य वापस करेंगे?''

१:७ यीशु ने उनकी गलती को यह कह कर सुधारा नहीं कि वह इस्त्राएल को राज्य वापस करेंगे। क्योंकि ४० दिन से वह इसी विषय पर सिखा रहे थे, यह साफ ज़ाहिर है कि वह चाहते थे कि वे यह समझें। इस पृथ्वी पर वे उनके प्रतिनिधि और उनकी मण्डली के शिक्षक ठहराए गए थे। अगर इस्त्राएल को वापस राज्य लौटाए जाने के बारे में अपने विश्वास में वे गलत थे, तो क्या हम शक कर सकते हैं कि यीशु ने ही उनसे ऐसा कहा होगा? क्या हम यह सोच सकते हैं, कि यीशु उन्हें इस ज़रुरी विषय पर दुविधा में रखना चाहते थे। सिर्फ यीशु ने यह कहा कि इन सब के बारे मे जानना उनके मतलब की बात नहीं है। क्या ऐसा जवाब देकर यीशु ने इस्त्राएल और परमेश्वर के राज्य के बारे मे उनके विचारों को स्वीकार नहीं किया?

१:८ पद ५ यहाँ शक्ति का मतलब है ईश्वरीय योग्यता और ताकत। इस विरोधी दुनिया में जिस तरह से उन्हें रहना और बोलना था, गवाही देनी थी, उसके लिए उन्हें इन्सानी ताकत और योग्यता से बढ़कर चाहिए था। उस ताकत से भी ज़्यादा जो नए जीवन के मिलने से उन्होंने पायी थी (यूहन्ना १:१२,१३; ३:३,५,८)। आज भी यह सच है।

आत्मा तुम्हारे ऊपर आएगा, तब तुम यरुशलेम, सारे यहूदिया, सामरिया और पृथ्वी के कोने-कोने तक मेरी गवाही दोगे"
९ **इन** सब बातों को कहने के बाद जब वे लोग देख ही रहे थे, यीशु को ऊपर उठा लिया गया और एक बादल ने उन्हें
१० ढँक लिया। **यीशु** के ऊपर उठाए जाते समय वे ऊपर देखते रह गए। अचानक सफ़ेद कपड़े पहने हुए दो व्यक्ति उनके
११ पास आ खड़े हुए। **उन्होंने** कहा, "तुम गलील निवासी इस तरह से टकटकी लगाए क्यों खड़े हुए हो? यही यीशु, जिन्हें
१२ तुम्हारे बीच से स्वर्ग उठा लिया गया, इसी तरह से स्वर्ग से नीचे उतरेंगे।" **इसके** बाद वे जैतून पहाड़ से उतर कर यरुशलेम
१३ आए, जहाँ पहुँचने में एक दिन लगता था। **वे** जब वहाँ पहुँच गए, तो पहली मंजिल पर गए जहाँ वे ठहरे हुए थे।
पतरस, याकूब, यूहन्ना, आन्द्रियास, फिलिप, थॉमस, बारतुल्मै, मत्ती, अल्फियस का बेटा याकूब, शिमौन और याकूब का
१४ भाई यहूदा। **ये** सभी कुछ स्त्रियों, यीशु की माँ मरियम और उनके भाइयों के साथ वहाँ एक मन होकर आराधना कर रहे थे।
१५,१६ **एक** दिन पतरस वहाँ बैठे १२० लोगों के बीच खड़ा होकर **वह** कहने लगा, भाइयो-बहनो, पुराने समय में दाऊद
के मुँह से पवित्र आत्मा ने जो कुछ भी यहूदा के बारे में कहलवाया था, जो यीशु के पकड़वाने वालो का मददगार बना।
१७,१८ उस वचन को पूरा होना था **क्योंकि** वह हममें से ही था, और उसे इस सेवकाई में एक हिस्सा दिया गया था। **इस** इन्सान
ने अपनी रिश्वत की कमाई से एक खेत खरीदा था। वहीं पर वह सिर के बल गिर गया। उसकी देह बीच मे से फट
१९ गयी और सारी अतड़ियाँ बाहर निकल पड़ी। **जो** लोग यरुशलेम में रहा करते थे, उन्हें यह बात मालूम पड़ गयी। इसलिए

"गवाह" लूका २४:४८; यूहन्ना १५:२७; प्रेरित २:३२; ३:१५; ५:३२; १०:३९, १३:३१; २२:१५ आदि। एक गवाह वह होता है जो अपने देखे अनुभव को बाँटता है। प्रेरितों ने यीशु के जीवन की सच्चाई, मौत, जी उठने और ऊपर जाने की सच्चाई का संदेश लोगों को दिया था। यह सब का उन्होंने अनुभव किया था। उन्होंने वही सिखाया भी जो यीशु ने सिखाया था। इस पद को लेकर हम कह सकते हैं कि प्रेरितों के काम को तीन भागों मे बाँटा जा सकता है। यरुशलेम में गवाही (१-७) यहूदिया और सामरिया में (८-१२) दुनिया के दूसरे इलाकों में (१३-२८) । यह गवाही आज भी चालू है।शुरू के प्रेरितों से जो कुछ यीशु के सेवकों ने सीखा वह सब आज भी सिखाया जा रहा है। वे मसीह के साथ अपने अनुभव के बारे में बता सकते हैं।

१:९ २:३३; मरकुस १६:१९; लूका २४:५१; फिलि २:९-११। केवल यहीं यीशु के उठाए जाने के सम्बन्ध में बादल का वर्णन हुआ है। बाईबल में बादल प्रायः स्वर्गिक पिता की मौजूदगी और महिमा को दिखाता है। (निर्ग १३:२१; १६:१०; १९:९; १९; २४:१५, ३४:५; ४०:३४-३५; लैव्य १६:२; १ राजा ८:१०,११; यशा ४:५; १९:१; मत्ती १७:५; प्रका १०:१; १४:१४)। यीशु पृथ्वी पर से जा चुके थे। अब शिष्यों को विश्वास से जीना था, देखकर नहीं। यीशु कहाँ गए? स्वर्ग में २:३३; ३:२१। स्वर्ग कितनी दूर है? शायद बहुत पास (७:५५,५६)। यह अनदेखा दायरा है। इस पृथ्वी पर मनुष्य इसे देख नहीं सकता है। लेकिन इस भौतिक संसार के समान यह भी वास्तविक है।

१:१० मरकुस १६:५; लूका २४:४; यूहन्ना २०:१२।;

१:११ शायद अर्थ यह है: यीशु स्वर्ग जाने पर थे और कुछ समय तक वहीं रहनेवाले थे। जल्दी आनेवाले नहीं थे। इसलिए ऊपर देखते रहना बेकार था। जब तक वह वापस न आएँ, शिष्यों के पास एक काम है। यीशु के दोबारा आने के सम्बन्ध में मत्ती २४:३०; २६:६४; मरकुस १३:२६; लुका २१:२७; यूहन्ना १४:३ आदि।

१:१२ जैतून का पहाड़ यरुशलेम के पूर्व १ कि.मी. पर है। यहूदी सिखानेवालों ने यह नियम बनाया था कि यहूदी सब्त के दिन कितना चल सकते थे।

१:१३ यूहन्ना २०:१९,२६ में बताया गया कमरा भी यही था।

१:१४ कोई शक नहीं कि जिसका वायदा यीशु ने किया था, उसी के लिए वे याचना कर रहे होंगे - पद ४,५,८; लूका ११:१३; २४:४९। तमाम स्त्रियों ने मसीह पर भरोसा रखा था -लूका २३:४९,५५; २४:१,१०। यीशु की माँ मरियम अब यूहन्ना के साथ रह रही थी (यूहन्ना १९:२६,२७)। बाईबल में यह आखिरी जगह है जहाँ उसके बारे में लिखा है। वह पूरी तरह से इसके बाद लोप हो जाती है और उसका बेटा मण्डली पर छा जाता है। शुरु में यीशु के शिष्य यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि वह दुनिया के मुक्तिदाता हैं (यूहन्ना ७:५)। यीशु के जी उठने के बाद उन्होंने विश्वास किया और शिष्य बन गए। दस दिन तक उन्होंने आत्मा पाने के लिए इन्तज़ार भी किया। उसके बाद से आज इन्तजार करने की ज़रुरत नहीं है। लेकिन स्वर्गिक पिता की उपस्थिति में बैठना आत्मिक बल पाने के लिए ज़रुरी होता है ।

१:१५ "शिष्य"-मत्ती १०:१ पर नोट्स देखें। यीशु ने यरुशलेम में अच्छी बातें सिखायी थीं और अजीब काम किए थे। यीशु का झुण्ड बनने में सिर्फ १२० लोगों ने ही हिम्मत की थी। हालाँकि और बहुत से विश्वासी थे, जिन्होंने किसी न किसी कारणवश इस झुण्ड में भाग नहीं लिया। १ कुरि १५:६ में ५०० विश्वासियों की बात कही गयी है, लेकिन उनमें से अधिकांश गलीली थे। इसकी तुलना में, ३००० ने पेन्टिकॉस्ट के दिन यीशु को अपनाया था; २:४१, तुलना करें यूहन्ना १४:१२; १६:७,८)।

१:१६ जैसा यीशु ओल्ड टेस्टॉमेन्ट को इज्ज़त देते थे, पतरस भी करता था। वह मानता था कि सृष्टिकर्ता के आत्मा से इसे लिखा गया था। इसलिए इसे पूरा होना ही था।मिलान करें ४:२५,२६;मत्ती ४:४;५:१७,१८; १५:३,६; लूका २४:४४-४६,यूहन्ना १०:३५।

१:१७ मत्ती १०:१-४ ।

१:१८,१९ मत्ती २७:३-८ बड़े याजकों ने यहूदा के नाम पर खेत खरीदा था।यहूदा ने अपने आप को फाँसी लगा ली। १:२० भजन ६९:२५; १०९:८ ।

२० उन्हीं की भाषा में वह खेत हकलूदमा (खून का खेत) कहलाया।''**क्योंकि** गीतों की किताब में यह लिखा है, उसका घर
२१ वीरान हो जाए, आगे को उसमे कोई न रहे और दूसरा व्यक्ति उसके पद को ले'' ''**इसलिए** यीशु के इस पृथ्वी की
२२ सेवा के समय यहाँ पर इकठ्ठे बहुत से लोग साथ थे। **यूहन्ना** के बपतिस्मे से जब तक यीशु उठाए नहीं गए, एक
२३ व्यक्ति को जिसने उन्हें जी उठने के बाद देखा, गवाह होने के लिए नियुक्त किया जाए, तब **यूसुफ** जिसे बरसबा कहते
२४ हैं, जिसका नाम जस्तुस था और मत्तियाह को उन्होंने सामने रखा। **उन्होंने** यह दुआ की और कहा, ''यीशु आप जो
२५ कि सभी लोगों के मन को जानते हैं, दिखाईए कि इन दोनों मे से आपने किस को चुना है **क्योंकि** यहूदा के अपराध
से उसका पतन हुआ और वह अपनी जगह पहुँच गया, इस वजह से इस सेवकाई और प्रेरित पद को भरने के लिए
२६,**२** **उन्होंने** लाटरी डाली और मत्तियाह का नाम निकलने से, उसी को ग्यारह के साथ गिना गया। **पेन्तिकुस्त** के त्यौहार
२ के दिन **अचानक** ही आकाश से एक तेज हवा की आवाज़ आयी। इस आवाज़ ने उस जगह को भर दिया जहाँ वे
३,४ सभी बैठे हुए थे। **उन** सभी के ऊपर आग की तरह बँटी हुयी सी जीभें आकर उनमें से सभी पर आ ठहरीं। **वे** सभी
पवित्र आत्मा से ओतप्रोत हो गए (भर गए)। और बोलने की जैसी योग्यता पवित्रात्मा ने दी, वे कभी न सीखी हुयी
५,६ भाषाओं में बोलने लगे। **उस** समय हर एक भाषा बोलने वाले धार्मिक यहूदी लोग यरुशलेम में थे । **इस** आवाज को
सुनकर एक बड़ी भीड़ इकठ्ठी हो गयी। उन्हें अचम्भा इसलिए हुआ क्योंकि हर एक ने उन्हें अपनी भाषा में बोलते
७,८ सुना । **आश्चर्य** से भरकर उन्होंने एक दूसरे से कहा, ''क्या ये सभी बोलने वाले गलील के नहीं हैं? **तब**
९ हम उनके मुँह से अपनी भाषा क्यों सुन रहे है? **पारथी**, मादी एलामी मेसोपोटामिया के रहने वाले, यहूदिया,कप्पदूसिया, पुन्तुस
१० और एशिया **फ्रिूगिया**, पंफूलिया, मिस्त्र, लिबिया के कुछ भाग और रोम के परदेशी, यहूदी और यहूदी मत को स्वीकारने

१:२१,२२ यीशु की सिखायी बातों और उनके द्वारा की गयी बातों पर यहाँ ज़ोर है। यूहन्ना १५:२७ से मिलाएँ।

१:२३-२६ क्या इन सब बातों में उन्होंने बुद्धिमानी से बर्ताव किया या गलती की ? मत्तियाह के बारे में आगे न्यू टैस्टामेन्ट में कहीं कोई ज़िकर नहीं है। वहां देखिए दो व्यक्तियों के नाम सामने आते हैं।चिट्ठी उठाने से एक का नाम आता है। यहाँ यह नहीं लिखा है कि उन्होंने पहले प्रार्थना की थी या नहीं। क्या मात्र दो लोगों के नाम से ईश्वरीय चुनाव पर सीमा निश्चित नहीं हो गयी थी? ऐसा लगता है कि बाद में पौलुस का चुनाव यीशु ने १२ वें शिष्य के रुप मे किया था। रोमि १:१,५; १ करि ९:१; १५:८-१०; २ कुरि १२:१२; गल १:१)। वह कल्पना नहीं कर सकता कि मत्तियाह का नाम (प्रका २१:१४) ईश्वरीय शहर की नींव में हो और पौलुस का नाम न हो। चिट्ठी उठाने के बारे में देखें लैव्य १६:८; यहोशु १८:६,८,१०; १ शमूएल १४:४२; नहेम्याह १०:३४।

१:२६ ''प्रेरित'' मत्ती १०:२ में नोट्स।

२:१ मनुष्य के पूरे इतिहास में यह एक अनूठा बड़ा दिन था, जब इन्तज़ार करनेवाले शिष्यों के ऊपर स्वर्गिक पिता का आत्मा उतर आया। पृथ्वी पर लोगों के बीच ईश्वर के काम का नया दौर था। एक नया युग-शर्तहीन कृपा का युग, परमेश्वर के आत्मा का युग आरम्भ हो गया। सारी पृथ्वी के अन्त तक यीशु की खुशखबरी जाने का वही पहला दिन था। इसमे कोई आश्चर्य की बात नहीं कि परमेश्वर ने ज़बरदस्त निशानों को दिखाकर यह बता दिया कि समय की शुरुआत हो चुकी है। निर्गमन १९:१६-१९ मे नियमशास्त्र (व्यवस्था) की शुरुआत के काल से तुलना करें।

२:२ जैसा इब्रानी में वैसा ही यूनानी में इस शब्द का मतलब है हवा (साँस) और पवित्रात्मा। इसलिए कि शब्द हवा परमेश्वर के आत्मा के लिए इस्तेमाल हो (यूहन्ना ३:८; यहेज ३७:९-१४) यह भी कि दिए जाने वाले आत्मा का आगमन हवा की शक्तिशाली आवाज से हुआ।

२:३ शताब्दियों से यहूदियों ने आग को परमश्वर की मौजूदगी का एक चिन्ह जाना ही था (निर्ग ३:२ के नोट्स)। हर एक शिष्य के साथ स्वर्गिक पिता का आत्मा था। "आग की जीभें'' इस बात की तरफ इशारा थीं कि उनका खास काम क्या होना है। वे परमेश्वर के मुँह थे (१:८ आदि) उनकी बोलने की शक्ति परमेश्वर के आत्मा की थी। पवित्र आत्मा का आना यीशु के वचन का पूरा होना था (१:४,५; लूका २४:४९; यूहन्ना १४:१६, १७, २६; १६:६)

२:४ ''पवित्रात्मा से भरना'' पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का वायदा यीशु ने किया था। इसे उन्होंने पा लिया था और इसका नतीजा भी दिख रहा था। आत्मा से भरना विश्वासी के लिए बहुत महत्व का है।

२:५-१३ ये ईश्वर को सम्मान, आदर देकर जीवन जीने वाले लोग थे (पद ६)। वे बहुत समय से बाहर थे लेकिन वापस यरुशलेम आ गए थे। कुछ वापस रहने के लिए आए और कुछ फसल के त्यौहार में शामिल होने। पन्द्रह राष्ट्रों के बारे में कहा गया है- उस दिन दो तरह के इकट्ठे हुए लोगों के बारे में है। एक वे जो उलझन में पड़ गए, दूसरे वे जो अचरज में पड़ गए (पद ६ एवं ७,१२)। वे जान गए कि कुछ अजीब हो रहा है लेकिन समझ नहीं पाए। दूसरे यह सोचते थे कि वे सब जानते हैं। (पद १३) वे ऐसे लोग थे जो हर बात को रद्द करते और हँसते है क्योकि कुछ बातें अजीब सी लगती है और सोचते हैं कि उनके पास हर बात का जवाब है। इतिहास का एक अनोखा दिन आ पहुँचा था, लेकिन वे मज़ाक में टाल रहे थे। जहाँ कहीं लोग आत्मा से भरते हैं वे दो तरह के लोगों का सामना करते हैं।

२:७ गलील के यहूदी इस तरह से बोलते थे, जिन्हें पहचाना जा सकता था (मरकुस १४:७०)।

११,१२ वाले,**क्रेती** और अरबी को भी हम सृष्टिकर्ता के अद्‌भुत कामों का बखान अपनी भाषा में सुन रहे हैं। **वे** सभी
१३ आश्चर्य और दुविधा में पड़ गए और एक दूसरे से पूछने लगे, ''यह सब क्या है?'' **कुछ** लोगों ने मज़ाक करते हुए
१४ कहा, 'ये लोग ताज़ी शराब के नशे में हैं।'' **लेकिन** पतरस ने उन ग्यारहों के साथ खड़े होकर बुलन्द आवाज़ में कहा,
१५ ''यहूदिया के निवासियो और वे सभी जो यरुशलेम में ठहरे हुए हो, मेरी ध्यान से सुनो **जैसा** तुम सोच रहे हो कि ये
१६ लोग नशे में हैं, ऐसी बात बिल्कुल नहीं है, क्योंकि अभी तो सुबह के नौ बजे हैं। **लेकिन** यह वही बात है, जिसके बारे में
१७ योएल नबी ने कहा थाः **आखिर** के दिनों में क्या होगा, इसके बारे में परमेश्वर कहते हैं- सभी लोगों पर मैं अपने
आत्मा में से उण्डेलूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगे। तुम्हारे नौजवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे बुज़ुर्ग लोग
१८,१९ स्वप्न देखेंगे। **मै** उन दिनों में अपने आत्मा में से अपने सेवकों और सेविकाओं पर भी आत्मा उण्डेलूँगा **साथ** ही
मैं आकाश में आश्चर्यचकित करनेवाली बातें और इस पृथ्वी के ऊपर चिन्ह जैसे रक्त, आग और धुआँ दिखाऊँगा।
२०,२१ इसके पहले कि वह बड़ा और मशहूर प्रभु का दिन आए, **सूरज** अँधेरे में और चाँद रक्त में बदल जाएगा, **जो** कोई
२२ प्रभु के नाम को लेगा, वही मुक्ति पाएगा । ''**हे** इस्त्रालियो सुनोः जैसा कि तुम जानते हो परमेश्वर ने यीशु के द्वारा
तुममे आश्चर्यकर्म, अद्‌भुत कार्य और चिन्ह दिखाकर यह पुष्ट कर दिया, था कि नासरत में रहनेवाले यही यीशु खरे व्यक्ति
२३ थे। **उन्हें** परमेश्वर के पूर्व ज्ञान और निश्चित उद्देश्य के आधार पर सुपुर्द किया गया। तुमने उन्हें लेकर दुष्ट हाथों से

२:११ इसे तीन बार दोहराया गया है (पद ६,८)। स्वर्गिक पिता ने तुरन्त उन्हें ऐसी योग्यता दी जिससे वे कभी भी न सीखी हुयी विदेशी भाषाएँ बोलने लगे। यह नहीं मालूम कि जो कुछ वे कह रहे थे, खुद समझते थे या नहीं।

२:१३ यह आरोप कि शिष्य नशे में थे, काफी महत्व का है। नशे में होने का मतलब है नशे के वश में होना। शिष्य पवित्र आत्मा के प्रभाव में थे। उनका व्यवहार सामान्य और आम आदमी की तरह नहीं था। इफि ५:१८ से तुलना करें।

२:१४ जब यीशु भी इस पृथ्वी पर थे पतरस उनकी तरफ से बोलने वाला सदस्य था। यहीं पर नए युग का पहला संदेश था। इसमें विषय थे - पवित्र आत्मा, यीशु की मौत, जी उठना और स्वर्ग पर उठाया जाना।

२:१५ ईश्वर प्रेमी यहूदी सुबह शराब नहीं पीते थे। वे शाम के समय में मास के साथ शराब पीते थे।

२:१६ पद १७-२१ योएल २:२४-३२ से हैं ''यह वही है जिसके बारे में कहा गया था'' का मतलब है कि उस दिन पिता अपने आत्मा के भेजे जाने का वायदा पूरा किया।

२:१७ ''अंत के दिनों में'' योएल के २:२८ के इब्रानी में नहीं है जिसके लिए जो शब्द है उसका मतलब है ''और बाद में''। कभी-कभी बाइबल में ''अन्त के दिनों में'' या ''अन्त समय'' उस समय की तरफ इशारा करता है जो यीशु के पहली बार पृथ्वी पर आने पर शुरु हुआ और दूसरे बार आने तक खतम होना है। इब्रा १:३; याकूब ५:२; १ पत १:२०; २ पतरस ३:३; १ यूहन्ना २:१८ (''आखिरी घण्टा'') यहूदा १८। परमेश्वर ने यह वायदा किया था कि ''सभी लोगों'' के ऊपर वह अपने आत्मा को उण्डेलेंगे। पेन्तिकुस्त के दिन यह भविष्यद्वाणी अधूरी ही पूरी होती है। क्योंकि उस समय तक सिर्फ यहूदियों और यहूदी धर्म अपनाने वालों ही ने आत्मा पाया था। आगे हम प्रेरित ८:१७; १०:४४,४५; १९:६ में इसको पूरा होते देखते हैं। जैसे-जैसे मसीह का संदेश दुनिया मे पहुँचता गया, ज़्यादा से ज्यादा लोग पवित्र आत्मा पाते गए। यह प्रक्रिया जगत के आखिर तक जारी रहेगी (पद २०)। ''बेटे'' और ''बेटियाँ'' ''जवान'' और ''बूढ़े'' सभी आत्मा पाएंगे। गिनती ११:२५ मे भविष्यद्वाणी पर नोट्स देखें। दर्शन और स्वप्न पर १८:९,१०; उत्पत्ति १५:१ गिनती १२:६ देखें।

२:१८ ''मेरे सेवक लोग''- दुनिया के सभी लोग इस आत्मा को पा नहीं सकते, लेकिन वे जो उन पर भरोसा रखते हैं और उनके सेवक बन जाते हैं। देखें यूहन्ना १४:१७।

२:१९,२० प्रभु का दिन इस पीढ़ी के खतम होने पर शुरु होता है और इसी में यीशु का आना भी होगा । यशा १३:६-१३; योएल १:१५; २ थिस्स ५:२; २ थिस्स २:२; २ पत ३:१० के नोट्स देखें। दूसरी जगहों पर भी सूरज और चाँद के साथ निशान जुड़े हुए हैं (यशा १३:९,१०; मत्ती २४:२९,३०; प्रका ६:१२-१७)। पद १९ में जिन चिन्हों के बारे में लिखा है वे प्रका. ८:७,८,१०; ९:२,१७,१८; १६:३,४,८ मे हैं। इस सन्दर्भ से मालूम पड़ता है कि पद १७,१८ में बताए गए परमेश्वर के आत्मा के काम प्रभु का दिन आने तक जारी रहेंगे।

२:२१ यशा ५५:६,७; रोमि १०:१२,१३; १ कुरि १:२। यहाँ प्रभु के नाम को लेने का मतलब है, मन बदल कर विश्वास से उनकी ओर मुड़ना। योएल की किताब में इब्रानी में यह प्रभु शब्द यहोवा है। पतरस का मतलब यहाँ यीशु से है (पद ३८) यह इस बात की तरफ इशारा है कि परमेश्वर ही यीशु हैं।

२:२२ पद १२,१३ में उठाए गए सवालों का वर्णन १४-२१ में मिलता है। यहाँ पतरस अपने संदेश के केन्द्र तक पहुँचा है। मसीह ने उसे गवाह ठहराया है (१:८)। पवित्र आत्मा ने उसे काम के लिए ताकत दी (२:४) वह अब गवाही देता है और उसके शब्द मसीह से भरे हैं। वह उन्हीं से शुरु करता है और उन्हीं से समाप्त भी करता है। नासरी यीशु को परमेश्वर पिता ने "मान्यता" दी थी (यूहन्ना ५:३६;१०:३७-३८।चिन्ह और चमत्कारों पर यूहन्ना २:११, मत्ती ८:१ देखें)

२:२३ यीशु मसीह को परमेश्वर ने दुनिया में इसी लिए भेजा कि लोगों के अपराधों के लिए क्रूस पर कुर्बान हो जाएँ (मत्ती २०:२८; २६:२७,२८; यूहन्ना १:२९; ३:१४-१६; ६:५१; १०:१)। लेकिन बुरे लोगों ने उन्हें सूली दी और वे दोषी ठहराए गए।

२४ सूली पर चढ़ाकर मार डाला। **लेकिन** ऐसा हो नहीं सकता था कि यीशु मरे रहते, सृष्टिकर्ता ने उन्हें मौत की पीड़ा से
२५ मुक्त करके ज़िन्दा कर दिया। **दाऊद** उनके बारे में कहता है, ''मै अपने सामने हमेशा प्रभु को देखता रहा, क्योंकि वह
२६ मेरी दाएँ बाजू में हैं ताकि मैं डाँवाडोल न होऊँ **इसलिए** मैं खुश हुआ मेरी जीभ प्रभु की बड़ाई करने लगी और देह
२७,२८ भी आशा रखे रहेगी । **क्योंकि** आप न मेरी आत्मा को मरे हुओं की जगह मे छोड़ेंगे और न अपने पवित्रजन को
सड़ने देंगे। **आपने** मुझे ज़िन्दगी के रास्तों से जानकारी करायी है। अपनी मौजूदगी से, आप मुझे खुशी से भर देंगे।
२९ ''**भाई** लोगो, मैं अपने पूर्वज दाऊद के बारे में अच्छी तरह से बतलाना चाहता हूँ। उसके मरने के बाद उसे दफना
३० दिया गया और उसकी कब्र आज तक हमारे बीच में है।**इसलिए** एक नबी होने के नाते और यह जानते हुए कि सृष्टिकर्ता
ने उससे शपथ खाई थी, वह यह थी कि उनके सिंहासन पर बैठाने के लिए वह मसीह को उठा खड़ा करेंगे।
३१ **इसे** पहले ही से जानते हुए, उन्होंने मसीह के जी उठने के बारे में कहा था। यह कि न उनकी आत्मा मरे हुओं के
३२ लोक में छोड़ी जाएगी न ही उनकी देह सड़ेगी। ''**इसी** यीशु को स्वर्गिक पिता यहोवा ने जिलाया, जिसके हम गवाह
३३ हैं। **इसीलिए,** परमेश्वर के दहिने हाथ सृष्टिकर्ता की सर्वश्रेष्ठ शक्ति और अधिकार तक उठाए जाने और स्वर्गिक
पिता से वायदा किए हुए पवित्र आत्मा को लेकर उन्होंने उण्डेल दिया है, जिसे तुम लोग देखते और सुनते हो।
३४,३५ **क्योंकि** दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, लेकिन खुद उसने कहा, प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा **मेरे** दाहिने बाजू पर बैठो जब
३६ तक मैं तुम्हारे दुश्मनों को तुम्हारे पैरों की चौकी न कर दूँ। **इसलिए** इस्त्राएल का सारा परिवार यह जान ले कि
यहोवा परमेश्वर ने इसी यीशु को जिसे तुमने सूली पर चढ़ाया था, मालिक और मुक्ति देने वाला ठहराया।
३७ **जब** लोगों ने यह सब सुना, उनके मन कायल हो गए और पतरस और बाकी प्रेरितों से कहा, ''..हम करें क्या?''
३८ **पतरस** ने उन्हें जवाब दिया, ''अपना मन बदलो और तुममें से हर एक यीशु मसीह के नाम से अपराधों की क्षमा के

२:२४ मत्ती २८:६ मौत के लीए यह संभव नहीं था कि यीशु को अपने कब्ज़े मे रखे। क्योंकि यह परमेश्वर की योजना नहीं थी। परमेश्वर ने यीशु को मौत पर जीत थी (यूहन्ना १०:१७,१८)

२:२५-२८ पतरस दिखाता है कि यीशु का जी उठना भजन १६:८-११ का पूरा होना है। अगर यीशु जी नहीं उठते तो परमेश्वर झूठे ठहरते। यह भी असंभव था।(यूहन्ना १०:३५; मत्ती ५:१७;१८)।

२:२७ **"मरे हुओं का स्थान"** यूनानी मे अधोलोक (हेडीज़) और इब्रानी में **"शिओल"** उत्पत्ति ३७:३५ पर नोट्स देखें।

२:२९ पतरस दिखाता कि भजन १६:८-११ दाऊद की ज़िदगी मे पूरा नहीं हुआ था (१ राजा २:१०-१२)। दाऊद ज़िन्दा नहीं हुआ था।

२:३० २ शमूएल ७:८-१६; भजन ८९:३,४,२०-३७। दाऊद बड़ा नबी था और अपने भजनों मे पवित्र आत्मा की मदद से उसने मसीह के बारे मे बहुत कुछ कहा था (लूका २४:४४)। उत्पत्ति २०:७ मे भविष्यद्वक्ता पर नोट्स देखें।

२:३१ **"मसीह"** मत्ती १:१ "मरे हुओं की जगह" - यूहन्ना में अधोलोक या **"हेडीज़"**

२:३२ **"गवाह"** - १:१८

२:३३ इफि. १:१९-२१; फिलि. २:९-११। दाहिना हाथ इज्ज़त का पद है
पवित्र आत्मा - यूहन्ना १४:१६,१७,२६। जहाँ यीशु चाहते है,जब चाहते है, अपने पवित्र आत्मा को उण्डेल देते हैं मत्ती २८:१८ यूहन्ना १७:२

२:३४,३५ यीशु के बारे में एक दूसरे भजन से यह ओल्ड टेस्टामेन्ट का पद है। यीशु ने शिष्यों की समझ खोल दी थी और सिखाया था (लूका २४:४४,४५)।

२:३६ ओल्ड टेस्टामेन्ट के उन पदों से वह दिखाता है कि यीशु के इस्त्राएल के 'मसीहा' होने का मतलब है 'मालिक' (भजन ११०:१)।परमेश्वरने अपने उस बेटे को नियुक्त किया जिनका स्वभाव उन्हीं का था (यूहन्ना १:१)। जिस देश ने यीशु को मारा, तुच्छ जाना, उस देश के लिए यह चौंका देने वाली खबर थी।

२:३७ १६:२९,३० देखें। यहूदियों के मन और विवेक में पवित्र आत्मा के काम करने का परिणाम हुआ था। आज भी उसी तरह वह काम कर रहा है तुलना करें यूहन्ना १६:७-११ उनके शब्द मन बदलाव को दिखाते हैं।

२:३८ मन बदलाव और बपतिस्मे पर मत्ती ३:२,६; मरकुस१६:१६; लूका १३:३ में नोट्स देखें। मसीह बपतिस्मा यीशु के नाम और पवित्र आत्मा के वरदान से जुड़ा हुआ है १९:५ भी देखें। पतरस यह नहीं सिखा रहा है कि मुआफी के लिए बपतिस्मा जरूरी है। मत्ती १६:१२;९:५-७; १२:३१; १८:२३-३५; इफि. १:७; १यूहन्ना १:९; यशा.५५:७
"क्योंकि गुनाहों की मुआफी" - ताकि तुम्हारे गुनाह माफ किए जाएँ पूरी तरह से सही अनुवाद नहीं है। ताकि यूनानी शब्द के लिए "इज" शब्द के अनेक मतलब हो सकते हैं जैसे में, क्योंकि, बारे में आदि। यहाँ पर गुनाहों की माफी, बपतिस्में, मुक्ति आदि न्यू टेस्टामेन्ट की आधारभूत शिक्षा के आधार पर इसका अनुवाद चाहिए पर इसका मतलब लगाना चाहिए। इसलिए सही अनुवाद होना गुनाहों की माफी के बारे में २:२५ में वही यूनानी शब्द ( ) का अनुवाद ''बारे में'' हुआ है । माफी और बपतिस्मा जुड़े हुए हैं लेकिन माफी पाने के लिए बपतिस्में की ज़रूरत नहीं है । यहाँ पतरस का मतलब साफ ज़ाहिर है । "यीशु के बारे, में अपने विचार बदलों, उनके स्वर्ग से परमेश्वर होने इस्त्राएल के छुड़ानेवाले और परमेश्वर के पुत्र होने के बारे मे अपने विचार बदलो।यीशु के स्वभाव,पद अधिकार के अनुसार अपने विश्वास को खुले रूप में दिखाने और विश्वास करने वालो को दी जाने वाली माफी के निशान के रूप मे बपतिस्मा लो"

३९ लिए बपतिस्मा ले।'' ऐसा करने से तुम पवित्र आत्मा का ईनाम पाओगे। **क्योंकि** यह वायदा तुम्हारे, तुम्हारे वंश और
४० जो दूर-दराज़ के लोग हैं, जिन्हें हमारे स्वामी और परमेश्वर बुलाएँगे।'' **दूसरी** और बातें कहकर उसने गवाही दी
४१ और कहा, ''अपने आप को इस भ्रष्ट पीढ़ी से बचा कर रखो ।'' **तब** जिन लोगों ने खुशी से उसकी बातों को स्वीकार
४२ किया था, उन्हें बपतिस्मा दिया गया। उसी दिन लगभग तीन हज़ार लोग उनमें मिल गए। **वे** सभी प्रेरितों से सीखने,
४३ संगति करने, रोटी तोड़ने और आराधना करने में लगे रहे। **वहाँ** रहने वाले हर एक व्यक्ति पर डर छा गया।
४४ प्रेरितों के हाथों से तमाम अद्‌भुत काम और चमत्कारिक काम किए जाते थे। **सभी** जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया
४५ था साथ रहते थे । **वे** अपनी वस्तुओं और सम्पत्ति को बेच बेचकर, जैसी जिस को ज़रुरत हुआ करती थी बाँट लिया
४६ करते थे। **वे** यहूदी प्रार्थना भवन में हर दिन एक मन से इकट्ठा हुआ करते थे। घर-घर में जाकर यीशु की याद में रोटी
४७ तोड़ते थे। वे मन की सच्चाई और खुशी से अपना खाना खाया करते थे। **वे** परमेश्वर की बड़ाई किया करते थे। लोगों

गुनाहों (पापो) की क्षमा के लिए माफी का मतलब यह नहीं है कि माफी को पाने के लिए बपतिस्मा लें। इसकी तुलना मत्ती ३:११ से करें। वहाँ वही शब्द "इज" का इस्तेमाल हुआ है लेकिन अनुवाद के लिए नही है। यह साफ है कि यूहन्ना ने लोगों को बपतिस्मा इसलिए नही दिया ताकि वे मन बदले, लेकिन इसलिए कि उन्होंने मन बदला था (पद ६) आज भी बपतिस्मा उन्हीं लोगों को दिया जाना चाहिए, जिन्होंने मन बदल लिया है और माफी पायी है। देखें प्ररित १०:४४-४८ कुरनेलियुस और जो उसके साथ थे, उन्होंने बपतिस्मा पाने से पहले पवित्र आत्मा पाया (गुनाहों की माफी भी)।

यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मे का मतलब है,यीशु को प्रभु और मसीह के अधिकार में। पतरस कोई सूत्र नही दे रहा था। जो बतिस्मे के समय में दिया जाता है। तुलना करें मत्ती २८:१९

परमेश्वर एक इनाम के रूप में पवित्रात्मा देते हैं। तुलना करें यूहन्ना ७:३७-३९; १४:१६,१७; गल. ३:२ ध्यान दें कि पतरस केवल यीशु को मुक्तिदाता नही कहता है लेकिन प्रभु और मसीह (पद ३६)। वह यह भी चाहता है कि वे यीशु का इन्कार करना बन्द कर दें। देखें२२:१० के नोट्स।

२:३९ सबसे पहले पवित्र आत्मा का वायदा यहूदियों से किया गया था। लेकिन यह सबके लिए सभी जगह पर है। परमेश्वर की बुलाहट पर देखें मत्ती ९:१३; रोमि १:६; ८:२८,३०; १ कुरू.१:९,२४,२६; गल.५:१३; इफि ४:१,४; कुलु ३:१५; २थिस २:१४द्ध १ तिमो. ६:१२; इब्रा६:१५; १ पतरस २:९,२१; २ पतरस १:३८

२:४० यहाँ परमेश्वर के आत्मा से चलने वाले ईमानदार सिखानेवाले व्यक्ति के काम को देखें। पतरस इस बात से सन्तुष्ट नहीं था कि मसीह के बारे में इच्चाई सामने रखे। उसने लोगों को चेतावनी दी थी और यीशु को इन्कार करने के परिणाम भी बताए थे और कहा था कि वे यीशु को अपनाएँ । हर पीढ़ी दुष्ट है (मत्ती २३:३३-३६; फिलि २:१५) यह भी ज़रूरी है कि लोगों को चेतावनी ही जाए और बिनती भी की जाए ।

२:४१ पतरस का संदेश अपनाने का मतलब है, उन्होंने यीशु को अपना मालिक और मुक्तिदाता बनाया । उन्होंने मुक्ति पायी (यूहन्ना ३:१६, ५:२४; ६:४७ । चिन्ह और घोषणा के रूप में उन्होंने बपतिस्मा पाया । इस ३००० में वे अगुवे भी थे, जिन्होंने मसीह को ठुकराया और क्रूस पर चढ़ाया था । मसीह के जी उठने का प्रमाण इतना जोरदार था, प्रेरितों की पवित्रआत्मा में गवाही इतनी ज़बरदस्त थी कि सारे खतरों और समस्याओं के बावजूद उनका विश्वास बना रहा ।

२:४२ ''लगे रहे'' इस शब्द का मतलब है ''मज़बूत रहना'' या ''बराबर बने रहना'' । यह उनके विश्वास का सबूत था । मत्ती ७:१७-२७; यूहन्ना १५:१-८; १ कुरिं १५:१,२; कुलु १:२३; इब्रा ३:६,१४ ।

उन चार बातों पर ध्यान दें, जिसमें इन लोगों ने समय बिताया । सुनने के बाद इन्होंने विश्वास किया । इतना काफी नहीं था । यीशु ने उन्हें शिष्य बनाने को कहा था । मत्ती २८:१८-२० यहाँ वे ऐसा करते है । प्रेरितों की शिक्षा वह थी जिसे देने के लिए यीशु ने उन्हें हुकुम दिया था । पूरा न्यू टेस्टामेन्ट यह दिखाता है कि यीशु के लोगों के साथ समय बिताना हमारे जीवन में विकास के लिए ज़रूरी है । (१ कुरि १:९; फिलि २:१; ३:१०; १यूहन्ना १:३,६,७) इसका मतलब है यीशु की तरह प्यार करना (यूहन्ना १३:३४) । इसका मतलब यीशु के बारे में बताना (इफि ५:१६) ।

''रोटी तोड़ना'' - प्रभु भोज के साथ खाना भी खाना (पद ४६; १कुरि ११:१७-२६) । प्रार्थना जीवन विकास के लिए ज़रूरी है - लूका १८:१; इफि ६:१८; फिलि ४:६,७; थिस्सु ५:१७,१८; यहूदा २० ।

२:४३ ''हर एक व्यक्ति'' हर एक व्यक्ति जो इस नए विश्वासियों के समूह के बाहर है । परमेश्वर अपने लोगों के साथ एक अजीब रूप में था । इससे अक्सर लोगों में एक डर सा आ जाता है । जो कुछ भेजे हुए शिष्य लोग सिखा रहे थे, उनको पुष्ट करने के लिए परमेश्वर ने अजीब कामों का इस्तेमाल किया (इब्रा २:३,४)। उनसे मालूम पड़ता था जिस यीशु ने जिन्दा रहते हुए काम किए थे, वह अब भी ज़िन्दा है (१:१,२) । मत्ती ८:१ और यूहन्ना २:११ के नोट्स देखें ।

२:४४,४५ यह प्रेम का प्रगटीकरण बिना किसी ज़ोर ज़बरदस्ती के था (४:३२-३५) किसी ने इसकी आज्ञा न दी थी । तुलना करें ५:१-४। पवित्रात्मा ने जो एकता पैदा की थी, वह विश्वासी दिखा रहे थे । (यूहन्ना १७:२०-२३; १ कुरिं १२:१२,१३)

२:४६ कोई इमारत उनके पास नहीं थी, जहाँ मौका मिलता वे इकट्ठे होते थे । सप्ताह में एक बार इकट्ठा होना इनके लिए काफी नहीं था, इसलिए बीच में भी मिलते थे ।

३ के साथ उनके अच्छे सम्बन्ध थे। जो लोग मुक्ति पाते जा रहे थे, उन्हें यीशु, मण्डली में जोड़ते जाते थे। **एक** बार पतरस
२ और यूहन्ना, दोपहर तीन बजे प्रार्थना के समय मन्दिर पहुँचे। **प्रार्थना** भवन में हर दिन आने वालों से भीख माँगने
३ एक व्यक्ति को सुन्दर नाम के फाटक पर बिठाया जाता था। वह लंगड़ा पैदा हुआ था। **पतरस** और यूहन्ना को प्रार्थना
४ भवन में प्रवेश करते समय उसने भीख माँगी। **पतरस** ने यूहन्ना के साथ मिलकर उस पर टकटकी लगायी और कहा,
५,६ ''हमारी तरफ देखो।'' **उनसे** कुछ पाने के लिए उसने उनकी तरफ देखा। **तब** पतरस ने कहा, ''चाँदी और सोना
मेरे पास नहीं हैं, लेकिन मेरे पास जो कुछ भी है, वह मै तुम्हें देता हूँ: यीशु मसीह नासरी के नाम से उठ जाओ
७ और चलो।'' **पतरस** ने अपने दाहिने हाथ से उसे पकड़ा और उठा कर खड़ा कर दिया। तुरन्त उसके पैरों और घुटनों
८ में बल आ गया। **वह** उछल कर खड़ा हो गया, चलने लगा वह कूदते, दौड़ते और परमेश्वर की बड़ाई करते हुए उनके
९,१० साथ प्रार्थना भवन को गया। **सभी** लोगों ने उसे चलते और परमेश्वर की बड़ाई करते हुए देखा। **वे** यह जान गए,
कि यह वही व्यक्ति था जो प्रार्थना भवन के सुन्दर नामक दरवाज़े पर बैठकर भीख माँगा करता था। ये सब देखकर
११ वे आश्चर्य से भर गए थे। **वह** लँगड़ा ठीक होने के बाद पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था,और लोग सुलेमान
१२ के बरामदे में आश्चर्य से दौड़े चले आए। **पतरस** ने यह सब देखकर लोगों से कहा, ''हे इस्त्राएलियो, तुम अचम्भा
क्यों कर रहे हो? या हमारी तरफ टकटकी लगाकर क्यों देख रहे हो, जैसे कि हमने अपनी ताकत या भलाईपन की
१३ वजह से इस व्यक्ति को चलने के लायक बना दिया है? **अब्राहम**, इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पुरखों के
परमेश्वर ने अपने बेटे को इज़्जत दी है। तुमने उन्हें उस समय पिलातुस के हवाले किया और इन्कार किया, जब वह
१४ उन्हें छोड़ देना चाहता था। **लेकिन** तुमने उस पवित्र और सज्जन व्यक्ति को चाहने के बजाय एक हत्यारे की आज़ादी
१५ की माँग की। **तुमने** जीवन के राजकुमार को मार डाला, जिन्हें परमेश्वर ने मरे हुओं मे से जिला दिया। इस सच्चाई
१६ के हम गवाह भी हैं। **तुम** जिस व्यक्ति को यहाँ देख रहे हो और जानते हो कि यीशु के नाम और उनके नाम पर
विश्वास ने इसको ताकत दे दी है। हाँ, जो विश्वास यीशु से उसे मिला है तुम्हारे सामने उसी से वह पूरी तरह से
१७ ठीक-ठाक खड़ा है ''**भाइयो** मुझे मालूम है कि तुम और तुम्हारे अधिकारी दोनों ही ने अपनी नासमझी की वजह से

२:४७ उनके मन की हालत की वजह से बड़ाई करना उनके लिए स्वभाविक था । भजन ३३:१-३ में स्तुति पर नोट्स देखें । मण्डली के बाहर के लोगों ने उनके प्यार को देखा जबकि इस्त्राएल के अगुवे यह देख न सकें । इसलिए कोई बड़ी बात नहीं कि हर दिन नए लोग उनमें जुड़े रहे थे । अगर हम भी ऐसा करें, तो क्या वैसा ही नहीं होगा ।

३:१ दोपहर के तीन बजे यहूदी पुजारी प्रार्थना भवन मे जाकर शाम की प्रार्थना और भेंट चढ़ाते थे।

३:४ वे उस व्यक्ति को कुछ बड़े कार्य के लिए तैयार कर रहे थे ।

३:६ यहाँ पर हम देखते हैं कि प्रेरित आत्मिक ताकत से भरे हुए थे। अक्सर ऐसा लगता है कि प्रायः जब धन सम्पत्ति बढ़ती है, आत्मिक ताकत घटती जाती है। प्रभु ने उन्हे निर्देश दिए थे मत्ती ६:१६-२१। ''नाम में'' का मतलब है, मसीह का अधिकार और ताकत। पतरस मसीह की जगह था - यूहन्ना १४:१३,१४; २०:२१ ।

३:७ पतरस की क्रिया और शब्द ने इस व्यक्ति में विश्वास और चँगाई पैदा की।

३:८ आरम्भ के शिष्यों ने बहुतो को ठीक किया था (५:१५,१६; ८:७; १४:८-१०; १६:११,१२) इन्होंने कभी-कभी उनको ठीक किया जो अपने काम में लगे हुए थे, या जब वे सिखा रहे थे, या बीमार लोग उनके पास आए। इस लंगड़े ने परमेश्वर की बड़ाई की न कि पतरस की। वह जानता था कि परमेश्वर ने उसे ठीक किया था न कि पतरस ने।

३:१० देखें २:७,१२; १०:४५; १२:१६; १३:१२; मत्ती ८:२७; ९:८,३३; १२:२३। क्या हमारे कुछ कहने और करने से परमेश्वर की शक्ति लोगों को दिखायी देती है?

३:११ प्रार्थना भवन के बाहरी बरामदे के पूर्व दिशा में सुलेमान का ओसारा था ।

३:१२ परमेश्वर की सच्चाई को सिखाने के लिए पतरस मौके का फायदा उठाता है। उसने लोगों का ध्यान अपनी तरफ नहीं किया, ताकि वह मशहूर हो जाए। वह जानता था कि स्वर्गिक पिता ने यह करने में उसकी मदद की थी और वही सम्मान के लायक हैं । देखें १४:८-१५।

३:१३ इस्त्राएल में एक सच्चे परमेश्वर का नाम अब्राहम इसहाक और याकूब का परमेश्वर था (र्निग ३:६)। इसका कारण उत्पत्ति १२-५० में है। परमेश्वर ने यीशु के जी उठने और ऊपर उठाए जाने में उन्हें सम्मानित किया ।
"हवाले किया और इन्कार किया" पतरस उन्हें वह सब याद दिला रहा है, जिस वह जानते थे, ताकि वे बदलाव की जगह पर लाए जाएँ।

३:१४ ''पवित्र और धर्मी'' - यह मसीह के लिए एक नाम है। ७:५२; २२:१४; ४:२७,३०; मरकुस १:२४ याकूब ५:६;। यूहना २:२०। यह यीशु की तरफ एक इशारा है (प्रका १५:३,४ सिर्फ परमेश्वर ही निष्कलंक है)। यीशु परमेश्वर के सेवक और देह में आने वाले परमेश्वर थे (फिलि २:६; लूका २:११) यह देखें कि यहूदियों ने उनकी जगह पर किसको चाहा।

३:१५ "वायदा" - यहाँ पर यूनानी भाषा में मतलब है शुरु करने वाले, स्थापना करने वाले, राजकुमार या अगुवा। यीशु जीवन की ''शुरुआत करने वाले हैं'' (यह मसीह की ईश्वरीयता को भी दिखाता है। देखें यूहन्ना ५:१६-१७
''गवाह'' - देखें कि प्रेरितों ने अपने आप को क्या कहा और क्या साक्षी दी । (१:८, २:३२)

३:१७ यूहन्ना १५:२१; १ कुरि.२:७,८; २ कुरि.४:४; इफि ४:१८ ।

१८ ऐसा किया था। **लेकिन** जो बातें परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के मुँह से कहलायीं थीं, कि मसीह दुख उठाएँगे, इस तरह
१६ से पूरी हुयी हैं। **इसलिए** अपना मन बदल डालो, ताकि तुम्हारे अपराध माफ किए जाएँ, ताकि यीशु से ताज़गी के समय
२०,२१ आएँ **और** जिस यीशु मसीह के बारे में पहले सिखाया गया था, उन्हें भेजें। **इस** दुनिया की शुरुआत के समय से अपने
पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुँह से परमेश्वर ने संदेश दिया था, सब वस्तुओं के फिर से कायम किए जाने तक स्वर्ग की
२२ पृथ्वी कि (यीशु को) कबूल करे। **क्योंकि** जैसा मूसा ने पूर्वजों से कहा था ''प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में
२३ से मेरी तरह एक भविष्यद्वक्ता को उठा खड़ा करेंगे और जो कुछ वह तुम से कहे, वह सब करना। **लेकिन** हर
२४ व्यक्ति जो उस भविष्यद्वक्ता की नहीं सुनेगा, अपने लोगों के बीच में से नाश किया जाएगा।' ''**हाँ**, शमूएल से लेकर
२५ बाद में आने वाले सभी भविष्यद्वक्ताओं ने इसी तरह की भविष्यद्वाणी की थी। **तुम** परमेश्वर द्वारा हमार पूर्वजों से बनायी
गयी वाचा और भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान हो, जिन्होंने अब्राहम से कहा था, ''पृथ्वी के सभी राष्ट्र तुममें आशीष पाएँगे''
२६ **परमेश्वर** ने अपने बेटे को जिला कर पहले तुम्हारे पास भेजा ताकि तुममें से हर एक को उसकी दुष्टता से हटा
४ कर आशीष दे।'' **जब** वे लोगों को सिखा रहे थे, फरीसी, प्रार्थना भवन के प्रधान और सदूकी उनके पास आए ।
२,३ **वे** इसलिए नाराज़ थे क्योंकि वे लोगों को सिखा रहे थे कि यीशु मरे हुओं में से जी उठे थे। **इन** लोगों ने पतरस और
४ यूहन्ना को दूसरे दिन तक हवालात में इसलिए रख लिया क्योंकि शाम हो चुकी थी। **फिर** भी बहुत से लोग जिन्होंने
५ उनका संदेश सुना था, उन्हें अपना लिया। इन लोगों की संख्या लगभग पाँच हज़ार थी। **दूसरे** दिन उनके अधिकारी,
अगुवे, और शास्त्री, हन्ना महायाजक, काइफा, यूहन्ना, एलेक्ज़ेन्डर और महायाजक के सभी रिश्तेदार, यरुशलेम में
६ इकट्ठा हुए। **उन** लोगों ने पतरस और यूहन्ना को अपने सामने रखा और पूछा, ''किस शक्ति या नाम से तुमने यह
८,६ किया है,'' **पतरस** ने पवित्र आत्मा से ओत-प्रोत होकर (भरकर) उनसे कहा, **लोगों** के अधिकारी और इस्त्राएल के
बुजुर्गो, इस असहाय के लिए हमारे किए गए अच्छे काम की वजह से हमसे पूछताछ की जाती है, कि वह कैसे ठीक
१० कर दिया गया **तो** तुम्हें और इस्त्राएल के सभी लोगों को यह मालूम हो, कि यीशु मसीह नासरी, जिन्हें तुमने क्रूस पर

३:१८ लूका २४:२५-२७; ४४-४७ ।

३:१६ ''मन बदलो'' - २:३८; मत्ती ३:२; लूका १३:३-५; प्रेरित १७:३०; जो लोग चाहते है कि उनके अपराध खतम हो जाएँ, उनके लिए यह ज़रूरी है ।

३:२० इस पद से पहले लिखा है कि परमेश्वर ने मसीह को इस्राएल के बचाव के लिए ठहराया है (२:३६) ।

३:२१ परमेश्वर ने हर बात के लिए एक समय नियुक्त किया है । यीशु के आने से पहले सब कुछ होकर रहेगा (१:७) ।
''सब वस्तुओं के फिर से कायम किए जाने'' - १:६; मत्ती १६:२८; रोमि ८:१८-२३; यशा ११:१-१६; यहेज ३७:१-२८;

३:२२,२३ व्यव. १८:१५,१८,१६ । पतरस का मतलब यह है कि प्रतिज्ञा किया हुआ भविष्यद्वक्ता यीशु ही हैं ।

३:२४ पतरस (जैसा यीशु ने खुद किया) ने यह ज़ोर डाला कि मसीह का आना ओल्ड टेस्टामेन्ट की प्रतिज्ञाओं की वजह से है (मत्ती ५:१७; लूका २४:२५-२७, ४४-४७; यूहन्ना ५:३६)

३:२५ ''तुम'' का मतलब है यहूदी । रोमि ६:४,५ से तुलना करें । वे अब्राहम के वंश के थे जिसे आशीष की प्रतिज्ञा दी गयी थी (उत्पत्ति १२:३) ।

३:२६ ''परमेश्वर ने अपने बेटे को'' - पतरस कहता है कि अब्राहम की आशीष लोगों तक यीशु द्वारा पहुँचती है । गल ३:६-६,१४ भी देखें । यीशु को जिला कर यह बात परमेश्वर ने दिखा दी । तब उन्होंने यीशु को पहले इस्राएली लोगों के लिए भेजा (१३:४६; रोमि १:१६) । पवित्रआत्मा को भेजने के द्वारा प्रेरितों से उन्होंने बातचीत की ।तीतुस २:१३,१४; १पत २:२४ । यह परमेश्वर की सबसे बड़ी भलाई है । इसको छोड़कर और कोई स्थायी (सदा ठहरनेवाली) भलाई नहीं है । आशीष या आशीषित पर नोट्स देखें- उत्पत्ति १२:१-३; गिनती ६:२२-२७; व्यवऋ २८:३-१४; भजन १:१; ११६:१; मत्ती ५:३-१२; लूका ११:२८; गल ३:६,१४; इफि १:३ ।

४:१ जब यीशु इस पृथ्वी पर थे, यहूदी प्रार्थना भवन के पुजारी उनके घोर विरोधी थे (मत्ती १६:२१; २०:१८; २१:१५,२३,५६;२७:१,१२,४१,६२)। प्रेरित भी उनकी दुश्मनी के शिकार बने।
''सदूकी'' - मत्ती ३:७ ।

४:२ सदूकी लोग मरे हुओं के जी उठने पर विश्वास नहीं करते थे (२३:८)

४:३ इससे मालूम होता है कि उस समय का इस्त्राएल राष्ट्र कैसा था। दुनिया की सबसे अच्छी खबर सुनाने वालों को जेल मे जाना पड़ता था और मौत का सामना भी करना पड़ता था (५:१७,१८; १२:१-४)। दुनिया के कुछ देशों मे आज भी ऐसा हो रहा है।

४:४ २:४१ देखें मत्ती २६:३,५७; लूका ३:२; यूहन्ना १८:१३,१४।

४:६ इसमें कोई शक नहीं कि वे अपने सवाल का मतलब जानते थे, लेकिन फिर भी दोष लगाना माँगते थे।

४:८ पतरस ने ऐसे अवसर को यीशु का संदेश देने के लिए इस्तेमाल किया। मत्ती १०:१६-२० से तुलना करें।

४:६ गौर करें कि वह उनके चरित्र की तरफ कैसे इशारा करता है - वे इस तरह के लोग थे कि किसी अपंग पर तरस खाने से खुश नहीं होते थे।

४:१० ३:६,१२ देखें। ये अगुवे आशा करते थे, किसी तरह से यीशु से उन्हें छुटकारा मिले (मत्ती २७:६५-६७;२७:२२,२३,६२-६४)।

११ चढ़ाया था और जिन्हें परमेश्वर ने मरे हुओ में से जिलाया, उन्हीं के नाम से यह आदमी ठीक-ठाक खड़ा है। “**इसी** पत्थर
१२ को इमारत बनाने वालों ने बेकार ठहराया था, यही अब खास पत्थर ठहरा है। **किसी** अन्य व्यक्ति से मुक्ति नहीं मिल
१३ सकती, क्योंकि लोगों के बीच आसमान के नीचे कोई और नाम नहीं दिया गया है। **उन्होंने** पतरस और यूहन्ना की
हिम्मत को देख यह जान लिया कि वे अनपढ़ और बिना सिखाए हुए थे। वे आश्चर्य मे पड़ गए और समझ भी गए
१४,१५ कि वे यीशु के साथ रहे थे। **उनके** साथ ठीक हो गए व्यक्ति को खड़ा देखकर वे कुछ कह न सके। **लेकिन** जब
१६ उन्हें आज्ञा दी गयी कि वे सभा से बाहर जाएँ आपस ही में उन लोगों ने सलाह की **उन्होंने** कहा, “इन लोगों के
साथ हम क्या करें? क्योंकि उन्होंने एक बड़ा आश्चर्यकर्म किया था, जो यरुशलेम में रहनेवाले लोगों के सामने था और
१७ इसका इन्कार भी नहीं किया जा सकता।” **इसलिए** कि यह बात लोगों में फैल न जाए, हम उन्हें चेतावनी दें, कि किसी
१८ से इस नाम के विषय बात न करें। **उन्होंने** पतरस और यूहन्ना को बुलाकर आदेश दिया कि यीशु के सम्बन्ध में
१९ न बोलें न सिखाएँ। **लेकिन** पतरस और यूहन्ना ने जवाब मे यह कहा, “तुम्हीं बताओ, क्या यह सही है कि हम
२० परमेश्वर की बात न मानकर तुम्हारी मानें। **क्योंकि** यह हो ही नहीं सकता कि हमने जो देखा और सुना है, वह
२१ सब न बताएँ।” **इसलिए** उन्हें और ज़्यादा धमकाकर जाने दिया, क्योंकि वहाँ इकट्ठे हुए लोगों की वजह से वे उन्हें
२२ सज़ा नहीं दे सके। क्योंकि जो कुछ भी हुआ था, उसके लिए सभी परमेश्वर की बड़ाई कर रहे थे। **क्योंकि** जिस व्यक्ति
२३ की ज़िन्दगी में यह अज़ीब काम हुआ था, वह करीब चालीस साल का था। **वहाँ** से आज़ाद होकर वे अपने लोगों में
२४ गए और जो कुछ मुख्य महायाजक और बुजुर्गों ने उनसे कहा था, उन्हें बता दिया। **उन्होंने** जब यह सब सुना तो
एक मन होकर बुलन्द आवाज़ में कहा, “मालिक, आप ही सृष्टिकर्ता हैं ज़िन्होने आकाश, पृथ्वी और समुद्र और जो
२५ कुछ उसमें है, बनाया है। **आप** ही ने अपने सेवक दाऊद के मुँह से कहा है, “राष्ट्रों ने गुस्सा और विरोध क्यों दिखाया
२६ लोगों ने बेकार की बातें क्यों बनायी? **पृथ्वी** के राजा एक हो गए, शासक इकट्ठा हुए, मालिक के खिलाफ और मसीह
२७ के भी। **क्योंकि** हेरोद अन्तिपास, पुन्तियुस, पिलातुस गवर्नर, गैरयहूदी और इस्त्राएली, सभी आपके अभिषिक्त पवित्र
२८,२९ सेवक के खिलाफ थे **जो** कुछ उन्होंने किया वह सब आपकी इच्छा से पहले ही से निश्चित हो चुका था। **अब** मालिक

४:११ भजन ११८:२२, मत्ती २१:४२-४४

४:१२ प्रेरितों ने यह दूसरों को सिखाया जबकि यीशु ने इन प्रेरितों को सिखाया था। यूहन्ना १४:६; १०:७,८; ३:१६-१९,३६। मुक्ति, न्यू टेस्टामेन्ट का एक खास शब्द है। इसमे अपराधों की माफी शामिल है (लूका २४:४७), नया जन्म (यूहन्ना १:१२,१३; ३:३-८), परमेश्वर द्वारा निर्दोष ठहराया जाना (रोम १:१६; ३:२१-२८; ४:७,८) और हमेशा की ज़िन्दगी (यूहन्ना ३:१६) जो हमेशा के लिए परमेश्वर की मौजूदगी मे हैं (यूहन्ना १४:३; आदि)।

४:१३ यीशु के जी उठने की सच्चाई और पवित्र आत्मा की भरपूरी की वजह से उन्हे हिम्मत मिली थी। यीशु की मौत के तुरन्त बाद वे डरे हुए थे (यूहन्ना २०:१९)। पतरस एक लड़की से डर गया था (मत्ती २६:६९,७०)। अब वह इस्त्राएल के दुष्ट अगुवों का और मौत का सामना कर सकता था। पद २९; ५:२९-३३,४१,४२)। यीशु मसीह इस तरह से किसी के भी जीवन को बदल सकते हैं । इन अगुवों ने इन प्रेरितों की शिक्षा और जोश की नींव को समझ लिया था कि वह यीशु थे।

४:१६ इन लोगों के कठोर मन को देखें। उन्हें मालूम था कि अजीब काम हुआ है, लेकिन शिष्यों के द्वारा यीशु ने यह किया था, इसका वे इन्कार कर रहे थे। यूहन्ना १५:२४ से तुलना करें।

४:१७ “यह नाम” यह यीशु की तरफ इशारा था,: लेकिन उस नाम को मुँह से कहना नहीं चाहते थे।

४:१८ पवित्र आत्मा से भरे शिष्यों को ऐसी आज्ञा देने की कितनी बड़ी बेवकूफी थी। ऐसी हालत में उन्हें परमेश्वर ही की माननी थी चाहे परिणाम कुछ भी क्यों न होने वाले थे। क्या हम अपने हाथों को उठाने से हवा के रुख को रोक सकते हैं।

४:१९ ५:२९ देखें। जब तक सरकार का कानून परमेश्वर के वचन के खिलाफ न हो (रोम १३:१,२) हर बात में सरकार की बात मानी जानी चाहिए। ऐसी हालत में परमेश्वर का हुकुम मानने के नतीजों को सहन करना ज़रुरी है।

४:२० जिस तरह से एक ज़िदा इन्सान साँस लेता है, उसी तरह पवित्र आत्मा से भरा व्यक्ति यीशु के लिए बिना बोले रह नहीं सकता। तुलना करें २ कुरि ५:१४;

४:२१,२२ इसी घटना से कुछ लोग धमकी दे रहे थे, कुछ परमेश्वर की बड़ाई कर रहे थे।

४:२३ “स्वयं समूह का” यह मसीह में विश्वास करनेवालों का झुण्ड था

४:२४ दुनिया के बनाने वाले से वे प्रार्थना कर रहे थे (उत्पत्ति अध्याय १; यूहन्ना १:१-३, १:१,२। वही मात्र परमेश्वर हैं।

४:२५,२६ उनके मन की कायरता को देखें, कि वे जानते थे कि दाऊद में होकर परमेश्वर के आत्मा ने बातचीत की थी। उन्होंने यह शिक्षा यीशु मसीह से पायी थी (मत्ती १५:३,६; २२:४३; यूहन्ना १०:३५; लूका २४:४५। यह पद भजन २ से लिया गया है।

४:२७ लूका २३:६-१३

४:२८ २:२३ देखें। “पहले ही से निश्चित” यूनानी में वही है जो रोमन अँग्रेजी मे “पहले से ठहराया” ८:२९,३० और इफि में १:५,११ है और १ कुरि २:७ मे “अलग किया है ।”

४:२९ पद १३ ।

३० उनकी धमकियों को देखिए और यह होने दें कि आपके सेवक बड़ी हिम्मत से आपके संदेश को दे सकें। **लोगों** को
ठीक करने के लिए अपने हाथों को बढ़ाएँ, ताकि आपके पवित्र बेटे यीशु के नाम से अज़ीब चिन्ह और अचरज के
३१ काम किए जाएँ" **जहाँ** पर वे इकट्ठे थे, वह स्थान उनके प्रार्थना करने के बाद हिल गया। वे सभी पवित्र आत्मा से
३२ भर कर परमेश्वर का संदेश हिम्मत से देने लगे। **जिन्होंने** विश्वास किया था, वे लोग एक ही मन के थे। उनमें से
कोई भी यह नहीं कहता था कि जो उसके पास है, उसका है। सभी लोगों को छूट थी कि वे सब कुछ का इस्तेमाल
३३ करें। **प्रेरित** लोग यीशु मसीह के जी उठने की बात बड़ी हिम्मत के साथ कर रहे थे। उन सभी के ऊपर बड़ी कृपा
३४ बनी हुयी थी। **उनमें** से कोई ऐसा भी नहीं था, जो ज़रुरतमन्द हो। क्योंकि जिनके पास ज़मीन या घर थे, उनको बेचकर
३५ मिला हुआ धन ले आते थे। **उसे** प्रेरितों के पैरों के पास डाल दिया जाता था, जैसी जिसकी ज़रूरत हुआ करती थी,
३६ उसी के मुताबिक लोगों मे बाँट दिया जाता था। **यूसुफ** नाम साइप्रस का एक लेवी था । नाम बरनबास (मतलब शान्ति
३७ का बेटा) रखा था । **उसके** पास कुछ ज़मीन थी । उसने उस ज़मीन को बेचा और मिले हुए रूपयों को प्रेरितों के
५,२ सुपुर्द कर दिया । **हनन्याह** नाम के एक व्यक्ति और उसकी पत्नी सफीरा ने अपनी ज़मीन बेची। **अपनी** पत्नी की
जानकारी ही में उसने उसे बेची हुयी ज़मीन का कुछ पैसा अपने पास रखा । बचा हुआ हिस्सा लाकर उसने प्रेरितो
३ के पैरों पर रख दिया। **लेकिन** पतरस ने कहा "हनन्याह, शैतान ने तुम्हारे मन को पवित्र आत्मा से झूठ बोलने के
४ लिए क्यों भर दिया, कि तुम ज़मीन के पैसों में से कुछ अपने पास रख लो ।" **जब** यह तुम्हारे पास थी तो क्या तुम्हारी
नहीं थी? बेचे जाने के बाद भी क्या यह तुम्हारा ही पैसा नही था? तुमने अपने मन में ऐसी बात आने ही क्यों दी?
५ तुमने इन्सान से नहीं परमेश्वर से झूठ बोला है **यह** सुनते ही हनन्याह गिरा और मर गया। जिन लोगों ने ये बाते
६, ७ सुनी वे भी बहुत डर गए। **नौज़वान** उठे, उसे लपेटा और बाहर ले गए। **तीन** घण्टे बाद उसकी पत्नी भीतर आयी,
८ लेकिन उसे कुछ मालूम नही था। **पतरस** ने उससे पूछा, "मुझे बताओ, कि तुमने इतने ही में ज़मीन बेची थी क्या?
९ सफीरा ने कहा, "हाँ इतने ही में, **तब** पतरस ने उससे कहा, "प्रभु के आत्मा को परखने के लिए तुम दोनों एक
मन के कैसे हो गए? देखो तुम्हारे पति की लाश को ले जाने वाले अभी वापस आए ही नहीं हैं और वे तुम्हे भी बाहर

४:३० हालाँकि इसका मतलब था उनके लिए बड़ी समस्या, उन्होंने प्रार्थना यह की कि परमेश्वर उनके माध्यम से वह सब करे जो अब तक करते रहे थे। यह सब इस बात का सबूत है कि वे जानते थे, यीशु मरे हुओं मे से जी उठे। यह भी कि कब्र से उनकी लाश को हटाए जाने में उनका कोई हिस्सा नहीं था। मत्ती २७:१४; २८:६ आदि।

४:३१ २:२-४ देखें। वे फिर से भर गए। यह एक ऐसा अनुभव नहीं जो एक बार होता है। यह बार-बार दोहराया जाता है।

४:३२-३५२:४४,४५ देखें। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे एक मत के थे। सभी के मन में मसीह और उसके काम के लिए एक ही विचार थे। वे अपने संगी साथियों से अपने समान प्यार करते थे।

४:३३ इस्त्राएल के धार्मिक अगुवे काफी धमकी दिया करते थे। यीशु मसीह के मरे हुओं मे से जी उठने का संदेश उनके संदेश का एक खास भाग था - १:२२; २:२४,३२; ३:१५,२६; ४:२,१०; ५:३०; १०:४०; १३:३०; १७:१८,३१; २३:६

४:३६ ९:२७ देखें; ११:२२-२५,३०; १२:२५, १३:१,२।
"लेवी" इसका अर्थ है "लेवी गोत्र"। इस गोत्र को परमेश्वर ने इसलिए अलग किया था ताकि प्रार्थना भवन की सेवा करे (गिनती ३:५,१०)। कुप्रुस भूमध्यसागर में लेबनान के पश्चिम में एक टापू था।

५:१:२ परमेश्वर की मण्डली का चरित्र पवित्र था। वह पवित्र आत्मा से भरी और गवाही देनेवाली थी।दुष्टता के अलावा इसके काम को बढ़ने मे कुछ भी रोक नहीं सकता था। यहाँ मण्डली में शैतान दुष्ट तरीकों को लाना माँगता था। साफ दिखता है कि हनन्याह और उसकी पत्नी ने प्रेरितों से कहा, "जो धन उन्हें भूमि बेचने से मिला है, वह सब दे रहे हैं (पद ८)। वे यह नाम चाहते थे कि लोग जानें कि वे दयालु हैं, जबकि वे थे नहीं। वे यह चाहते थे कि लोग जानें कि वे बहुत धर्मी हैं। इसे ढोंग कहते हैं। तुलना करें मत्ती ६:२-४; २३:५-७।

५:३,४ ऐसी कोई ज़रुरत नहीं थी कि वे अपनी जमीन जायदाद बेचकर मण्डली में पैसा दें (२:४४,४५) ध्यान दें कि जो झूठ हनन्याह ने बोला, वह शैतान की तरफ से था। देखें यूहन्ना ८:४४। शैतान ने सलाह दी और हनन्याह ने मान ली। ध्यान दें परमेश्वर के लोगों से झूठ बोलना परमेश्वर से झूठ बोलना है, सच तो यह है कि हम जो कुछ इन्सानों से करते हैं, परमेश्वर से करते हैं। देखें ९:४,५; मत्ती २५:३४-४६; मरकुस ९:३७। झूठ के बारे मे नोट्स और पद निर्ग २०:१६; भजन ५:६; १५:२; ५१:६; नीति ६:१६-१९; १२:२२; इफि ४:१५,२५; कुल ३:९; प्रका.२१:८,२७; २२:१५देखें। हर एक जन जो झूठ बोलने की परीक्षा मे पड़ता है, इन बातों पर गौर करे। झूठ बेवकूफी, दुष्टता और खतरनाक बात है।

५:५ हनन्याह की मौत उस पर परमेश्वर के दण्ड आने की वजह से हुयी न कि पतरस के कारण। झूठ बोलना और ढोंग करना खतरनाक ज़हर है। हनन्याह की बुराई मण्डली के जीवन के लिए एक बड़ा खतरा थी, इसलिए उसका गंभीर हल भी ज़रुरी था। "डर" परमेश्वर को दुख पहुँचाने और उसका दण्ड, ढोंग और झूठ और उस का दण्ड कलीसिया मण्डली के स्वास्थ के लिए अच्छा था। देखें उत्पत्ति २०:११; अय्यूब २८:२८; भजन ३४:११-१४; १११:१० और निति १:७ नोट्स

५:६ परमेश्वर ने यह दिखाया कि दण्ड उसकी पत्नी पर भी आएगा पतरस ने उसे मौका दिया कि वह सही बतलाए, लेकिन उसके सामने वह मुकर गयी। इन दोनों की दुष्टता परमेश्वर के आत्मा का इम्तिहान लेनेवाली थी। देखें व्य ६:१६; मत्ती ४:७; निर्ग १७:७; मजन ९५:७-११।

१० ले जाएंगे **तुरन्त** वह पतरस के पैरों पर गिरी और मर गयी। नौजवानों के भीतर आने पर उन्होंने उसे मरा पड़ा देखा
११ और उसके पति की कब्र के पास ही उसे दफना दिया। **मण्डली** और उन सभी लोगों पर जिन्होंने ये बाते सुनीं बड़ा
१२ डर छा गया। **और** लोगों के बीच प्रेरितों के हाथो से बहुत चमत्कारिक चिन्ह और अजीब काम किए जाते थे। वे
१३ सभी प्रार्थना भवन (मन्दिर) में सुलेमान के अहाते मे एक मन से इकठ्ठे हुआ करते थे। **बाकी** लोगों में किसी की
१४ यह हिम्मत नहीं होती थी कि उनके साथ हो ले लेकिन लोग उन्हें बड़ी इज़्जत की निगाह से देखते थे। **पुरुष** और
१५ महिलाएँ दोनों ही मे से बहुत से लोग यीशु पर विश्वास लाते जाते थे। **बिस्तर** और खाट पर अपने बीमारों पर रखकर
१६ वे सड़क पर रख दिया करते थे, ताकि कम से कम पतरस की परछाई उन पर पड़ जाए। **यरुशलेम** के आसपास
के शहरों से भी एक बड़ी भीड़ अपने उन बीमारों को लाया करती थी जो गंदी आत्माओं से पीड़ित थे।
१७ उनमें से हर एक ठीक हो जाया करता था। **तब** प्रधान पुरोहित (महायाजक) और जो उसके साथ थे, बड़े
१८,१९ गुस्से से बौखला उठे। **उन्होंने** प्रेरितों को पकड़ कर सार्वजनिक जेल में डलवा दिया **लेकिन** रात के समय
२० प्रभु के स्वर्गदूत ने आकर जेल का दरवाज़ा खोल दिया और बाहर लाकर कहा, ''**जाओं** और प्रार्थना भवन (मन्दिर)
२१ में खड़े होकर जीवन के वचन को सारे लोगों को बतलाओ।'' **जब** उन्होंने यह सुना तो बहुत सुबह मन्दिर जाकर सिखाने
२२ लगे। **लेकिन** प्रधान पुरोहित ने और जो उसके साथ थे आकर सभा और इस्त्राएली अगुवों के सामने उन्हें जेल से
२३ लाने का हुक्म दिया लेकिन जब ऑफीसर लोगों ने उन्हें जेल मे नही पाया तो आकर खबर दी, ''**जेलखाने** के दरवाजों
२४ में ताले थे और बाहर दरवाज़ों पर चौकीदार तैनात थे, लेकिन भीतर कोई भी नहीं था।'' **जब** प्रधान पुरोहित, मन्दिर
२५ के सुरक्षा दल के कैप्टेन और पुरोहितों को यह मालुम हुआ तो उन्हें समझ न आया कि अब क्या होनेवाला है। **तभी**
किसी ने आकर उनसे कहा, ''सुनो सुनो, जिन लोगों को तुमने जेल में डाला था, वे प्रार्थना भवन मे खड़े होकर लोगों
२६ को सिखा रहे हैं।'' **तब** कैप्टेन और उसके आफिसर बिना किसी बल प्रयोग वहाँ से उन्हें ले आए; क्योंकि उन्हे
२७ यह डर था कि कही लोग उन पर पत्थर न फेंके। **वहाँ** उन्हे लाने के बाद, सभा के सामने उन्हें हाज़िर किया गया

५:११ जब यीशु के लोग दुष्टता से नफरत करेंगे, मण्डली पवित्र होगी और काम में आगे बढ़ेगी। पवित्र आत्मा और कृपा के इस युग की शुरुआत का मतलब यह नहीं था कि दुष्टता को हल्का-फुल्का समझें और उसका दण्ड न आए। यह एक नमूना उन्होंने हमें दे दिया, कि मण्डली में ढोंग, धोखे और झूठ के बारे में उनका क्या रवैया है।- परमेश्वर की निगाह में ये सभी मौत की सजा के लायक हैं। - इसका मतलब यह भी नहीं कि मण्डली में इस तरह के लोगों को परमेश्वर मार डालते हैं। एक ही बात काफी थी ताकि लोग डरें। हमारे लिए भी यह काफी है। हम और ज़्यादा क्या सीख सकते हैं कि परमेश्वर हर तरह के झूठ, धोखाधड़ी से नफरत करते हैं। जो भी इसमें बना रहता है, वह खतरे में हैं। पुराने समय में ही परमेश्वर ने यह दिखा दिया था कि हुकुम न मानने के प्रति उनका रवैया कैसा हैं। गिनती १५:३२-३६ देखें। कतल की जीत की शुरुआत में ही परमेश्वर ने एक नमूना सामने रखा था। देखें, यहोशू ७। स्थानीय मण्डली में दुष्टता को सहन करना सबसे बड़ा खतरा था। यह कॅन्सर की तरह है जो पूरे शरीर को बर्बाद कर सकता है।

''मण्डली'' शब्द यहाँ उन लोगों की तरफ इशारा है जो आस-पड़ोस के लोगों में से इसलिए निकाले गए ताकि मसीह के लोग बनें। मत्ती १६:१८ के नोट्स देखें।

५:१२ २:४३; ३:११ देखें।

५:१३ पद ११

५:१४ पवित्र और गवाही देने वाली मण्डली लोगों को मसीह के पास आते देखेगी। हनन्याह और उसकी पत्नी को दण्ड मिलने के बाद मण्डली जीत के जश्न मे बढ़ती गयी। तुलना करें यहोशू अध्याय ८।

५:१५ पतरस या उसकी परछाईं में लोगों की बीमारी ठीक करने की ताकत नहीं थी (३:१२)। परमेश्वर ने लोगों की निगाह में प्रेरितों को इज़्ज़त देने और उनकी शिक्षा पर मोहर लगाने के लिए ऐसा किया था

५:१६ शुभसंदेश यरुशलेम के बाहर भी पहुँचता गया।
''अशुद्ध आत्माएँ'' मत्ती ४:२४ पर नोट्स।

५:१७ ''सदूकी'' - मत्ती ३:७ ईर्ष्या या जलन पर मत्ती २७:१८; नीति २७:४; गल ५:२६ पर नोट्स।

५:१८ ४:३ देखें।

५:१९ ''प्रभु का स्वर्गदूत'' मत्ती १:२० और उत्पत्ति १६:७ पर नोट्स देखें। अपने लोगों की मदद के लिए परमेश्वर स्वर्गदूत भेजते हैं (इब्रा १:१४)। वे क्या कर सकते हैं; इसका एक नमूना यहाँ है। शुभसंदेश नयी ज़िन्दगी लाता है(यूहन्ना ३:१६;

५:२४ और जीने का एक नया तरीका देता है (२ कुरि ५:१७)

५:२१ आज्ञा मानना उनके विश्वास का एक निशान था - चाहे कितनी भी कीमत चुकानी पड़े।
''कचहरी''.महासभा मत्ती ५:२२।

५:२६ मत्ती २१:४६; लूका २२:२ ये धार्मिक गुरु इन्साफ की परवाह नहीं करते थे। वे हुकूमत करना चाहते थे लेकिन ईर्ष्या, जलन और डर के गुलाम थे।

२८ और प्रधान पुरोहित ने सवाल किया, ''**क्या** हमने तुम्हें यह हुकुम नहीं दिया था कि इस नाम से कुछ मत सिखाओ?
और देखो तुमने यरुशलेम को अपनी शिक्षा से भर दिया है और इस इन्सान के खून का दोष हम पर लाना चाहते
२९ हो'' **तब** पतरस और दूसरे प्रेरितों ने जवाब में कहा, '' ज़रुरी यह है कि हम परमेश्वर की बात मानें, न कि इन्सानों
३०,३१ की । **हमारे** बापदादों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया जिन्हें तुम लोगों ने क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला । **उसी** को
एक राजकुमार और मुक्तिदाता की तरह परमेश्वर ने उन्हें इज्जत और शान दी ताकि इस्त्राएल (यहूदियों को मन बदलाव
३२ और पापों की माफी दें। **हम** और पवित्र आत्मा इन बातों के गवाह हैं जिन्हें परमेश्वर उन्हीं को देते हैं जो उनका हुकुम
३३,३४ मानते हैं। **इन** बातों को सुनकर वे गुस्से से भर गए और उन्हें मार डालना चाहा। **तभी** सभा में गमलीएल नामक
नियमशास्त्र के अच्छे जानकारने, जिसकी लोग इज़्जत किया करते थे, खड़े होकर यह हुकुम दिया कि प्रेरितों को कुछ
३५ देर के लिए बाहर किया जाए **तब** उसने कहा, हे इस्त्राएलियो, जो कुछ तुम इन लोगों के साथ करने पर हो, उस पर
३६ थोड़ा ध्यान से सोचो **क्यों** कि कुछ समय पहले थियूदास ने अपने आप को बड़ा ठहराते हुए दावा किया और उसके
साथ ४०० लोग हो भी लिए। वह तो मारा गया, साथ ही उसके साथी तितर-बितर हो गए। इस तरह सब कुछ खतम
३७ हो गया। **इसके** बाद ही गलील का यहूदा जनगणना के समय खड़ा हुआ और बहुत से लोगों को अपनी तरफ कर
३८ लिया। वह खुद तो बर्बाद हो गया और जिन्होंने उसकी सुनी वे भी तितर-बितर हो गए **मैं** अब तुमसे कहता हूँ कि
उन के पीछे मत पड़ो उन्हें यो ही छोड़ दो। क्योंकि अगर उनका काम और मकसद इन्सानी है, तो सब कुछ खतम
३९ हो जाएगा **लेकिन** अगर यह परमेश्वर की तरफ से है, तो तुम इसे कभी भी खतम नहीं कर सकते लेकिन शायद तुम
४० सिर्फ परमेश्वर के खिलाफ लड़ने वाले ठहरोगे।'' **यह** सुनकर सभी ने उसकी बात मान ली। तब उन्होंने प्रेरितों को
४१ बुलवाकर उनकी पिटाई करते हुए यह हुकुम देते हुए उन्हें छोड़ दिया कि वे यीशु के बारे में लोगों को न सिखाएँ। **सभा**
के सामने से जाते समय वे बड़े खुश थे कि कम से कम यीशु के नाम के लिए उन्हें शर्मिन्दगी सहने का मौका मिला

५:२८ ''इस नाम'' यीशु। ४:१७ पर नोट्स देखें। क्या बेवकूफी कि, उन्होंने प्रेरितों पर इल्ज़ाम लगाया। वे खुद दोषी थे। देखें मत्ती २७:२४,२५

५:२९ ४:१९ देखिए। जब लोगों और परमेश्वर की आज्ञा में टकराव है, तो यही एक सिद्धान्त है। आज्ञा मानने का मतलब था सताव, जेल में डाला जाना और आखिर में मौत। इन सबके बावजूद उन्होनें इस सिद्धान्त को पकड़े रखा।

५:३० २:२३; ४:१० देखें। पतरस ''क्रूस'' शब्द के लिए पेड़ शब्द इस्तेमाल करता है (देखें १०:३९; गल ३:१३; ३:२९; १ पत २:२४) व्यवस्था २१:२२ से तुलना करें।

५:३१ २:३३-३६ देखें। ''राजकुमार'' का मतलब यहाँ है ''अगुवा'' (प्रधान''। देखें मन बदलाव और माफी साथ-साथ चलते हैं, मसीह से मिलने वाले वरदान हैं (२:३८; लूका २४:४७;२ तिमु २:२५)।

५:३२ १:८; २:३२; ३:१५; ४:३३। प्रेरितों के ज़रिए अजीब काम करवाकर पवित्र आत्मा गवाही देता था। इससे उनकी गवाही में अधिकार और ताकत आती थी। पवित्र आत्मा की बात मानने और पवित्र आत्मा को हासिल करने में जो सम्बन्ध है, उसे देखें। दूसरी जगहों मे हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा माँगने से मिलता है (लूका ११:१३) और विश्वास से (गल ३:१४)। पतरस मसीह यीशु में विश्वास की आज्ञाकारिता की बात करता है । यूहन्ना ६:२९ देखें; रोमि १:५। मसीह पर भरोसा रखना परमेश्वर की इच्छा को मानना है। जब तक मसीह को समर्पित करने और उनकी बात को मानने की इच्छा नहीं, तब तक विश्वास नहीं होगा। एक बलवई मन जो परमेश्वर को मानने के लिए खुला नहीं है, उसमें विश्वास नहीं पैदा होता है। परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा को उन लोगों को देते हैं जो उनकी बात मानने के लिए तैयार हैं ताकि वे उनकी बात मानें। मत्ती ७:२१; रोमि १०:९,१० भी देखें।

५:३३ यह उन लोगों की अजीब प्रतिक्रिया है, जिन्होंने रोशनी से ज्यादा अंधेरे को पसन्द किया है (यूहन्ना ३:१९,२०; १०:३१; १२:१०,११; १५:१८-२०)

५:३४ ''फरीसी'' - मत्ती ३:७ इसके पहले कि शाऊल, पौलुस बने, उसका गुरु गमलीएल था (२२:३)

५:३६,३७ ये बातें बाइबल मे लिखी हुयी नहीं दिखती हैं।

५:३८,३९ यहूदी नेताओं के गुस्से को शान्त करने और प्रेरितों को उस समय आज़ाद करने के लिए परमेश्वर ने इस सलाह का इस्तेमाल किया। लेकिन गमलीएल का पहला कथन ठीक नहीं था। मनुष्य के सोच विचार धर्म और शैतान के बहुत से काम शताब्दियों से चले आ रहे हैं। लगता यह भी है कि वे सफल होने के साथ बढ़ते भी जा रहे हैं। हर बात जो इंसान से निकली है खतम हो जाएगी (तुलना करें यशा २:१०-२२)। पद ३९ में गमलीएल के शब्द हमेशा सच हैं। उसने बड़ी अच्छी तरह से बतलाया कि लोग क्या करते थे और अभी भी कर रहे हैं - ''परमेश्वर से भी लड़नेवाले''

५:४० यह एक कठोर दण्ड था। उन्होंने उसकी पीठ पर ३९ बार कोड़े मारे (मत्ती २७:२६; २ कुरि ११:२४)।

५:४१ परमेश्वर के साथ रिश्ता और यीशु मसीह से प्यार कितने मायने रखता है। ऐसे लोग शर्म और लज्जा को खुशी कीशक्ल में ले लेंगे (यूहन्ना १६:३३; मत्ती ५:११,१२; याकूब १:२; १ पत ४:१२-१६) यहाँ पर शर्म और घमण्ड से पड़े थे जो शर्मिन्दगी पैदा करता है।

४२,**६** **लेकिन** हर दिन प्रार्थना भवन और घर-घर में लोगों को यीशु के बारे में बताने से वे रुके नहीं। **उन** दिनों में जब
शिष्य लोग गिनती में बढ़ते जा रहे थे, यूनानी बोलने वाले यहूदी इब्रानी बोलने वाले यहूदियों के खिलाफ़ शिकायत करने
लगे। ऐसा इसलिए क्योंकि हर दिन जो भी लोगों को मिलता था, उसमें यूनानी बोलने वाले यहूदियों की विधवाएँ वंचित
२ रह जाती थीं। **तब** बारह लोगों ने शिष्यों के झुण्ड को एक जगह बुलाकर कहा, ''यह बात सोचने से भी बाहर है कि
३ हम परमेश्वर के वचन को छोड़कर खाना बाँटते फिरें। **इसलिए** भाइयो अपने बीच में से सात ऐसे लोगों को चुन लो,
४ जिनकी इ़ज़्जत है, पवित्र आत्मा और ज्ञान से भरे हैं। उन्हीं को यह काम सौंप दो। **लेकिन** हम अपने समय को लगातार
५ प्रार्थना और वचन सिखाने मे देते रहेंगे।'' **इन** बातों से सभी खुश हो गए। उन्होंने स्तिफनुस को जो विश्वास और पवित्रात्मा
से भरा हुआ था और उसके लिये प्प्रार्थना की और फिलिप्पुस, और प्रुखुरूस, निकानोर, तिमोन परमिनास और अन्ताकिया
६,७ से निकोलस को चुना।। **इन** सभी को प्रेरितों के सामने लाया गया। और प्रेरितों ने उनके ऊपर हाथ रखे। **परमेश्वर** का
वचन बढ़ने लगा और यरुशलेम में शिष्यों की गिनती बहुत बढ़ने लगी। याजकों के एक बड़े झुण्ड ने भी यीशु को अपना
८ लिया। **स्तिफनुस** विश्वास और शक्ति से भरकर लोगों के बीच बड़े अद्भुत काम और चमत्कार किया करता था ।
९ **तब** आराधनालय के कहलाने वाले कुछ लोग उठ खड़े हुए जिसे ''आज़ाद किए गए लोगों का आराधनालय'' कहा जाता
१० है। एलिक्जेन्ड्रियन्स, किलकिया और एशिया के लोग स्तिफनुस से बहस बाज़ी करते रहे। **लेकिन** जिस ज्ञान और आत्मा
११ से वह बोलता था, उसके सामने वे टिक न सके। **तब** अलग से उन्होंने लोगो को यह कहने के लिए उभारा ''कि हमने
१२ उसे परमेश्वर यहोवा और मूसा के खिलाफ़ बोलते हुए सुना है।'' **उन्होंने** लोगों, बुज़ुर्गों और नियमशास्त्र को सिखाने वालों
१३ को उकसाया इसलिए वे आए और उसे पकड़कर सभा के साम्हने ले गए। **तब** उन्होंने झूठे गवाहों को बुलाया, जिन्होंने
१४ कहा, ''यह व्यक्ति पवित्र स्थान और नियमशास्त्र के खिलाफ कहने से नहीं रुकता **क्योंकि** हमने उसे यह कहते हुए

५:४२ मौत की धमकी, कठोर दण्ड, कारावास - इनमें से कुछ भी आत्मा से भरे यीशु के सेवकों को रोक न सके (४:२०; ८:१,४; १४:१९,२०; १६:२२-३१)।

६:१ ध्यान दें, आत्मिक मण्डली में प्रेरितों पर। ध्यान दें मत्ती १०:१; २८:१६। वे लोग बिना गलती वाले लोग नहीं थे। यहाँ वे दो हिस्सों मे बँटे हुए दिखते हैं। ''यूनानी यहूदी जो यूनानी बोलते थे न कि अरामी या इब्रानी। शायद वे लोग किसी समय दूसरे देशों में पैदा हुए या रह रहे थे। यरुशलेम मे अरामी एक रोज़मंर्रा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा थी। यह इब्रानी से मिलती जुलती थी। अरामी बोलनेवाले मसीही यूनानी संस्कृतिवाले मसीहियों के साथ भेदभाव कर रहे थे। कुछ विश्वासी अपनी पिछली एकता को भूल रहे थे और बुरे स्वभाव के मुताबिक जी रहे थे। (१ कुरि ३:१-४)। भाषा, रंग, जाति, राष्ट्र आर्थिक स्तर या किसी और कारणवश होने वाला भेदभाव गलत है। यह मनुष्य के बुरे स्वभाव की वजह से है। मसीह में इनमें से किसी भी बात की अहमियत नहीं है। १ कुरि १२:१३; गल ३:२८; कुल ३:११)। अगर इन इन बातों से हमारे बीच मे पार्टीबाजी होती है, तो हम यीशु के खिलाफ दुष्टता कर रहे हैं। उन्होंने तो हर तरह के बँटवारे को खतम करके प्यार करना और मेल से रहना सिखाया था। (यूहन्ना १३:३४; इफि ४:३)

६:२ ''बारह'' शुरु के ग्यारह प्रेरित और मत्तियाह (१:२६) उन्हें मालूम था कि अगर वे खाना खुद बाँटेंगे, तो सभी को इन्साफ मिलेगा लेकिन परमेश्वर ने उन्हें एक दूसरी सेवा दी थी, जिसे वे छोड़ना नहीं चाहते थे (रोमि १२:३-८)।

६:३ देखिए कि मण्डली के लोगों को ही उन्हें चुनना था। खुद प्रेरितों ने उन्हें, नियुक्त नहीं किया। लेकिन क्या खाना बाँटनेवालों को पवित्र आत्मा और बुद्धि से भरा होना चाहिए? हाँ अगर हम चाहते हैं कि परमेश्वर के तरीके से काम किया जाए जैसा किया जाना चाहिए यदि हम वैसी परमेश्वर की सेवा करना चाहते हें तो यह ज़रुरी है कि बुद्धि और आत्मा की भरपूरी हो। कोई भी व्यक्ति जैसे परमेश्वर चाहते हैं अगर वैसा जीवन जीना चाहे, तो उसे बुद्धि और पवित्र आत्मा की भरपूरी चाहिए। देखें इफि ५:१८; याकूब १:५।

६:४ जिन लोगों को परमेश्वर ने संदेश सुनाने के लिए बुलाया है, उनके जीवन में परमेश्वर के साथ संगति और वचन के अध्ययन का खास स्थान है। अगर एक की भी कमी है, तो अपंग सेवा होगी।

६:५ ''मत'' इसका मतलब यह है कि पहले वह यहूदी मत में आया और फिर यीशु का शिष्य बन गया।

६:६ प्रेरितों ने लोगों के चुनाव को कबूल किया और इस तरह से काम के लिए अलग किया

६:७ अगर यहूदी अगुवे मसीह के शिष्य बनना चाहते थे तो उन्हे यीशु के बारे में पुराने विचारों और विरोध करनेवाले अगुवों के विचारों को छोड़ना ज़रुरी था। उनका ऐसा करना यीशु के जी उठने और पवित्रात्मा के आने का पुख्ता सबूत था।

६:८ जिन्हें, उसने खाना परोसने का काम दिया गया था, उन्होंने दूसरे वरदानों को भी समझ लिया। छोटे-मोटे काम में जो लगा रहता है, उसे परमेश्वर अद्भुत कामों के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती कि पवित्र आत्मा से भरे व्यक्ति के साथ क्या हो सकता है।

६:९ ये वे यहूदी थे जो कभी दूसरे देशों में रहा करते थे।
''आज़ादी'' - इस यूनानी शब्द का संकेत उन लोगो की तरफ है जिन्हें गुलामी से आज़ादी मिली थी।

६:११ बहस में हारने के बाद वे दुष्टों द्वारा इस्तेमाल तरीकों को अपना लेते हैं (मत्ती २६:५९; यूहन्ना ८:४८,५९; आदि)।

६:१२ ''महासभा'' - सेन्हेड्रिन - मत्ती ५:२२।

६:१४ मत्ती २६:६१ से तुलना करें।

१५ सुना है कि नासरत के यीशु इस भवन को नष्ट कर डालेंगे और मूसा से हमें मिले रिवाज़ों को बदल डालेंगे। **हर** एक
७ जन ने जो महासभा में बैठा था, उसका मुँह स्वर्गदूत की तरह चमकते हुए देखा। **तब** सबसे बड़े पुरोहित ने कहा,
२ "क्या ऐसी बात है?" **उसने** उत्तर दिया 'लोगो, भाइयो और पिताओ सुनो। हारान में जाने से पहले, जब अब्राहम
३ मेसोपोटामिया में था, उस समय महिमा के परमेश्वर उस पर प्रगट हुए। **परमेश्वर** ने उससे कहा, 'अपने देश और
४ अपने लोगों में से निकलो, और उस जगह जाओ, जो मैं तुम्हें दिखाऊँगा।' "**तब** वह कसदियों के देश से निकलकर
आया और हारान में रहने लगा। जब उसके पिता का देहान्त हो गया, तब परमेश्वर ने तुम्हें इस जगह, जहाँ अब तुम
५ हो बुला लिया। **उन्होंने** उसे कुछ भी मीरास नहीं दी, यहाँ तक कि पैर रखने की जगह भी नहीं। लेकिन उसने वायदा
६ किया कि वह उसे और उसके वंश को यह ज़मीन देंगे। उस समय अब्राहम के कोई सन्तान नहीं थी। **यहोवा** परमेश्वर
ने उससे कहा, कि उस का वंश दूसरे देश में परदेशी होगा। वहाँ के लोग उन्हे ४०० साल तक गुलाम बनाकर रखेंगे
७ और उनके साथ बुरा बर्ताव करेंगे। **जिस** देश में वे गुलाम होंगे, उस को मैं दण्ड दूँगा परमेश्वर ने कहा बाद में वे
८ बाहर निकल आएँगे और इस जगह मेरी सेवा करेंगे। **परमेश्वर** ने उसे खतने की वाचा दी। इसलिए अब्राहम इसहाक
का पिता बना और आठवें दिन उसका खतना किया। इसहाक याकूब का पिता बना और याकूब बारह पूर्वजों का पिता
९,१० हुआ। **पूर्वज** ईर्ष्या से भर गए और यूसुफ को मिस्त्र में बेच डाला। लेकिन परमेश्वर उसके साथ थे। **और** परमेश्वर
ने उसे उसकी सारी समस्याओं से छुड़ा कर फिरौन राजा के सामने और बुद्धि दी। इसलिए उसने उसे मिस्त्र और अपने
११,१२ कुटुम्ब के ऊपर अधिकारी बनाया। **तब** मिस्त्रऔर कनान में अकाल और बड़ी समस्या थी। **जब** याकूब ने सुना कि
१३ मिस्त्र में अनाज है, उसने, पहली बार हमारे पूर्वजों (याकूब के बेटों) को वहाँ भेजा। **दूसरी** बार यूसूफ ने अपने
१४ आप को भाइयों पर प्रगट किया और फिरौन को यूसुफ के लोगों की जानकारी मिल गयी। **तब** यूसुफ ने अपने पिता
१५ याकूब और उसके पूरे परिवार की जो लगभग पचहत्तर थे मिस्त्र बुलाया और **इसलिए** याकूब मिस्त्र गया, वहीं पर
१६ वह हमारे दूसरे पूर्वज मर गए। **उनकी** देह को शेकेम ले जाकर उस कब्र में रखा जिसे अब्राहम ने शेकेम के प्रधान
१७ हामोर के बेटों से पैसों में खरीदा था । **लेकिन** जब अब्राहम से किए गए वायदे के पूरे होने का समय निकट आया,
१८ मिस्त्र में लोगों की गिनती बढ़ गयी **तब तक** एक दूसरा राजा गद्दी पर आ गया, जो यूसुफ को नहीं जानता था।
१९ **उसने** हमारे लोगों के साथ बुरा व्यवहार और हमारे पूर्वजों के साथ दुष्टता की और मजबूर किया कि वे अपने शिशुओं
२० को फेंक दे और जिन्दा न रहने दें। **उसी** समय मूसा का जन्म हुआ। वह बहुत खूबसूरत था । उसके पिता के घर मे
२१ तीन महीने तक वह पाला पोसा गया। **जब** उसे बाहर रखा गया, तब फिरौन की बेटी उसे उठा लायी और अपने बेटे
२२ की तरह पालती रही। **मूसा** को मिस्त्र की सारी विद्या सिखायी गयी। वह अपने बोलने चालने और कामों में बहुत

६:१५ वे यह जानते थे कि स्तिफनुस अबोध, ईमानदार और ताकतवर था। लेकिन ये सच्चाई से नफरत करनेवाले उसको खतम करना माँगते थे। उत्पत्ति १६:७ में स्वर्गदूतों पर नोट्स देखें।

७:१ अपने भाषण में उनके द्वारा लगाए गए आरोपों की तरफ स्तिफनुस इशारा नहीं करता है। इसके बजाए वह इस्त्राएल राष्ट्र के इतिहास के बारे में थोड़ा बहुत बताता है। वह इस्त्राएल के पिता अब्राहम से शुरु करता है। वह खास जोर मूसा पर डालता है, जिसके ज़रिए परमेश्वर ने नियमशास्त्र दिया। इस तरह से वह उनके झूठे आरोप का उसने परमेश्वर मूसा, नियमशास्त्र और प्रार्थना भवन की निन्दा की है, जवाब दिया (६:११,१३,१४) - वह दिखाता है कि उसकी शिक्षा ओल्ड टेस्टामेन्ट से मेल खाती है।पूरे समय उसका ध्यान एक ही जगह था-वह यह दिखाता है कि हमेशा से इस्त्राएल देश परमेश्वर द्वारा रखे गए अगुवों का विरोध करता रहा। यह रवैया यीशु की हत्या में पूरी तरह दिखाई दिया। यहूदियों की अदालत में यह सब कहकर स्तिफनुस ने बड़ी हिम्मत दिखायी। इसी अदालत ने यीशु को दोषी साबित किया था। उसकी हिम्मत की वजह हमे ६:५ में दिखती है।

७:२ "शान के परमेश्वर" यह नाम भजन २९:३ मे मिलता है। अब्राहम का वर्णन हम उत्पत्ति ११-१५ मे पाते हैं।

७:५ उत्पति १२:७; १५:२-६; १७:८

७:६,७ उत्पति १५:१३-१६

७:८ उत्पति १७:९-१४; २१:१-५; २५:२६; ३५:२३-२६
"पुर्वज" - याकूब के बेटे या इस्त्राएल के बारह गोत्रों के पूर्वज।

७:९ उत्पत्ति ३७:४,११,२८।

७:१० उत्पत्ति ४१:३९-४३।

७:११,१२ उत्पत्ति ४१:५३-४२:३।

७:१३ उत्पत्ति ४३:१५; ४५:१,२,१६।

७:१४ उत्पत्ति ४६:२६ से तुलना करें। वहाँ कनान में याकूब के परिवार में बेटों की पत्नियों को छोड़कर संख्या ६६ है। अगर हम याकूब के बेटों की पात्नियो की संख्या गिनें तो सब मिलाकर ६५ संख्या हुयी (यहूदा की पत्नी मर चुकी थी)।

७:१५ उत्पत्ति ४६:५-७।

७:१६ उत्पत्ति २३:१४-१८।

७:१७-१९ निर्गमन १:६-१४।

७:२०-२२ निर्गमन २:१-१०।

२३ ताकतवर था। **जब** वह चालीस साल का हुआ, तब उसके मन में आया, कि वह इस्त्रालियों यानि कि अपने भाइयों से
२४ मुलाकात करे। **उनमें** से एक को सताए जाता देखकर, उसने उसे बचाने और बदला लेने की कोशिश में एक मिस्त्री
२५ को ऐसा मारा, कि वह मर गया। **उसने** सोचा था कि उसके भाईबन्धु उसे समझ सकेंगे कि परमेश्वर उसके द्वारा उन्हें
२६ छुड़ा लेंगे, लेकिन वे यह न समझ सके। **अगले** दिन जब दो इस्त्राएली आपस मे झगड़ा कर रहे थे, उसने यह कहते
हुए उनके बीच सुलह करने की कोशिश की ''तुम लोग आपस में भाईबन्धु हो, एक दूसरे को नुकसान क्यों पहुँचा रहे
२७ हो' ''**लेकिन** जो अपने भाई को मारना चाहता था,उसने सिर हिलाते हुए कहा,'' हमारे ऊपर शासन करने के लिए
२८,२९ तुम्हें किसने ठहराया है?' **जैसे** तुमने उस मिस्त्री को मार डाला था, क्या मुझे भी मार डालोगे। **यह** सुनते ही मूसा
३० वहाँ से भागा और मिद्यान देश चला गया और वहाँ परदेशी की तरह रहा। वहाँ उसके दो बेटे भी पैदा हुए। **जब** चालीस
साल बीत गए, सीनै पहाड़ के जंगल मे एक झाड़ी में आग की लपटों के बीच परमेश्वर का एक स्वर्गदूत दिखा।
३१ **यह** देखते ही मूसा बड़े आश्चर्य से भर गया। जैसे ही वह देखने के लिए पास गया। परमेश्वर की यह आवाज़ सुनी,
३२ ''**मै** तुम्हारे बापदादों, अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूँ। मूसा घबरा गया और देखने तक की हिम्मत भी
३३ नहीं की।'' **तब** परमेश्वर ने उससे कहा, कि अपने पैरों से चप्पल को उतार दो, क्योंकि जिस जगह पर तुम खड़े
३४ हो वह पवित्र जगह है। **मैंने** देख लिया है, हाँ, मैने मिस्त्र में अपने लोगों के ऊपर अत्याचार को देखा है और उनके
३५ कराहने को सुना है। मैं उन्हें छुड़ाने के लिए नीचे उतर आया हूँ और तुम्हें मिस्त्र भेजूँगा।'' **यही** वह है, जिसे यह
कहते हुए इब्रियों ने ठुकरा दिया था, "हमारे ऊपर तुमको किसने जज ठहराया है?''यही वह मूसा है जिसे परमेश्वर
ने उस स्वर्गदूत के द्वारा जो वहाँ झाड़ी में दिखा था, उसके हाथों से मिस्र की गुलामी से आज़ादी देने के लिए और
३६ न्यायी बनने के लिए भेजा था। **मिस्त्र,** लाल समुद्र और चालीस साल जंगल के आश्चर्य के काम और चमत्कारिक चिन्ह
३७ दिखाने के बाद वह उन्हें बाहर निकाल लाया। **यह** वही मूसा है, जिसने इस्त्राएली लोगों से कहा कि,तुम्हारे बीच ही
३८ में से तुम्हारे लिए मेरी तरह एक भविष्यद्वक्ता को खड़ा करेंगे। तुम उन्हीं की सुनना। **यह** वही हैं जो जंगल की स्वर्गदूत
के साथ था, जिसने सीनै पहाड़ पर उस से बातें कीं, और हमारे पूर्वजों के साथ; उसी को जीवित संदेश मिला, कि
३९ हम तक पहुँचाए । **हमारे** पूर्वजों से बातचीत की पूर्वजों ने उसकी बात नही मानी, लेकिन तुच्छ जाना और अपने मन
४० में फिर से मिस्त्र की तरफ मुड़ गए। **उन्होंने** हारुन से कहा, 'हमारा मार्गदर्शन करने के लिए हमारे लिए देवता बना,
४१ क्योंकि हम नही जानते कि, मूसा जो हमें मिस्त्र देश से बाहर लाया था, कहाँ गया।' **उस** समय उन लोगों ने एक
बछड़े की मुर्ति बनाकर उसके सामने बलिदान चढ़ाया।वे अपने हाथ के कामों से खुश थे, जैसे कि भविष्यद्वक्ताओं की
४२ किताब में लिखा है, **तब** परमेश्वर उन से नाराज़ हो गए और आकाश के तारों की उपासना करने के लिए उन्हे छोड़ दिया
और कहा हे इस्त्राएल के कुटुम्ब जंगल में चालीस सालों के दौरान क्या तुमने वध किए हुए पशुओं और बलिदानों को
४३ मेरे लिए चढ़ाया था? **यहाँ** तक कि तुमने मोलेक के तम्बू और रिफान देवता के सितारे और मूर्तियों की उपासना करने
४४ के लिए उन्हें रख लिया। इस लिए मैं तुम्हें बेबिलोन तक तुम्हें ले जाऊँगा। **जैसा** परमेश्वर ने नियुक्त किया था कि देखे
४५ हुए नमूने के समान मूसा बनाए, जंगल में हमारे पूर्वजों के पास साक्षी का तम्बू था। **इसे** हासिल करके हमारे पूर्वज

७:२३-२९ - निर्गमन २:११-१५, २१,२२; १८:३।

७:२५ इस विषय पर स्तिफनुस ज़ोर डालना शुरु करता है- अपने इतिहास में इस्त्राएल के लोगों ने दिखाया कि वे अक्सर परमेश्वर की योजना से अनजान थे। परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए गए अगुवों को उन्होंने तुच्छ जाना था।

७:३०-३४ निर्गमन ३:१-१०।

७:३५ इस स्वर्गदूत पर उत्पत्ति १६:७, निर्ग १:२ में नोट्स देखें।

७:३६ यह पद निर्गमन ७-१७ अध्याय और गिनती १४-२१ के बारे में कहता है।

७:३७ व्यवस्था १८:१५ यह भविष्यद्वक्ता यीशु मसीह थे।

७:३८ मूसा के खिलाफ स्तफनुस ने कुछ नही कहा था, उसने तो उसे इज्जत दी थी। वह नियमशास्त्र कों ''जीवित वचन'' कहता है - तुलना करें यूहन्ना ६:६३; लैव्य १८:५

७:३९ पद १, २५ पर नोट्स देखें। स्तिफनुस दिखाएगा कि जैसे इस्त्राएल का बर्ताव मूसा भविष्यद्वक्ता से था, उसी तरह का बर्ताव मूसा द्वारा कही गयी भविष्य की बातों के लिए उनका था। पद ३७)। हालाँकि इस्त्राएल के लोग मिस्त्र छोड़ चुके थे, उनके ख्याल अब तक वहीं थे (निर्ग १६:१-३; गिनती १४:१-४)।

७:४०,४१ निर्गमन ३२:१-६।

७:४२,४३स्तिफनुस इब्रानी में लिखी आमोस ५:२५-२७ की यूनानी प्रतिलिपि की बात कर रहा है। वह सही-सही पद नहीं बता रहा है। वह सिर्फ यह कहना चाह रहा है कि इस्त्रालियों के आज्ञा न मानने और बलावा करने की वज़ह से परमेश्वर ने उन्हें झूठी उपासना मे गिरने दिया। नोट्स देखें, तारों की उपासना के बारे मे व्यवस्था ४:१९; १७:३-५; यहेज ८:१६-१८; उत्पत्ति १:१४-१८

७:४४ निर्गमन २५:१-९।

७:४५ यहोशू अध्याय ३; १८:१; १ शमूएल २:२२; २ शमूएल ६:१७

इसे यहोशू के साथ गैरयहूदियों के देश को लाए, जिन्हे दाऊद के दिनों तक परमेश्वर ने हमारे पूर्वजो के सामने से
४६ निकाल दिया था। **परमेश्वर** की कृपा दाऊद पर थी और वह याकूब के परमेश्वर के लिए एक भवन बनाना चाहता था।
४७,४८ **लेकिन** सोलोमन ही उसे बना सका। **जैसा** कि भविष्यद्वक्ता कहता है, सर्वशक्तिमान, हाथ से बनाए हुए भवन में नहीं
४९ रहते हैं। **स्वर्ग** मेरा सिंहासन है, पृथ्वी मेरे पैरों की पटरी। मेरे लिए तुम किस तरह का भवन बनाओगे और मेरे आराम
५० की जगह कौन सी होगी एक भविष्यद्वक्ता ने कहा है, प्रभु कहते हैं, **क्या** मेरे हाथों ही ने यह सब कुछ नही बनाया
५१ है? **तुम** ज़िद्दी लोग, जिनके कान ओर मन के ऊपर परत जमी हुयी है, तुम हमेशा पवित्र आत्मा से झगड़ते हो। तुम बिल्कुल
५२ अपने पूर्वज़ों की तरह हो। **ऐसे** कौन से भविष्यद्वक्ता थे। जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं सताया? उन लोगों ने उन्हें भी
मार डाला जिन्होंने उस धर्मी के आने के बारे में भविष्यद्वाणी की थी। और अब तुम भी उनके पकड़वानेवाले और मार
५३,५४ डालनेवाले हुए । **स्वर्गदूतों** द्वारा दिए गए नियमशास्त्र को तुमने पाया, लेकिन उसके हिसाब से किया नहीं।'' **जब** उन्होंने
५५ यह सब सुना तो कायल हो गए और उस पर दाँत पीसने लगे। **लेकिन** उसने पवित्र आत्मा से भरकर ऊपर स्वर्ग
की तरफ देखने पर परमेश्वर की महिमा को देखा, जहाँ परमेश्वरीय अधिकार के साथ यीशु मसीह खड़े थे।
५६ **उसने** कहा, ''देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के सारे अधिकार के साथ खड़ा हुआ
५७,५८ देखता हूँ। **तब** वे अपने-अपने कान बन्द करके ज़ोर से चिल्लाए और एक साथ मिलकर उस पर झपटे। **उसे** शहर
से बाहर घसीटते ले गए,और पत्थर से मारने लगे। वहाँ पर शाऊल नामक एक व्यक्ति के पैरों के पास गवाहो ने अपने कपड़े
५९ रखे थे।**जब** वह परमेश्वर को यह कहकर पुकार रहा था, 'यीशु स्वामी, मेरी आत्मा को कबूल कीजिए'' उसके ऊपर पत्थर

७:४६ २ शमूएल ७:१-५। ''याकूब का परमेश्वर'' भजन १४६:५ पर नोट्स देखें।

७:४७ १ राजा अध्याय ६।

७:४८-५० यरुशलेम के प्रार्थना भवन को यहूदी बहुत तूल दे रहे थे। स्तिफनुस के खिलाफ एक आरोप यह था कि वह मन्दिर के खिलाफ बोला (६:१३,१४)। यह साफ ज़ाहिर है कि उसकी बातें यह इशारा कर रही थीं कि प्रार्थना भवन में कुछ नहीं रखा है लेकिन वह जिस परमेश्वर से सम्बन्धित है, वह खास है। यह भी कि पवित्र जीवन बिताना, आज्ञा मानना किसी रीति विधि को मानने से बेहतर है (तुलना करें यशा १:१२-२०)। यहाँ पर वह यशा ६६:१,२ से दिखाता है कि उसके विचार ओल्ड टेस्टामेन्ट से मिलते जुलते हैं। वे पद इन शब्दों से समाप्त होते हैं।

स्तिफनुस इन शब्दों को यहाँ दोहराता नहीं है, लेकिन वे उसके मन में रहे होंगे। क्या उसने इन शब्दों में व्यक्त व्यक्ति और वहाँ खड़े यहूदी अगुवों मे बड़ा अन्तर नहीं देखा? ऐसा लगता है कि यह (उसके मन में पवित्रात्मा की प्रेरणा) उनके खिलाफ भड़कने वाले उस क्रोध का कारण थे, यह अगले पद में दिखता है।

७:५१ यीशु की तरह जिन्होंने कभी परिणाम की फिकर नहीं की, स्तिफनुस ने सत्य बोला। कड़ी गर्दन वाले का मतलब है जिद्दी और बलवा करनेवाले। - लैव्य २६:४१; व्यव १०:१६; यिर्मया ४:४ देखें। क्योंकि उनके मन नए नहीं हुए थे इसलिए वे परमेश्वर की सुनकर उसको मान नहीं सकते थे। (यिर्मया ६:१०; मत्ती १३:१४,१५) यह कहना कि वे अपने पिता (पूर्वजों) की तरह थे, उन्हें दोषी ठहराना था (पद ३९-४३; मत्ती २३:३२) ७:५२ मत्ती २३:३३-३६ यीशु ही सच्चे हैं। (३:१४) ७:५३ उन्होंने उस पर आरोप लगाया कि वह नियमशास्त्र का विरोधी था ६:१३), दावा तो करते थे कि नियमशास्त्र का पालन करते हैं, लेकिन बार-बार तोड़ते थे (मत्ती २३:१-३; १५:३-६; रोम २:१७-२४) ७:५४ वह शायद कुछ और कहना चाहता था लेकिन वे इन्तज़ार नहीं करना माँगते थे। तुलना करें ५:३३; भजन ३५:१६; यूहन्ना ३:२०। जो लोग अभी परमेश्वर के सेवकों पर दाँत पीसते हैं, एक दिन किसी और वजह से दाँत पीसेंगे (मत्ती ८:१२; १३:४२)।

७:५५ परमेश्वर की आत्मा की भरपूरी की वजह से स्तिफनुस निडरता से बोल सका (६:५,८,१०)। उसके सताव और मौत के समय परमेश्वर ने उसे एक खास दर्शन दिया था ।

७:५६ ''देख'' क्या वह यह सोच रहा था कि जो वह देख पा रहा था, दूसरे लोग भी देख रहे थे। ऐसा लगता है कि अगर परमेश्वर योग्यता दे तो इन्सान स्वर्ग को ऐसा देख सकेगा जैसे कि वह नज़दीक ही में है। (१:६)।

''मनुष्य का पुत्र'' मत्ती ८:२० स्तिफनुस के इन शब्दों की तुलना यीशु के उन शब्दों से करें जो सभा के सामने यीशु ने कहे थे (मत्ती २६:६४) ।

७:५७ गलत बात (असत्य) का सामना जब पढ़े लिखे धार्मिक लोग करते हैं, वे किसी भी दूसरे इंसान की तरह उद्दण्डी और हिंसात्मक रवैया अपनाते हैं। जिस यीशु से ये लोग नफरत करते थे उनके सम्मान में कहे गए शब्दों को ये लोग सह नही सक रहे थे (यूहन्ना १५:१८-२५)। इसलिए जिन बातों को उन्हें सुनकर विश्वास करना चाहिए था, उन्होने सुनना मंजूर नहीं किया।

७:५८ उनको ऐसा कोई हक नही था कि रोमी शासन के तहत किसी को जान से मारें (यूहन्ना १८:३१) लेकिन अपने गुस्से में उन्होंने इस सच्चाई से बचना चाहा। उन्होंने सोचा (या कहा) कि स्तिफनुस परमेश्वर की निन्दा करनेवाला है इसलिए उनकी ज़िम्मेदारी है उसे जान से मार डालना (यूहन्ना १६:२; लैव्य २४:१३-१६)।

''गवाह'' वे थे जिन्होंने सुना और आरोप लगाया। यहाँ हम शाऊल को भी देखते हैं जो बाद में बदल जाता है।

७:५९ लूका २३:४६ वह यीशु के परमेश्वर होने को मानता था। परमेश्वर के अलावा और कौन उसकी आत्मा को ग्रहण कर सकता था? (भजन ३१:५; सभो. १२:७) ।

६० फेके जा रहे थे। **वहाँ** उसने घुटने टेक दिए ऊँची आवाज से चिल्लाया, ''स्वामी, यह अपराध उनके नाम पर मत लगाईए
क्योंकि उन्हें नहीं मालूम कि वे क्या कर रहे हैं'' यह कहने के बाद वह मृतक सा हो गया और शाऊ उसके वध में
८, शामिल था । **उस** समय यरुशलेम में मण्डली के खिलाफ बड़ा सताव शुरु हुआ। प्रेरितों को छोड़कर सभी यहूदिया और
२,३ सामरिया में बिखर गए। **कुछ** स्तिफनुस को गाड़ने ले गए और बहुत रोए। **जहाँ** तक शाऊल का सवाल है, वह मण्डली
में ज़ुल्म ढाता रहा। घरों में घुस-घुसकर वह लोगों को बाहर घसीट कर लाता और उन्हें जेल में डलवाता था।
४,५ **इसलिए** वे सभी जो इधर उधर हो गए थे, वचन का संदेश देते हुए यहाँ वहाँ पहुँच गए। **तब** फिलिप्पुस सामरिया
६ शहर गया और उन लोगों को मसीह के बारे में बताया। **जिन** बातों को फिलिप ने कहा, और जो अद्‌भुत काम किए
७ उन्हें देख सुनकर, एक मन होकर मन लगाया। **जो** लोग दुष्ट आत्माओं से प्रभावित थे, वे उनमें से चिल्लाती हुयी
८,९ बाहर निकल आयीं। जो अपंग और लँगड़े थे, उनमें से बहुत से अच्छे हो गए। **सारे** शहर में बहुत खुशी थी। **शमौन**
नाम का एक व्यक्ति उस शहर में जादू टोना किया करता था। यह दावा करके कि वह बहुत बड़ा आदमी है,सामरिया
१० के लोगों को आश्चर्य में डाल दिया करता था। **छोटे** और बड़े, सभी ने यह सब देखकर कहा, ''यह मनुष्य परमेश्वर
११ की बड़ी शक्ति है।'' **बहुत** समय से वे उसे बड़ी इ़ज्जत दिया करते थे, क्योंकि उसने काफी समय से अपने जादू से
१२ लोगों को मोह लिया था। **लेकिन** जब उन्होंने परमेश्वर के राज्य के सम्बन्ध में फिलिप्पुस की बातों और यीशु मसीह के

७:६० लूका २३:३४ परमेश्वर के आत्मा की भरपूरी ने उसे यीशु की तरह बनाया। मत्ती ५:४३-४८ में जो कुछ भी यीशुने सिखाया, उसने कर दिखाया। हमें सीख लेनी चाहिए कि, इतनी कम उम्र में स्तिफनुस कई मायनों में यीशु की तरह बन गया। २ कुरु ३:१८। बाईबल मे ''सो जाना'' अक्सर मौत के लिए इस्तेमाल होता है - देह सोती है, आत्मा परमेश्वर के पास चली जाती है (यूहन्ना ११:११,१४; १ कुरि. १५:५१; १ थिस्स ४:१४)

८:१ साफ ज़ाहिर है कि यहूदी अगुवे गमलिएल की सलाह के खिलाफ हो गए (५:३८,३९) और सोचा कि मारपीट के द्वारा ही वचन का बढ़ना रोका जा सकता है। शाऊल गमलीएल का खास शिष्य था (२२:३)। आने वाले सताव में उसकी खास भूमिका थी (पद ३; ९:१,२)। स्तिफनुस की हत्या में शाऊल की सहमति यहूदियों की सबसे बड़ी सभा का सदस्य होने का सबूत नहीं है। इसका मतलब सिर्फ यह हो सकता है कि वह भी उनके साथ सहमत था। यह मज़े कि बात है कि प्रेरित यरुशलेम ही में रह गए। शायद यीशु के दुश्मन हालाँकि यीशु के मेम्नों को नाश करना चाहते थे लेकिन नियुक्त चरवाहों के ऊपर गिरना नहीं चाहते थे।

८:३ "हर घर में"तुलना करें २०:२०,२१ क्या अगुवे ये सोचते थे कि समस्याओं की हवा मण्डली की आग को बुझा देगी? इसका उल्टा ही हुआ। आग फैलती गयी। जगह जगह शुभसंदेश की लपटे फैलती गयी। कलीसिया (मण्डली) का इतिहास यह बताता है कि सताव मसीह की गवाही को रोकता नहीं है। यह इसको बढ़ने में मदद देता है। जिस सताव को खुशी से सहन किया जाता है, उससे विश्वासियों की ईमानदारी दिखती है। मसीह में उनका जीवन और वास्तविकता दिखती है। (५:४०-४२)।

८:५ फिलिप्पुस और स्तिफनुस को खाना बाँटने के लिए अलग किया गया था (६:१-६)। ६:८ के नोट्स उस पर भी लागू होते हैं। देखें मत्ती १०:५; यूहन्ना ४:४ और २ राजा १७:२४ पर नोट्स। इस बात के लिए यीशु ने खुद सामरियों को तैयार किया था (यूहन्ना ४:४-४२) वचन के पहुँचाए जाने में यह एक बड़ा कदम था।- पहली बार (जहाँ तक हमें ज्ञान है) यीशु के शिष्यों ने यहूदी समुदाय के बाहर संदेश दिया। इस तरह से वे प्रेरित १:८ को पूरा करने लगे।

८:६ यूहन्ना २:११ में चिन्ह शब्द के नोट्स देखिए। जैसी परमेश्वर की इच्छा थी वैसा ही काम वहाँ हुआ - उन्होंने लोगों को वचन सुनने के लिए तैयार किया।

८:७ अशुद्ध आत्माओं पर नोट्स देखें मत्ती ४:२४ में।

८:९-११ भारत के तमाम साधु/बाबा की तरह शिमोन एक इंसान था। बहुत लोग उसके हो गए थे। जादू-टोने से वह अद्‌भुत काम करता या करने का ढोंग रचता था (तुलना करें मत्ती २४:२४; निर्ग ७:२२; ८:७)। अपने आप को बड़ा करके दिखाता था। उसने वह इ़ज्जत चाही जो परमेश्वर को मिलने वाली थी। सभी को यहाँ तक कि प्रतिष्ठित लोगों को भी वह प्रभावित कर रहा था।
फिलिप्पुस ओर उसमें काफी फर्क था। वह अपने को बड़ा चढ़ा कर दिखा रहा था, फिलिप्पुस मसीह को (३,१२)। वह अपनी मन गढंत बातें सिखा रहा था, फिलिप्पुस परमेश्वर की बातें सिखाता था (पद १४)। वह खुद बड़ा बनना चाह रहा था, लेकिन फिलिप्पुस मसीह की बड़ाई चाहता था। (मत्ती २०:२५-२८; यिर्म ४५:५)। दूसरा एक और फर्क उसमें और फिलिप्पुस में यह था कि शिमोन के हाथों से किए गए अजीब काम सच्चे चमत्कार नहीं, जादूगर की चालबाज़ी थे। उनका काम सिर्फ अचरज पैदा करना था। फिलिप्पुस ने सचमुच के अजीब काम किए, जिनसे स्वर्गिक पिता की ताकत दिखती है। उसका उद्‌देश्य था दूसरों की तकलीफ में उनकी मदद करना (पद७)। शिमोन खुद इस अन्तर को देख सकता था।

८:१२ ध्यान दें, लिखा है, ''उन्होंने फिलिप्पुस पर विश्वास किया यह नहीं कि "मसीह पर विश्वास किया"। उन्होंने जान लिया कि फिलिप्पुस परमेश्वर की तरफ से है। यह भी कि वह सच्चाई सिखा रहा है। वे मसीह के शिष्यों के साथ जुड़ना चाहते थे। लेकिन यह मालूम नहीं कि उस समय उन्होंने यीशु मसीह पर ज़िन्दा विश्वास रखा या नहीं। लेकिन यह साफ दिखता है कि अब तक उन्होंने पवित्र आत्मा नहीं पाया था (पद १६)

१३ नाम पर विश्वास कर लिया, स्त्री और पुरुषों को बपतिस्मा दिया गया **शिमोन** ने भी स्वयं विश्वास किया। बपतिस्मा पाने
१४ के बाद फिलिप्पुस के साथ-साथ रहा। वह चमत्कारी और चिन्हों को देखकर अचरज से भर जाता था। **जब** यरुशलेम
के प्रेरितों ने सुना कि सामरिया के लोगों ने परमेश्वर के वचन को कबूल कर लिया है, उन्होंने पतरस और यूहन्ना को
१५,१६ उनके पास भेजा। **वहाँ** पहुँचने पर पतरस और यूहन्ना ने प्रार्थना की, कि उन्हें पवित्र आत्मा मिले। **क्योंकि** अभी
१७ तक वह उनमें से किसी पर नहीं उतरा था। उन्हें केवल यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा दिया गया था। **तब** उन्होंने
१८ उन लोगों के ऊपर हाथ रखे ताकि वे पवित्र आत्मा पाएँ। **शिमोन** ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र
१९ आत्मा मिलता है। **इसलिए** उसने कहा, ''मुझे भी यह अधिकार दे दो, ताकि जिसके ऊपर हाथ रखूँ, वह पवित्र आत्मा
२० पाए।'' **लेकिन** पतरस ने कहा, ''तुम्हारा पैसा तुम्हारे साथ ही नाश हो जाए, क्योंकि तुम यह सोचते हो, कि परमेश्वर
२१ का वरदान पैसे से खरीदा जा सकता है। **इस** विषय में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं है क्योंकि तुम्हारा मन परमेश्वर की
२२ निगाह में सही नहीं है। **इसलिए** अपने भीतर की इस दुष्टता से मुड़ जाओ और परमेश्वर से प्रार्थना करो। शायद
२३ तुम्हारे मन में आने वाले विचार की माफी मिल जाए। **क्योंकि** मै देखता हूँ, कि तुम पित्त की सी कड़वाहट और दुष्टता
२४ के बन्धन मे हो।'' **तब** शिमोन ने उत्तर दिया, ''मेरे लिए परमेश्वर से बिनती करो, कि जिन बातों को तुमने कहा
२५ है, वे मुझ पर न आ पड़ें।'' **जब** उन्होंने गवाही दी और परमेश्वर का वचन दिया, वे सामरियों के बहुत से गाँवों में
२६ शुभसंदेश सुनाते हुए यरुशलेम वापस लौट गए। **प्रभु** के स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, उठो, दक्षिण की तरफ जो सड़क
२७ यरुशलेम से गाज़ा को जाती है और मरुस्थल में है, वहाँ जाओ।'' **वह** उठा और चल दिया और इथियोपियन को देखा।

८:१३ शिमोन के बारे में यह भी नहीं लिखा है कि ''मसीह में'' उसने विश्वास किया। यह बात २०-२३ से साफ है कि उसने ऐसा नहीं किया। वह केवल परमेश्वर की दिखने वाली शक्ति से प्रभावित था। बपतिस्मा लेने वाला हर एक इंसान मसीह का सच्चा विश्वासी नहीं है। एक परमेश्वर के जन से बपतिस्मा पाने से एक व्यक्ति परमेश्वर का जन या विश्वासी नहीं बन जाता।

८:१४ सामरिया में क्या क्या चल रहा है, यह प्रेरित जानना चाहते थे।

८:१५-१७ ऐसा लगता है कि यहाँ पतरस परमेश्वर के राज्य की चाभियों को इस्तेमाल करता है और सामरियों के लिए दरवाज़ा खोलता है, जैसे पेन्तिकुस्त के दिन उसने यहूदियों के लिए।और दसवें अध्याय में गैरयहूदियों के लिए किया था। मत्ती १६:१९ में नोट्स देखें। यह बहुत ज़रुरी था कि मसीह के शुरु के प्रेरितों का सच्चे शुभसंदेश के ले जाने वाले की शक्ल में अधिकार को स्थापित किया जाए। ऐसा करने के लिए एक तरीका जिसका इस्तेमाल उन्होंने किया वह था - हाथ रखने से पवित्र आत्मा का दिया जाना (चिन्ह, चमत्कार और अद्‌भुत काम दूसरा तरीका था) - इब्रा २:४।

प्रेरितों का अधिकार बहुत पहले ही से स्थापित किया जा चुका था। शुभसंदेश पूरी तरह से प्रगट किया गया था। हर तरह के लोगों के लिए परमेश्वर का राज्य खुल चुका था। प्रेरितों ने अपने अधिकार का इस्तेमाल किया। मण्डली को बनाया और मण्डली के लिए परमेश्वर का वचन दिया। केवल वे ही परमेश्वर के लिए चुने हुए हथियार थे। परमेश्वर ने बड़ी खास तरह से दिखाने के लिए उनके साथ काम किया। उनके पास अपना काम था और उसे पूरा किया भी।

८:१८,१९ इसलिए कि शिमोन ने पैसे देने चाहे, शायद उसने सोचा होगा, कि इस योग्यता से वह कमाई कर सकेगा। उसे दूसरे लोगों पर और ज़्यादा अधिकार और बड़ा नाम मिलेगा। अंग्रेज़ी में एक शब्द है जो इस व्यक्ति और उसकी बिनती से बना है। इसे ''शिमोनी'' कहते हैं इसका मतलब है मण्डली में ऊँचे अधिकार को बेचना खरीदना।इसका मकसद यह हुआ करता था पैसा कमाने के लिए शक्ति औरअधिकार कमाना। आज कई ज़गह यह सब होता हुआ दिख रहा है। लोग ऊँचे पदों को पाने के लिए वोटों को खरीदते है। यह भ्रष्ट काम है, जिस पर परमेश्वर की आशीष नहीं है।

८:२०-२३ ये कठोर शब्द दिखाते हैं कि शिमोन की बुरी इच्छा कितनी भयंकर थी। इससे यह भी मालूम होता है कि उसका बदलाव नहीं हुआ था। मसीह पर भरोसा नहीं रखा था। सच्चे विश्वासी अपने धन के साथ नाश नहीं होंगे, यूहन्ना १०:२८। शिमोन के जिन लक्षणों की बात पतरस करता है, वो नए विश्वासियों में नहीं होते हैं ।

८:२४ इसका मतलब यह नहीं है कि पतरस का मन बदल गया। वह दण्ड से डरा हुआ था। इसे मनबदलाव नहीं कहते हैं (मत्ती ३:२,८)

८:२५ मत्ती १०:५ से तुलना करें। एक नया सवेरा हुआ है।

८:२६ ''स्वर्गदूत'' - ५:१९; मत्ती १०:२०; लूका १:११,२६। गाज़ा भूमध्यसागर के तट पर यरुशलेम के दक्षिण पूर्व में है।

८:२७ ध्यान दें, फिलिप्पुस सामरिया में एक बढ़ते हुए काम को छोड़कर जहाँ परमेश्वर कहे, वहाँ जाने के लिए तैयार था। इस समय जो जगह है, उसके उत्तर में रहनेवाले लोगों को इथियोपियावासी कहा जाता था। इसी में दक्षिण मिस्त्र और सूडान भी था। उन दिनों मे देश अपने महल में नपुंसक लोगों को अधिकारी रखा करते थे। यह व्यक्ति सच्चे परमेश्वर और यरुशलेम में उनके प्रार्थना भवन के बारे में अच्छे से जानता था। वह बहुत दूर से उनकी आराधना करने आया था (तुलना करें मत्ती २:१,२)। हालाँकि वह गैरयहूदी था, शायद यहूदी धर्म को अपना चुका था। दुनिया में ऐसे बहुत से लोग थे, जिन्होंने अपने ईश्वरों और मूर्तियों को त्यागकर इस्त्राएल के यहोवा को अपना लिया था। वे यहूदी बन गए थे (तुलना करे २:११)। अगर यह व्यक्ति ऐसा नहीं था, तो यरुशलेम तक की लम्बी यात्रा करके आराधना के लिए क्यों जा रहा था? एक और सबूत है उसके यहूदी बन जाने का - गैरयहूदियों के लिए परमेश्वर के राज्य में आने की चाभी फिलिप्पुस को नहीं, पतरस को दी गयीं थी, जैसा कि हम दस अध्याय में पढ़ते भी हैं।

२८ इसे इथ़्योपिया की रानी से अधिकार मिला हुआ था। रानी के खजाने का वह मालिक था। **वह** उपासना करने यरुशलेम
२९ आया था। वह यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए रथ मे चला जा रहा था। **तब** आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा,
३० “इस रथ के पास जाओ।” **फिलिप्पुस** उस की तरफ दौड़ा और उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुनकर
३१ कहा, “जो तुम पढ़ते हो, क्या समझ भी रहे हो,” **उसने** कहा, “जब तक मुझे कोई न बताए तो मैं कैसे समझ सकता
३२, हूँ?” तब उसने फिलिप्पुस को अपने पास बैठने के लिए बुलाया। **बाईबल** में वह जो पढ़ रहा था वह यह थाः
३३ **उस** की दिनता में उसका न्याय न हो सका और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका
३४ प्राण उठा लिया ज़ाता है । **तब** इथ़्योपियन ने फिलिप्पुस पूछा, “मुझे यह बताओ कि भविष्यद्वक्ता यहाँ किसके विषय
३५ में कह रहा है, अपने बारे में या किसी और के बारे में। **तब** फिलिप्पुस ने बोलना शुरु किया और उसी भाग से यीशु
३६ मसीह के बारे में बताया। **चलते** चलते जब वे बहुत पानी के पास आए, तब इथ़्योपियन ने कहा, “देखो, यहाँ खूब
३७ पानी है, मै बपतिस्मा क्यों नहीं ले सकता हूँ?” **फिलिप्पुस** ने उत्तर दिया “यदि तुम पूरे मन से भरोसा करते हो,
३८ तो तुम्हें बपतिस्मा दिया जा सकता है।” उसने कहा,“मुझे यकीन है कि यीशु मसीह परमेश्वर के बेटे हैं।” **तब** फिलिप्पुस
ने रथ को रोक दिए जाने का हुक्म दिया। फिलिप्पुस और इथ़्योपियन, दोनों ही पानी में गए और उसे बपतिस्मा दिया
३९ गया। **जब** वे पानी से बाहर आए, प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को कहीं और उठा ले गया।उसके बाद इथ़्योपियन ने उसे
४० कभी नहीं देखा और वह आनन्द करते हुए अपने मार्ग पर चल दिया ।**लेकिन** फिलिप्पुस अशदोद में आ गया। उस
९ क्षेत्र से गुज़रते हुए वह सभी शहरों में सिखाता रहा जब तक कि कैसरिया न पहुँच गया। **यीशु** मसीह के शिष्यों को
२ धमकी देने और जान से मारने के साथ ही शाऊल प्रधान पुरोहित के पास पहुँचा। **उसने** दमिश्क के प्रार्थना भवन
३ के लिए अनुमति पत्र माँगा। इसलिए कि यदि वह यीशु के मानने वाले स्त्री-पुरुषों को बाँधकर यरुशलेम ला सके। **वह**
४ दमिश्क के पास पहुँचा ही था, कि अचानक कि ‘उसके चारों तरफ आकाश से प्रकाश चमका। **वह** ज़मीन पर गिर
५ गया और यह आवाज़ सुनी, “शाऊल, शाऊल, तुम मुझे पीड़ा क्यों दे रहे हो,” **उसने** कहा, “आप कौन हैं स्वामी,”यीशु
६ ने कहा, “मै यीशु हूँ, जिसे तुम पीड़ा दे रहे हो। **काँपते** हुए आश्चर्य से उसने कहा, “स्वामी, आप क्या चाहते हैं

८:२८ आराधना से उसके भीतर सच्चाई की खोज खत्म नहीं हुयी।

८:२९ यह आत्मा का मतलब पवित्र आत्मा है। उसका बोलना दिखाता है कि वह एक व्यक्ति है। यूहन्ना १४:१६,१७ में नोट्स देखें। देखिए, जो लोग पवित्र आत्मा के प्रति आज्ञाकारी हैं, समर्पित हैं, उनका मार्गदर्शन वह करता है।

८:३१ ओल्ड टेस्टामॅन्ट और यीशु के दोबारा आने के बारे में उसे थोड़ा या कोई ज्ञान नहीं था। आज भी ज़रुरत है कि लोगों को सुसमाचार समझाया जाए।

८:३२,३३ यशा. ५३:७,८ के नोट्स देखें। यहाँ भी हम परमेश्वर के हाथ को देखते हैं। ओल्ड टेस्टामेन्ट में जहाँ यीशु के आने के कारण के बारे में है, उसे ही वह पढ़ रहा था।

८:३४:३८ फिलिप पवित्र आत्मा से भरा था (२:४२)। उसे प्रेरितों ने सिखाया था (२:४२)। उसे मालूम था कि यशायाह किसके बारे में कहता है। लूका २४:२६,२७,४५,४६ से तुलना करें।

८:३६-३८,२:३८ मत्ती ३:६,२८:१९ और मरकुस १६:१६ में बपतिस्मे पर नोट्स देखें।

८:३९ पवित्र आत्मा के इस काम की तुलना १ राजा १८:२१; २ राजा २:१६; यहेज ३:१४, ८:३ से करें। इस घटना में फिलिप्पुस और इथियोपियावासी को देखें, किस तरह परमेश्वर और मनुष्य के मार्गो में फर्क है (यशा ५५:८-९)। यह इथियोपियावासी यरुशलेम से आया था जहाँ प्रेरित और विश्वासी रहा करते थे। उनमें से किसी को यह मार्गदर्शन नहीं मिला कि वे उसे सिखाए। इसके बजाए यीशु उसे यह कराने के लिए सामरिया लाए और अचानक उसे उठा ले गए। लेकिन चाहे वह यहाँ था या वहाँ, चाहे फिलिप्पुस को इस्तेमाल करें या किसी और को परमेश्वर यह देखते हैं कि कौन सच्चाई का खोजी है अध्याय ९ ।

९:१ देखें ८:१,३; २२:६-११; फिलि ३:६

९:२ “मार्ग” सीरिया की राजधानी दमिश्क यरुशलेम के उत्तरी पूर्व में पुराना शहर था। मसीह का संदेश वहाँ पहुँच चुका था (तुलना करें २:५)। जहाँ कहीं मसीह की मण्डली थी, शाऊल उसे नाश करना चाहता था।

९:३ समय आ गया था, कि सृष्टिकर्ता मण्डली के सबसे बड़े दुश्मन को मण्डली का सबसे बड़ा शिक्षक बना दें। यह परमेश्वर की कृपा, दया और प्यार का एक अद्‌भुत प्रदर्शन था। १ तिमो. १:१२-१६; २तिमो. १:९। पौलसु का पूरा जीवन एक पल में बदल गया था।

९:४ मसीह के लोगों को पीड़ा देना, मसीह को पीड़ा देने के बराबर था। सच पूछा जाए तो हम जो कुछ उनके खिलाफ और उनके लिए करते हैं हम मसीह के खिलाफ और उनके लिए करते हैं। वे यीशु की देह हैं, यीशु उनका सिर हैं। (१कुरि. १२:१२, १३; इफि १:२२,२३; कुल १:१८)। यह मुमकिन नहीं है कि देह को सताया जाए और “सिर” को तकलीफ न हो। तुलना करें मत्ती १०:४०, १८:५; २५:३४:४६; लूका ६:४८; यूहना १७:२०-२३।

९:५ “आप कौन हैं स्वामी?” - पौलसु जानता था कि जो भी उससे बात कर रहा है, उसे हक है कि यह बताए, कि उसे क्या करना है। २२:१० के नोट्स देखें।

९:६ अभी अभी पौलुस ने एक सवाल पूछा था, जिसके बारे में वह २२:१० मे बतलाता है (वहाँ नोट्स देखें)। यह सवाल पौलुस की अधीनता और कहना मानने को दिखलाता है। २६:१६:१८ में पौलुस यह प्रगट करता है, कि यीशु ने उससे क्या करने के लिए कहा था।

७ कि मै करुँ," यीशु ने उससे कहा, "उठो शहर में जाओ और तुम्हें बतलाया जाएगा कि तुम्हें क्या करना चाहिए।" **जो**
लोग उसके साथ यात्रा कर रहे थे वे मुँह बन्द किए खड़े रहे। वे आवाज़ तो सुन रहे थे लेकिन कोई दिख नहीं रहा
८ था। **शाऊल** ज़मीन पर से उठा और जब उसने अपनी आँखे खोलीं, तो कुछ भी देख नहीं सकता था। उसके साथ
९ के लोग उसका हाथ पकड़कर उसे दमिश्क लाए। **वह** तीन दिन तक कुछ नहीं देख सकता था, न ही उसने उन दिनों
१० में कुछ खाया। **दमिश्क** में हनन्याह नाम का यीशु का शिष्य था। एक दर्शन में यीशु ने उससे कहा, "हनन्याह"।
११ जवाब में उसने कहा, "मै यहाँ हूँ, स्वामी" **यीशु** ने, उससे कहा, "उठो और उस सड़क पर जाओ जो 'सीधी' कहलाती
१२ है। वहाँ यहूदा के घर में तारसुस के शाऊल के बारे में पूछताछ करो। वह प्रार्थना में लगा हुआ है! **उसने** दर्शन में
हनन्याह नामक व्यक्ति को अपने ऊपर हाथ रखकर प्रार्थना करते हुए देखा है, ताकि वह फिर से देखने लगे।
१३ **तब** हनन्याह ने उत्तर दिया, "स्वामी इस व्यक्ति के बारे में मैंने बहुतों से सुना है। वह यह कि यरुशलेम के सन्तों
१४ के साथ इसने बुरा व्यवहार किया हैं। **यहाँ** पर वह प्रधान पुरोहितों के अधिकार के साथ आया है कि जो लोग आपका
१५ नाम लेते हैं, उन्हे जंजीरों से बाँधे।" **लेकिन** यीशु ने उससे कहा, "जाओ, क्योंकि वह मेरा चुना हुआ है, ताकि ग़ैर
१६ यहूदियों, राजाओं और इस्त्राएलियो के सामने मेरी गवाही दे। **मैं** उसे दिखाऊँगा कि मेरे नाम के लिए उसे कितना दुख
१७ उठाना पड़ेगा।" **हनन्याह** ने जाकर घर में प्रवेश किया और अपने हाथों को उस पर रखकर कहा, "भाई शाऊल, प्रभु
यीशु ने जो तुम्हें सड़क पर जाते समय तुम्हें दिखे थे मुझे तुम्हारे पास भेजा है ताकि तुम्हारी आँखें खुल जाएँ और तुम
१८ पवित्र आत्मा से भर जाओ।" **तुरन्त** उसकी आँखों से छिलके परत के समान कुछ गिरा। तुरन्त उसकी आँखों में
१९ रोशनी आ गयी, वह उठा और उसे बपतिस्मा दिया गया। **जब** उसने खाना खाया तो उसे ताकत मिली। तब वह उन
२० शिष्यों के साथ ठहर गया जो दमिश्क में थे। **तुरन्त** उसने प्रार्थना भवन में यह संदेश दिया कि यीशु मसीह परमेश्वर
२१ के बेटे हैं। **लेकिन** जिन्होंने उसे सुना वे आश्चर्य से भर गए और कहा, "क्या यह वही नहीं जो यरुशलेम में यीशु
के कहलाने वालों को नाश करता था। यहाँ भी वह इसीलिए आया है कि ऐसे लोगों को प्रधान पुरोहित के पास बान्ध
२२ कर ले जाए?" **लेकिन** शाऊल ताकत में और भी बढ़ता गया। वह दमिश्क में रहनेवाले यहूदियों से बहस करके सिद्ध
२३,२४ करता था कि यीशु ही मसीह हैं। **काफी** दिनों के बाद यहूदियों ने उसे मार डालने की योजना बनायी। **लेकिन** पौलुस
को इस बात की खबर लग गयी। वे दिन रात फाटक पर इस बात की तलाश में बैठे रहते थे कि पौलुस को किस तरह

९:७ देखें २२:९ ।

९:८ तेज़ रोशनी से वह अन्धा हो गया था। एक और तेज़ रोशनी थी जिससे उसके मन का अन्धेरा खतम हो गया था - २ कुरि ४:६

९:१० हनन्याह का मतलब है "यहोवा अति कृपालु है" (इब्रानी में, "हनन्याह")। वह एक यहूदी था, जिसने मसीह पर भरोसा किया था - २२:१२। उत्पत्ति १५:१ मे दर्शन पर नोट्स देखें।

९:११ जो जगह आज तुर्किस्तान है, वहीं तारतुस एक शहर था। शाऊल यहीं का निवासी था (९:३०; ११:२५, २१:३९; २२:३)। इस पद में हम देखते हैं, जो पौलुस दर्शन दिए जाने के बाद कर रहा था - वह थी स्वर्गिक पिता से बातचीत। जो कुछ उसने शुरु किया वह सब वह जीवन के अन्त तक करता रहा। यह हमारे लिए भी एक नमूना है कि कैसे और क्या प्रार्थना करें (१६:२५; २०:३६; २२:१७; इति १:१५-२३; ३:१४-२१; फिलि १:३-११; कुलु १:९-१२)।

९:१२ यह मज़े की बात है कि यरुशलेम के पास नहीं, दमिश्क के पास यीशु ने उससे मुलाकात की। यीशु ने इस घटना में प्रेरितों में से किसी को नहीं लेकिन एक साधारण विश्वासी को इस्तेमाल किया। देखें यशा ५५:८,९।

९:१३ "पवित्र लोग" इसका मतलब है जिन्हें शेष मानव जाति से यहोवा ने अपने लिए अलग कर लिया है। विश्वासियों के लिए यह एक दूसरा नाम है - रोमि १:७; आदि।

९:१५,१६ इन दो पदों में १३-२८ अध्यायों में बताए गए पौलुस के जीवन और काम का निचोड़ है। वह एक "चुना हुआ" पात्र था। देखें २६:१६-१८; गल १:१५; इफि ३:२,७,८; कुलु १:२५; १ तिमोथी १:१२; २तिमो. १:११। यीशु के लिए दुख उठाना उसके जीवन का एक भाग था। उसने उसमें खुश रहना सीखा-२तिमो. १:१२;१ थिस्स ३:३,४; कुलु १:२४; २ कुरि. ७:४; ४:१६-१८; रोमि ५:३। उसने यह जान लिया इस पृथ्वी पर इस समय के परमेश्वर के राज्य में राजा के लिए जीना एक इज़्जत की बात है - मत्ती ५:१०-१२; रोमि. ८:१७; फिलि १:२९

९:१७ इससे लगता है कि हनन्याह के हाथ रखने से पौलुस ने पवित्र आत्मा पाया। प्रेरितों के काम नामक पुस्तक में अलग-अलग तरीकों से लोगों ने पवित्र आत्मा पाया। - सीधे परमपिता से (२:१-४; १०:४४,४५) प्रेरितो के हाथ रखने से (८:१७; १९:६)। यहाँ एक मामूली आदमी के हाथ रखने से। कभी-कभी ऐसा बपतिस्मे के पहले हुआ, कभी बाद में। परमेश्वर के आत्मा ने जैसा चाहा, काम किया।कोई भी उनके काम के बारे में पहले से कुछ नहीं कह सकता। ध्यान दें, यीशु ने हनन्याह को साफ शब्दों मे आज्ञा दी कि ऐसा किया जाए। देखें, उसने शाऊल को भाई कहा। इसका मतलब भाइयों की सहभागिता में स्वीकार किया जाना।

९:१८ "बप्तिस्मा दिया" - देखें २:२८; मत्ती ३:६; मरकुस १६:१६।

९:२०-२२ दर्शन को देखकर, पवित्रात्मा पाकर पौलुस ओल्ड टेस्टामेन्ट समझा सका, जिसे गमलिएल से नहीं सीखा था (२२:३; गल १:१४) "यह नाम" - देखें ४:१७; ५:२८

९:२३-२५ देखें २ कुरि. ११:३३। यह यहूदियों की तमाम कोशिशें में से एक थी, ताकि पौलुस को रोकें (पद २९; १३:४५; १४:५,१९; १७:५,१३; १८:६; २१:२७-३१। वे दुख जो उसके जीवन का हिस्सा थे, शुरु हो चुके थे (पद १६)।

२५,२६ खतम कर डालें। **तब** शिष्यों ने रात में उसको टोकरे में रखकर दीवार से लटकाकर बाहर कर दिया । **जब** शाऊल
यरुशलेम आया, उसने कोशिश की, कि शिष्यों के झुण्ड में मिल जाए, लेकिन वे सभी उस से डरे हुए थे। उन्हें विश्वास
२७ नहीं हुआ कि पौलुस यीशु का शिष्य बन चुका है। **लेकिन** बरनबास उसे प्रेरितों के पास लाया और बताया, कि
पौलुस ने दमिश्क जाते समय सड़क पर यीशु को देखा था। यह भी कि यीशु ने उससे बातचीत की और यह कि यीशु
२८,२९ के नाम में दमिश्क में हिम्मत से संदेश दिया। **वह** उनके साथ यरुशलेम में रहा और आता जाता रहा। **यीशु** के
सम्बन्ध में वह हिम्मत से बोलता रहा। वह यूनानी बोलने वाले यहूदियों के साथ बहस करता रहा, लेकिन वे उसे मार
३०,३१ डालना चाहते थे। **जब** भाइयों को यह मालूम हुआ, वे उसे कैसरिया लाए और तारसुस को भेज दिया। **सारे** यहूदिया,
गलील और सामरिया की मण्डलियों में शान्ति बनी रही। मजबूती आती गयी और प्रभु के डर में चलने के साथ पवित्र
३२ आत्मा की शान्ति के साथ संख्या में भी बढ़ती गयी। **जब** पतरस देश के उस भाग से गुज़रा, तो वह लुद्दा में रहनेवाले
३३ सन्तों से भी मिला। **वहाँ** पर उसने एनियास नामक एक व्यक्ति को देखा, जो अपंग था और आठ साल से बिस्तर
३४ पर पड़ा हुआ था। **पतरस** ने उससे कहा, ''एनियास, यीशु मसीह तुम्हें स्वस्थ करते हैं, उठो और अपना बिस्तर ठीक
३५,३६ करो'' वह तुरन्त उठ बैठा। **वे** सभी जो लुद्दा और शारोन में थे, उसे देखकर यीशु पर विश्वास लाए। **याफा** मे तबीता
३७ अर्थात दोरकास नाम की एक शिष्या थी। यह स्त्री दूसरों की बहुत मदद किया करती थी। **उन** दिनों मे बीमार होने
३८ के बाद वह मर गयी। उसे नहलाने के बाद उन्होंने उसे ऊपर के कमरे में रखा। **लुद्दा** याफा के पास था और शिष्यों
को खबर लग गयी थी कि पतरस वहाँ हैं। इसलिए उन्होंने वहाँ दो व्यक्तियों को भेजा ताकि पतरस बिना देरी किए
३९ आ जाए। **पतरस** उठा और उनके साथ चल पड़ा। जब वह वहाँ पहुँचा, वे उसे ऊपरी कमरे में ले गए। सारी विधवाएँ
४० उसके पास खड़ी रो रही थी। अपने जीवनकाल में उसने जो कपड़े सिले थे, वे पतरस को दिखा रही थी। **लेकिन**
पतरस ने उन सबको बाहर कर दिया, घुटने के बल आकर, प्रार्थना की। उस शव की तरफ देखकर कहा, तबीता, उठो।''
४१ उसने अपनी आँखे खोलीं और जब पतरस को देखा, तो बैठ गयी। **पतरस** ने अपने हाथें को उसकी तरफ बढ़ा कर
उसे उठा खड़ा किया। उसने सन्तों और विधवाओं को बुलाया और उसे जीवित उनके हाथों मे सुपुर्द कर दिया।
४२,४३ **यह** बात सारे याफा में फैल गयी और बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया। **याफा** में शिमोन नामक एक चमड़े का काम

९:२६ गल १:१५-१६। उन्होंने पौलुस को तीन साल तक नहीं देखा था। सिर्फ उसके बारे में अफवाह सुनी थी। यह डर स्वाभाविक था।

९:२७ अपने नाम के मुताबिक उसकी जिन्दगी थी ४:३६ ११:२२-२४ भी देखिए) ऐसा लगता है कि यरुशलेम में दो ही जन थे जिन्हें प्रेरित कहा जाता था (गल १:१८-१९ लेकिन यह संभव है कि गलातियों में पौलुस किसी दूसरे समय की बात कर रहा था)

९:२८ हिम्मत, पवित्र आत्मा से भरे लोगों का एक निशान है (४:१३,३१)

९:२९ पद २३

९:३० पद ११

९:३१ यहूदी अगुवों ने जान लिया था कि सताव मण्डली और उसकी गवाही को रोक नहीं सकता। उन्हें आश्चर्य हुआ होगा जब प्रधान सताने वाला खुद यीशु का शिष्य हो गया। उत्पत्ति २०:११; अय्यूब २८:२८, भजन ३४:११-१४; १११:१०; नीति १:७ के नोट्स देखें।

९:३२ जोप्पा (याफा) के पास यरुशलेम के उत्तर पश्चिम में ४० कि.मी. दूर लुद्दा शहर था।

९:३४ उसने यह नहीं कहा, शिमोन पतरस तुम्हें ठीक करता है। देखें ३:६,१२

९:३५ आश्चर्यकर्म विश्वास नहीं पैदा कर सकते (लूका १६:३१)। परमेश्वर लोगों को कायल करने और अपनी उपस्थिति का एहसास कराने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। आश्चर्यकर्म पर मत्ती ८:१ और यूहन्ना २:११ में नोट्स देखें।

९:३६ यरुशलेम से ५५ किमी याफा, भूमध्यसागर में एक बन्दरगाह था। तबीता शब्द अरामी भाषा का है, दोरकास यूनानी भाषा का । उन दोनों का मतलब है ''चरागाह''। हर एक यीशु के मानने वाले को गरीबों के लिए जो होना चाहिए, वही वह था। बहुत कम लोग हैं जो उसकी तरह का जीवन जीते हैं। गरीबों की मदद के बारे में गल २:१०; मत्ती १९:२१; २ कुरि. ९:९ देखें।

९:३८ ऐसा लगता है कि उन्होंने यह आशा की थी कि पतरस दोरकास को जिलाएगा।

९:४०,४१ मरकुस ५:२१-२४; ३५-४३; यूहन्ना १४:१२,१३। प्रेरितों के काम में दो ऐसी घटनाओं में से एक यह है। दूसरी २०:७-१२ में देखिए। हालाँकि यीशु ने बहुत कम इस तरह के काम किए, लेकिन उनके लिए दूसरे अजीब कामों और मरे हुए को जिलाने में कोई फर्क नहीं था।

९:४२ उन्होंने जान लिया कि, यीशु ने मरी हुयी दोरकास को जिलाया था पतरस ने नहीं।

९:४३ यहूदी शिक्षक चमड़े की रंगाई करने वालों को गंदा व्यापार समझते थे लेकिन इसका असर पतरस पर नहीं पड़ा। देखें ३:१२।

१०:१ सात पदों में लूका दोरकास के जिलाए जाने का वर्णन करता है। वही कुरनेलियुस और उसके परिवार की बातों के लिए ज्यादा जगह लेता है- १०:१ - ११-१८ (पैंसठ पद)। इससे मालूम होता है कि जीवन का बदलाव कितना ज़रुरी है। यह पहला समय था जबकि कोई प्रेरित, गैर यहूदियों तक खुशखबरी को ले गया था (पद ४५ सामरियों को पूरा यहूदी नहीं समझा जाता था)। यह पतरस था जिसने राज्य की चाभियों का इस्तेमाल तीसरी बार किया (मत्ती १६:१९)। कैसरिया भूमध्यसागर में एक बन्दरगाह था। यह यरुशलेम के उत्तर पश्चिम में लगभग १०० किमी. दूरी पर था। इसका नाम ऑगुस्तुस कैसर नामक रोम के राजा के नाम पर पड़ा था (लूका २:१)। कुरनेलियुस १०० सैनिकों के ऊपर अधिकारी था।

१० करने वाले के यहाँ वह बहुत दिन तक रहा। **कैसरिया** में कुरनेलियुस नाम का एक व्यक्ति था। वह एक इटली की रेजिमेण्ट
२ का प्रधान था **वह** एक भला मनुष्य और अपने कुटुम्ब सहित परमेश्वर का आदर सम्मान करने वाला था। वह गरीबों की
३ सहायता करता था। वह निरन्तर परमेश्वर के साथ सहभागिता रखता था। **दोपहर** के तीन बजे उसने एक दर्शन में
४ एक स्वर्गदूत को आकर यह कहते हुए सुना, ''कुरनेलियुस'' **उसको** देखते ही वह डर गया और कहा, ''यह क्या है
स्वामी?'' उसने जवाब में कहा, '' तुम्हारी प्रार्थनाएँ और भलाई के काम परमेश्वर के सामने एक यादगार के रुप में पहुँचे
५,६ हैं। **अब** याफा में कुछ लोगों को भेजकर शिमोन को जो पतरस भी कहलाता है, बुलवा लो। **वह** समुद्र तट पर रहने वाले
७ चमड़े का रोज़गार करने वाले शिमोन के यहाँ मेहमान है। तुम्हें करना क्या है, वही तुम्हें बताएगा।'' **जब** कुरनेलियुस सें
बातचीत करनेवाला स्वर्गदूत चला गया, उसने अपने घर के दो नौकरों और एक ईमानदार सैनिक को जो उसकी सेवा करने
८,९ वालो में से थे, बुलाया। **सभी** बातें उन्हें बताकर उसने उन्हें याफा भेज दिया। **अगले** दिन जब वे चलते-चलते शहर के
१० नज़दीक पहुँचने ही वाले थे, दोपहर लगभग बारह बजे, पतरस घर की छत पर प्रार्थना करने गया हुआ था। **उसे** बहुत
ज़ोर से भूख लगी और वह कुछ खाना चाहा। लेकिन जब वे खाना बना ही रहे थे, वह बेहोश सा हो गया।
११,१२ **आकाश** खुल गया और उसने एक बड़ी चादर पृथ्वी पर उसकी तरफ उतरती हुयी देखी। **इस** चादर में इस ज़मीन पर
१३ रेंगनेवाले चार पैर के प्राणी, जंगली जानवर और उड़नेवाले पक्षी थे। **तभी** एक आवाज़ आयी, ''पतरस उठो, मारो १४
और खाओ।'' **लेकिन** पतरस बोला, ऐसा नहीं हो सकता स्वामी क्योंकि मैंने ऐसे कोई चीज़ नही खायी, जो अशुद्ध
१५ या अपवित्र है।'' **दूसरी** बार उसने फिर से आवाज़ सुनी, ''जिसको परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध न कहो।''
१६,१७ **ऐसा** तीन बार हुआ और वह चादर फिर से आकाश में उठा ली गयी। **जब** पतरस सोच ही रहा था कि इस दर्शन का
मतलब क्या हो सकता है, तभी कुरनेलियुस द्वारा भेजे गए लोग शिमोन के घर का पता पूछते हुए दरवाज़े के साम्हने
१८,१९ खड़े हुए थे। **उसने** वहाँ पूछा कि क्या शिमोन जो पतरस भी कहलाता, वहाँ है। **जब** पतरस उस दर्शन के बारे में
२० सोच रहा था, पवित्र आत्मा ने कहा, ''देखो, तीन आदमी तुमसे मिलना चाहते हैं। **इसलिए** उठो और नीचे जाओ। बिना
२१ शक किए उनके साथ जाओ, क्योंकि उनको मैंने ही भेजा है।'' **तब** पतरस उन लोगों से मिलने के लिए उतरा जिन्हें
२२ कुरनेलियुस ने भेजा था। उसने कहा, ''देखो,''मैं ही हूँ, जिसकी तलाश में तुम हो। तुम यहाँ क्यों आए हो'' **तब** उन
लोगों ने कहा, ''सूबेदार कुरनेलियुस ने जो धर्मी व्यक्ति है और परमेश्वर की इज्ज़त करता है, यहूदियों के बीच उसका
अच्छा नाम है, और स्वर्गदूत के द्वारा परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी कि तुम्हें अपने घर में बुलाकर तुम्हारी बातें सुने।''

१०:२ यह साफ है कि वह रोम के तमाम ईश्वरों को नहीं मानता था। कहीं से तो उसे सच्चे सृष्टि बनाने वाले के बारे में मालूम पड़ गया था। वह एक धार्मिक इंसान था। अच्छे काम किया करता था। लेकिन उसने मुक्ति नहीं पायी थी (११:१३,१४)। इस घटना से हम सीखते हैं कि मुक्ति, धर्म, सच्चाई अच्छे कामों, प्रार्थना आदि से नहीं है। यह मात्र यीशु पर विश्वास करने से है (१६:३१; यूहन्ना १:१२; ३:१६-३६; इफि २:८-९; तीतुस ३:४-७)।

१०:३ उत्पत्ति १५:१; १६:७ मे दर्शन और स्वर्गदूतों पर नोट्स देखें।

१०:४-६ स्वर्गिक पिता का काम कुरनेलियुस में जारी था ताकि वह शुभसंदेश को सुनने के लिए तैयार हो। उसकी प्रार्थनाओं और अच्छे कामों से परमेश्वर जानते थे कि वह ईमानदार तो है ही, साथ ही उसे सच्चाई की ज़रुरत भी है। इसलिए परमेश्वर खास निर्देश भी देते हैं ताकि उसकी वह भूख जो सत्य के लिए थी मिटायी जा सके। जब लोग दिए गए ज्ञान के हिसाब से जीते हैं, तो परमेश्वर उन्हें और देते हैं ताकि वे मसीह के विषय पूरी सच्चाई को जान सकें। जो लोग दिए गए ज्ञान को तुच्छ समझते हैं वे और ज़्यादा अँधेरे मे गिरते जाते हैं - यूहन्ना ३:१६-२१; ८:१२; ६:३६।

१०:९-१६ परमेश्वर ने कुरनेलियुस को तैयार किया था कि वह सच्चाई को स्वीकार करे। अब वह अपने संदेश देने वाले को भी तैयार करते हैं। इस दुनिया में परमेश्वर के न रुकने वाले काम में इन दोनों बातों की मुख्य जगह है। जिन लोगों का हिस्सा इसमें है, वे खुश हैं।

१०:१३,१४ एक यहूदी होने के नाते ओल्ड टेस्टामेन्ट में शुद्ध और अशुद्ध पशुओं के बारे में पतरस बहुत सतर्क था। लैव्य. ११ देखें। वह न ही समझा सका, न ही यह स्वीकार कर सका, कि कैसे नियमशास्त्र की बात टाले। वह पवित्रता से सम्पन्न पुराना प्रेरित था। फिर भी वह यीशु को नहीं मे जवाब देता है। मत्ती १६:२२; यूहन्ना १३:८ से तुलना करें।

१०:१५ मत्ती १५:११; मरकुस ७:१८,१९ और रोमि ६:१४; ७:४ के नोट्स भी।

१०:१६ ''तीन बार'' - यूहन्ना १३:३८; २१:१५-१७ से तुलना करें।

१०:१७,१८ परमेश्वर का समय हमेशा सिद्ध है।

१०:१९ परमेश्वर के आत्मा के बोलने के सम्बन्ध में देखें ८:२९ ।

१०:२० पवित्रात्मा को यह मालूम था कि उन गैर यहूदियों के साथ जाने में पतरस आनाकानी करेगा। इसलिए पवित्रात्मा ने पतरस से कहा कि वह हिचकिचाए नहीं। यहूदी गैरयहूदियों को अशुद्ध समझते थे, जैसे कुछ वस्तुओं को अशुद्ध समझा करते थे (लैव्य ११:१)। दर्शन का आत्मिक मतलब पतरस समझ गया, कि उसका ऐसा रवैया अच्छा नहीं है (पद २८)। मण्डली में किसी वर्ग, जाति या देश के लोगों के प्रति पूर्वधारणा पवित्रात्मा स्वीकार नहीं करता (६:१ मे नोट्स देखें)।

२३,२४ **तब** उसने उन्हें भीतर बुलाकर उनकी आवभगत की । **अगले** दिन पतरस उनके साथ चल पड़ा। याफा से कुछ भाई
लोग भी उसके साथ हो लिए। अगले दिन वे कैसरिया पहुँचे। कुरनेलियुस अपने रिश्तेदारों और नज़दीकी दोस्तों के साथ
२५ इन्तज़ार कर रहा था। **जैसे** ही पतरस भीतर प्रवेश करने पर था इज्ज़त दिखाने के लिए कुरनेलियुस औंधे मुँह पतरस
२६,२७ के सामने लेट गया। **लेकिन** पतरस ने यह कहकर उसे उठाया, ''उठो, खड़े हो। मै तो एक इन्सान हूँ।'' **उनसे** बातचीत
२८ करते हुए वह भीतर गया और बहुत से लोगों को बैठे हुए पाया। **उसने** उनसे कहा, ''तुम यह जानते हो कि एक यहूदी
के लिए किसी दूसरी जाति के व्यक्ति के साथ मिलना जुलना या उसे भेंट देना जायज़ नहीं है। लेकिन यहोवा परमेश्वर
२९ ने मुझे दिखाया है कि मै किसी भी व्यक्ति को अपवित्र या अशुद्ध नहीं कहूँ। **इसलिए** बिना किसी शिकायत और देरी
३० किए बिना मैं यहाँ आया हूँ। इसलिए मेरा सवाल यह है कि मुझे लोगों को भेजकर क्यों बुलवाया गया है?'' **कुरनेलियुस**
बोला, ''चार दिन से मैं अब तक उपवास में हूँ। तीन बजे मैं अपने घर में प्रार्थना कर रहा था और देखो चमकते कपड़े
३१ पहने एक व्यक्ति मेरे सामने आ खड़ा हुआ। **उसने** कहा, ''कुरनेलियुस, तुम्हारी प्रार्थना सुनी गयी है और परमेश्वर
३२ के सामने तुम्हारे अच्छे कामों को याद किया जाता है। **इसलिए** याफा मे शिमोन को जो पतरस कहलाता है, बुला लो।
३३ वह समुद्र तट पर रहनेवाले चमड़े का व्यापार करने वाले, शिमोन के यहाँ मेहमान है। **जब** वह आएगा, तो तुम्हें
सिखाएगा।'' इसलिए तुरन्त मैनें तुम्हारे पास संदेश भेजा। अच्छा हुआ कि तुम आ गए हो। इसलिए हम सभी परमेश्वर
३४ के सामने उन सब बातों को सुनने के लिए बैठे हैं, जिन्हें परमेश्वर ने कहने की आज्ञा दी है'' **तब** पतरस ने अपना
३५ मुँह खोला और कहा, ''**सच** यह है कि परमेश्वर किसी की तरफदारी नहीं करते हैं। हर एक राष्ट्र में वह उन सभी
३६ को अपनाते हैं और जो उनकी इज्जत करते और खरी चाल चलते है वे उसे भाते हैं। **जो** संदेश परमेश्वर ने इस्त्राएलियों
३७ को दिया था वह यह कि यीशु जो सब कुछ है, उन्हीं के द्वारा परमेश्वर के सम्बन्ध सही हो सकता है। **मैं** कहता हूँ कि
यह संदेश तुम जानते हो। सारे यहूदिया में यह सुनाया गया था। जिस बपतिस्में के बारे में यूहन्ना ने सिखाया और जो
३८ संदेश गलील से शुरु हुआ था। **किस** तरह से परमेश्वर ने यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और अधिकार से अभिषेक किया।
किस तरह से वह भलाई करता और उन सभी को स्वस्थ करते गए जो शैतान के दबाव मे थे, क्योंकि परमेश्वर उन
३९ के साथ थे, ''**यहूदियों** की भूमि और यरुशलेम दोनों ही में जो कुछ उन्होंने किया, उस सभी के हम गवाह हैं। उन्होंने
४० उसे क्रूस पर लटका कर मार डाला। **परमेश्वर** ने उसे तीसरे दिन ज़िन्दा कर दिया और खुले आम दिखा डाला ।
४१ **सभी** को नहीं लेकिन उन गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहले ही से चुन लिया था। वह यह कि हम जिन्होंने उनके

१०:२३ इसका मतलब हुआ कि जो परमेश्वर सिखाना चाह रहे थे, उसने सीख लिया। यहूदी सोचते थे कि गैरयहूदियों के साथ उठने बैठने से वे अशुद्ध हो जाएंगे (पद २८; ११:२,३)। लेकिन कैसरिया से पचास कि.मी. की यात्रा की वजह से लोगों को आराम की ज़रुरत थी और पतरस ने उन्हें अपनाया भी।

१०:२४ उसने यह महसूस किया कि पतरस खास मुद्दों के बारे में बताना चाहता था। यह भी कि जो उससे प्यार करते थे, वे उसकी बात सुनें (पद ३३)।

१०:२५,२६ ''पतरस ने '' कुरनेलियुस यह नहीं जानता था कि किसी इन्सान को ऐसी इज्जत देना ठीक नहीं था। पतरस यह जानता था इसलिए उसके इस सम्मान को ठुकरा दिया-ऐसा ही हर एक मसीह के सेवक को करना चाहिए। हममें से किसी को किसी के सामने औंधे मुँह गिर कर दण्डवत नहीं करना चाहिए, चाहे वह व्यक्ति कितना बड़ा क्यों न हो। सिर्फ सृष्टिकर्ता ही इस लायक हैं। तुलना कीजिए प्रका २२:८,९

१०:२८,२९ पद १५,२० पुरानी बातें खत्म हो रही हैं। जिन यहूदियों ने मसीह को अपनाया था, उन्हें यह नहीं समझना चाहिए कि दूसरे लोगों से उन्हें कुछ लेना देना नहीं।

१०:३४,३५ ''पक्षपात'' देखें रोमि २:११ इफि ६:९; कुल ३:२५; याकूब २:१; १ पत १:१७। '' '' पतरस यह नहीं सिखा रहा था कि कामों से मुक्ति मिलती है। उसे और प्रेरितों को मालूम था कि स्वर्गिक पिता की शर्तहीन कृपा और ईमान लाने से मुक्ति है (देखें १५:११ में)। उसे यह भी मालूम था कि सर्वशक्तिमान किसी को भी कहीं भी स्वीकार करते हैं अगर व्यक्ति सच्चाई को अपनाता है। ऐसे लोगों को वह और बातें भी सिखाते हैं। (४-६)। जब एक इन्सान यहोवा परमेश्वर के लिए एक कदम लेता है, तो वह स्वयं अपना रुख उसकी तरफ करते हैं। (लूका १५:१७-२० याकूब ४:८ देखें। ऐसा व्यक्ति यह भी पाएगा कि परमेश्वर ही ने उसकी मदद की, कि वह पहला कदम ले।

१०:३६ ''शांति '' लूका १:७९; २:१४; यूहन्ना १४:२७; १६:३३; २ कुरि. ५:१८-२१ ''सब का प्रभु '' यीशु मसीह पूरा मानव जाति के ऊपर प्रधान है - लेकिन बहुत कम ऐसे लोग हैं जो यह मानते और कबूल करते हैं (२:३६; रोमि १०:९; १:कुरि. ८:६; इफि १:२०-२३; फिलि २:९-११)।

१०:३७ मत्ती ३:१-६।

१०:३८ मत्ती ३:१६,१७; ४:२३,२४; ९:३५; लूका ४:१६-२१।

१०:३९ प्रेरित १:८ पतरस क्रूस की जगह पेड़ शब्द का इस्तेमाल करता है। (५:३०)

१०:४० २:३२; ३:१५ देखें।

४२ जी उठने के बाद उनके साथ खाया और पिया था। **उन्होंने** हमें यह हुक्म दिया कि हम लोगों को संदेश दें और गवाही
४३ दें, कि वही हैं,जिन्हें जिन्दों और मुर्दों का इन्साफ करने के लिए परमेश्वर ने अभिषेक किया। **सभी** भविष्यद्वक्ता उनके
४४ बारे में गवाही देते हैं, कि जो कोई उन (यीशु) पर भरोसा रखेगा, उनके नाम से गुनाहों की माफी पाएगा।'' **जब**
पतरस यह कह ही रहा था, पवित्र आत्मा उन सभी पर उतर आया, जिन्होंने संदेश सुना वे, सभी विश्वासी जो
४५ पतरस के साथ आए थे **और** खतनावाले थे, आश्चर्य से भर गए; क्योंकि पवित्र आत्मा ग़ैर यहूदियों पर भी उण्डेल
४६,४७ दिया गया था। **क्योंकि** उन्होंने गैरयहूदियों को अन्य भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना **तब** पतरस ने कहा,
४८ ''जिन लोगों ने हमारी तरह पवित्रात्मा पाया है, उनके बपतिस्मा लेने में कोई रोक लगा सकता है?'' **तब** उसने हुकुम
दिया कि प्रभु (परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से उन्हें बपतिस्मा दिया जाए। उन्होंने उससे बिनती की कि
११ कुछ और दिन तक वह उनके साथ रहे। **यहूदिया** में रहनेवाले प्रेरितों और भाइयों ने सुना कि गैरयहूदियों ने भी
२ परमेश्वर के वचन को अपना लिया है। **जब** पतरस यरुशलेम आया तो खतना किए हुए विश्वासियों ने उसकी खिलाफत
३,४ यह कहते हुए की, **कि** ''तुम खतनारहित लोगों में जा मिले और उनके साथ खाया-पीया।'' **लेकिन** पतरस ने शुरुआत
५ से लेकर सब कुछ तरतीब से बता दिया। **उसने** कहा, ''मैं याफा नाम के शहर में प्रार्थना कर रहा था। तभी मैं
बेसुध हो गया और एक दर्शन देखा। चादर के समान कुछ चीज चारों कोनों से आसमान/स्वर्ग से लटकती हुयी मेरे
६ पास आयी। **जब** मैंने ध्यान से देखा तो पाया कि उसमें पृथ्वी के चार पैरों वाले पशु, जंगली पशु, रेंगनेवाले जन्तु और
७,८ आकाश के पक्षी थे। **मैंने** एक आवाज को यह कहते हुए सुना, उठो, पतरस, मारो और खाओ।' ''**लेकिन** मैंने कहा,
९ नहीं स्वामी ऐसा नही होगा, इसलिए कि कोई भी अपवित्र या अशुद्ध चीज़ मेरे मुँह में आज तक नहीं गयी है। ''**लेकिन**
१० आसमान से फिर एक आवाज़ आयी, 'जिसे परमेश्वर ने पवित्र किया है उसे अपवित्र मत कहो। **ऐसा** तीन बार हुआ
११ और फिर वह सब कुछ आसमान में उठा लिया गया ''**और** देखो, उसी पल कैसरिया से तीन आदमी मुझसे मिलने
१२,१३ वहाँ आ पहुँचे। **तब** पवित्र आत्मा ने मुझसे कहा कि बिना शक किए हुए मैं उनके साथ जाऊँ। **उसने** हमें बताया कि
कैसे उसने एक स्वर्गदूत को अपने घर में देखा, जिसने खड़े-खड़े कहा, याफा में लोगों को भेजकर शिमोन को जो पतरस
१४,१५ कहलाता है, बुलवा लो। **वह** तुम्हें वह सब बतलाएगा, जिससे तुम और तुम्हारा कुटुम्ब मुक्ति पा जाएगा।'' ''**जैसे** ही
१६ मैंने अपना मुँह बोलने के लिए खोला, पवित्रात्मा उन पर उसी तरह उतरा, जैसे शुरु मे हम पर उतरा था। **तब** वही
बात मुझे याद आयीः 'यूहन्ना ने तुम्हें पानी से बपतिस्मा दिया था, लेकिन तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा मिलेगा।

१०:४१ यूहन्ना १५:२७; २०:१६,२०; २१:६-१४; १ कुरि.१५:५-८।
''खाया'' - लूका २४:४२,४३ ।

१०:४२ मत्ती २८:१८-२०,मरकुस १६:१५ ।
"न्याय"प्रेरितों १७:३१;यूहन्ना ५:,२२,२३,२७;मत्ती २५:३१-३३ ।

१०:४३ लूका २४:२६,२७,४५-४८"पापों की क्षमा" मत्ती ६:१२; ६:५-७;१२:३१;१८:२३-२५;इफि.१:७,१ यूहन्ना१:६,यशा५५:७ ।

१०:४५ ''विश्वासी .....खतनावाले वे यहूदी जो यीशु को मानने लगे थे।
"पवित्र आत्मा का दान"२:३८;५:३२

१०:४६ "भाँति भाँति भाषा" या "भाषा"
इसी सबूत से यहूदी मसीहियो ने जान लिया कि गैरयहुदियों को पवित्रआत्मा मिल गया है।यह बाहरी निशान इस बात का सबूत था कि स्वर्गिक पिता ने यहूदियों के अलावा दूसरे लोंगो पर भी आत्मा उन्डेला है- इसके पहले यह घटना कभी नही घटी थी।इससे परमेश्वर चाहते थे कि यहूदी विश्वासी लोग दूसरे विश्वासी लोगों को अपनाएँ।यह घटना २:४-११ की तरह थी।कुरनेलियुस और उसके रिश्तेदार रोमी थे उनकी भाषा लैटिन थी।उन्हे अरामी,इब्रानी या यूनानी भाषा के कुछ शब्द आते होंगे।लेकिन किसी भी भाषा को अच्छे से बोलना दूसरो को कायल करने के लिए अच्छा सबूत था।

१०:४७ ध्यान देने वाली बात यह है कि बिना पानी का बपतिस्मा पाए,बिना किसी के हाथ रखे ये लोग अन्य भाषा बोलने लगे थे।८:१७ में नोटस देखें ।

१०:४८ यीशु के नाम मे बपतिस्मे पर नोटस २:३८;१६:५ में देखें।

११:२ वे यहूदी जिन्होंने खतने की विधि को पूरा किया था और यीशु के बन गए थें।

११:३ १०:२३,२८ को देखें। यह देखकर कि गैरयहूदी मसीह के पास आ रहे है, खुश होने के बजाए इन्होंने गैरयहूदियों के बदलाव में परमेश्वर के इस्तेमाल किए गए तरीके की बुराई की। परमेश्वर के सेवकों की सेवा में खुश होने के बजाए उनके उनकी शिकायत करना आज एक आम बात है। फिलि मे १:१५-१८ मे पौलुस के रवैये पर ध्यान दें।

११:१४ १०:२ मे नोट्स देखें। उनका सारा बाहर का धार्मिकपन और प्रार्थना मुक्ति के लिए काफी नहीं था।

११:१५ १०:४४; २:४ देखें ।

११:१६ १:५ देखें।

११:१७ १०:४५; २:३८,३९ को देखें।
''जीवन'' इसका मतलब है आत्मिक और 'हमेशा की ज़िन्दगी' - यूहन्ना ३:१६। ध्यान दें, यह परमेश्वर है जो बदलाव की चाह देते हैं। ५:३१, २तिमो२:२५ ।

१७ **इसलिए** जब परमेश्वर ने विश्वास करनेवाली का वही वरदान दिया, जो हमें दिया, तो मै कौन हूँ कि परमेश्वर के
१८ विरोध में खड़ा होऊँ?'' **जब** उन्होंने ये बातें सुनी, तो खामोश हो गए और यह कहते हुए परमेश्वर की बड़ाई की,
१६ ''परमेश्वर ने गैरयहूदियों को भी जीवन के लिए मनबदलाव दिया'' **लोग** स्तिफनुस के समय सताव की वजह से यात्रा
२० करते-करते फीनीके, साइप्रस और अन्ताकिया तक सिर्फ यहूदियों को वचन सुनाते गए। **उनमें** से कुछ लोग साइप्रस
२१ और कुरेनी के थे। जब वे अन्ताकिया आए, '' तब उन्होंने यूनानी लोगों को यीशु के बारे में बताया। **परमेश्वर** का
२२ हाथ उनके साथ था। बहुत से लोगों ने विश्वास किया और यीशु को अपना लिया। **तब** यरुशलेम की मण्डली के कानों
२३ तक यह खबर पहुँची। उन्होंने बरनबास को अन्ताकिया भेजा। **जब** आकर उसने परमेश्वर की असीम कृपा से देखा
२४ तो उसे खुशी हुयी। उसने उन सभी को दिलासा दिलाया कि से उन्हें यीशु की समीपता में रहना चाहिए। **बरनबास**
२५ एक भला पवित्रात्मा और विश्वास से भरा व्यक्ति था और बड़ी संख्या मे लोग यीशु के शिष्य बन गए। **तब** बरनबास
२६ शाऊल की तलाश मे तारसुस की ओर चल दिया **जब** शाऊल उसे मिल गया, तो वह उसे अन्ताकिया लाया। पूरे एक
साल तक वे मण्डली के साथ मिलते रहे और बहुत से लोगों को सिखाते रहे। अन्ताकिया में पहली बार लोगों ने शिष्यों
२७,२८ को मसीही कहा। **उन्हीं** दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से अन्तकिया आए । **उनमें** से एक अगबुस नामक व्यक्ति
ने खड़े होकर पवित्रात्मा की प्रेरणा से कहा कि सारी दुनिया में एक ज़बरदस्त अकाल पड़ेगा। क्लॉडियस सीज़र के
२६ समय में ऐसा हुआ भी। **तब** अपनी-अपनी योग्यता के मुताबिक हर एक ने यहूदिया के भाइयों को मदद पहुचाने की
३०, **१२** ठानी। **उन्होंने** ऐसा किया भी, बरनबास के और शाऊल के हाथों उन्होंने अगुवों तक मदद पहुँचायी थी। **उसी** समय
२ हेरोदेस राजा ने मण्डली के कुछ लोगों को परेशान करने के लिए अपने हाथ को बढ़ाया। **उसने** यूहन्ना के भाई याकूब
३ को तलवार से मरवा डाला। **क्योंकि** उसके ऐसा करने से यहूदी खुश हुए, उसने पतरस के साथ भी यही करना चाहा।

११:१६ ८:१,४ देखें। यह फिनीशिया भूमध्यसागर के तट पर इस्त्राएल के उत्तर में था। यही पर सिदोन और टायर नामक शहर थे। सीरिया के तट से २५ किमी. दूर अन्ताकिया एक बड़ा शहर था (रोम और अलेक्ज़ेन्ड्रिया के बाद रोम सम्राज्य में यह तीसरा बड़ा शहर था)। पहली शताब्दी में यह मसीही मत का एक खास केन्द्र बन गया था। सिर्फ यहूदियों को इन विश्वासियों ने वचन दिया था। इसकी वजह थी उनकी नासमझी, कि सृष्टिकर्ता ने दूसरे लोगों के लिए भी दरवाज़ा खोल दिया है।

११:२० यह नहीं लिखा है कि ऐसा कब हुआ या इन लोगों ने यूनानी लोगों में वचन क्यों सुनाना चाहा। ऐसा लगता है कि १० वें अध्याय की घटनाओं के बाद ही ऐसा हुआ।

११:२१ संदेश वाहकों की भी यही ज़रुरत है - परमेश्वर की शक्ति जो उनके लिए काम करती है।

११:२२ ''बरनबास'' - ४:३६; ६:२७

११:२३ ''असीम और शर्तहीन कृपा''को देखने का मतलब क्या है? उसने यह देखा कि स्वर्गिक पिता की कृपा से क्या पैदा हुआ, यानि कि आत्मिक फल। यूहन्ना १५:१-६ देखें। बरनबास के पास दूसरों की हिम्मत बढ़ाने का वरदान था (तुलना करें रोमि १२:६-८)

११:२४ यह बताया गया हैं कि हर एक बाइबल सिखाने और इसमे से बताने वाले को कैसा होना चाहिए (हर एक विश्वासी को भी)। न्यू टेस्टामेन्ट में जिन लोगों को 'अच्छा' कहा गया, उनमें से बरनबास एक है (दूसरा लूका २३:५०)। इसका मतलब यह नहीं है कि और कोई अच्छा नहीं था या है। मत्ती ५:४५; ७:१७,१८; १२:३५; लूका ८:१५ रोमि १५:१४; १ पत २:१८। लोगों की अच्छाई उनके स्वभाव की वजह से नहीं है (मत्ती ७:११; रोमि ७:१८)। सिर्फ यहोवा परमेश्वर ही अच्छे हैं (मत्ती १६:१७)। वही दूसरों को अच्छा बना सकते हैं (गल ५:२२; इफि ५:६) पवित्रात्मा से भरपूर होने के बारे में देखें १:५; २:४; इफि ५:१८। पवित्रात्मा की भरपूरी से विश्वास की मज़बूती, आत्मिक सफलता और सेवा मे जीत है।

११:२५ ६:३० ।

११:२६ 'मण्डली'' पर नोट्स के लिए देखें ५:११ और १६:१८ में। बाहरी लोगों ने सबसे पहले विश्वासियों को ''मसीही'' कहा। यह स्वभाविक भी था। उन्हें लगा कि ''मसीह'' नाम है देखें मत्ती १:१, और ''मसीही'', बना दिया। जिसका मतलब है वे लोग जो किसी तरह से मसीह से जुड़े हैं। प्रेरितों के काम में मसीह के लोगों को शिष्य (६:१) या ''सन्त'' या ''भाई-बहन'' (६:३०), था ''विश्वासी'' १०:४५ कहा गया है। सच पूछें तो पूरी बाईबल में इस जगह को छोडकर, सिर्फ अग्रिप्पा (२६:२८) और पतरस ''मसीही'' 'शब्द का इस्तेमाल करते हैं १ पत ४:१६। शायद पतरस ने इस शब्द का इस्तेमाल इसलिए किया क्योंकि दूसरों ने ऐसा किया था। इसलिए नहीं क्योंकि यह रीति थी।

११:२७ उत्पत्ति २०:७ में भविष्यद्वक्ताओं पर नोट्स और पद देखें।

११:२८ सृष्टिकर्ता यहोवा ने अगबुस को आनेवाली बातें बतला दी। २१:१०,११ भी देखें। ४१-५४ ए.डी में क्लौदियुस राजा था।

११:२६ यह बड़ी बात है जब मसीही लोग ''शिष्य'' हैं नाम के मसीही नहीं। उनके अच्छे कामों की तुलना २ कुरि. ८:१-५ से कीजिए।

११:३० उन्होंने एक निर्णय को रज़ामन्दी देने से ज़्यादा किया। उन्होंने वैसा किया तुलना करें २ कुरि. ८:१०,११; याकूब २:१५; १ यूहन्ना ३:१७,१८; मत्ती २५:३४-४६

१२:१ यह हेरोदेस उस हेरोद का पोता है, जिसका वर्णन मत्ती २:१ में किया गया है। दूसरे हेरोदेस राजाओं की तरह यह भी दुष्ट था।

१२:२,३ याकूब शुरु के बारहों में से एक प्रेरित था। प्रेरितों के लिए हेरोदेस के व्यवहार के बारे में कोई कारण नहीं दिया गया है। जो सृजनहार सबसे श्रेष्ठ हैं, उन्हीं की गुप्त योजनाओं में इन सब का मतलब छिपा हुआ है। हेरोदेस एदोमी था (एसाऊ का वशंज - उत्पत्ति २५:२६,३०)। उसने यहूदियों को खुश करना चाहा क्योंकि वह उनके ऊपर सफल शासन को चाहता था। देखा जाए तो सभी यहूदी हेरोदेस राजाओं से नफरत करते थे। बिना खमीरी रोटी के त्यौहार पर नोट्स लैव्य २३:४-८ में देखिए।

४ ये अखमीरी रोटी के दिन थे। **जब** उसने उसे हिरासत मे ले लिया तब उसे जेल में डाल दिया और सैनिकों के चार
५ झुण्डों की पहरेदारी में रखा, ऐसा इसलिए ताकि फसल के त्यौहार के बाद उन्हें लोगों के सामने ले आए। **इसलिए** पतरस
६ जेल मे रखा गया, लेकिन मण्डली उसके लिए बिना रुके उसके लिए प्रार्थना में लगी रही। **जब** हेरोदेस उसे बाहर लाने
७ ही पर था, उसी रात पतरस दो जंजीर से बँधा हुआ दो सिपाहियों के बीच सो रहा था। **दरवाज़े** पर बैठे पहरेदार
८ जेल की रखवाली कर रहे थे। **अचानक** प्रभु का स्वर्गदूत वहाँ आ पहुँचा और जेल में रोशनी फैल गयी। उसने पतरस
९ के बाजू में थपथपाकर, उठा खड़ा किया और कहा, जल्दी से उठो।'' तभी उसके हाथों से जंजीर गिर पड़ी। **स्वर्गदूत**
ने उससे कहा, ''अपनी कमर कसो और चप्पल पहनो।'' और उसने ऐसा किया भी। स्वर्गदूत ने कहा, ''अपने कपड़े
१० पहनो और मेरे पीछे आ जाओ।'' **पतरस** ने ऐसा किया भी। उसे यह लग रहा था कि वह जो कुछ कर रहा है वह
११ सिर्फ स्वप्न में ही है। **जब** वे पहली और दूसरी पहरेदार की चौकी से गुज़र चुके, एक लोहे के दरवाज़े के पास आए
जो शहर की ओर ले जाता है। वह अपने आप खुल गया। वे बाहर सड़क पर गए और अचानक स्वर्गदूत उसे छोड़
१२ कर चल गया। **जब** पतरस अपने आप में आया उसने कहा, ''अब मुझे यह अच्छी तरह मालूम है कि यीशु ने अपने
१३ स्वर्गदूत को भेजकर हेरोदेस के हाथ से और यहूदी लोगों के हाथों से छुड़ा लिया है। **जब** उसने यह सब समझ लिया,
१४ तो वह मरियम के बेटे यूहन्ना के घर, जो मरकुस कहलाता है गया, वहाँ बहुत से लोग प्रार्थना करने के लिए इकट्ठे
१५ हुए थे। **जब** पतरस ने फाटक की खिड़की को खटखटाया, रोडा नाम की एक लड़की दरवाजे पर आयी। **जब** उसने
पतरस की आवाज सुनी, तो खुशी की वजह से दरवाज़ा खोलने के बजाए सब को बताने भीतर भागी। उसने सभी को
१६ बताया कि पतरस दरवाज़े पर खड़ा है। **उन्होंने** उससे कहा, ''तुम पागल हो गयी हो।'' लेकिन वह अपनी बात को
१७ दोहराती रही। तब उन्होंने कहा, ''वह पतरस का स्वर्गदूत होगा।'' **लेकिन** पतरस दरवाज़ा खटखटाता रहा और जब
१८ उन्होंने खिड़की खोली, तो उसे देखकर वे आश्चर्य से भर गए। **लेकिन** उसने उन्हें अपने इशारे से खामोश करते हुए
कहा,और बताया कि यीशु ने किस तरह उसे जेल से छुड़ाया है। उसने उनसे कहा, ''यह सब बातें याकूब और दूसरे
१९ भाईयों को बताओ।'' फिर वह वहाँ से दूसरी जगह चला गया। **जैसे** ही सुबह हुयी, सिपाहियों मे हड़कम्प मच गयी,
२० कि आखिर पतरस गया तो गया कहाँ। **हेरोदेस** ने जाँच पड़ताल के बाद जब उसे न पाया, तो पहरेदारों से पूछताछ
२१ की और हुक्म दिया की, उन्हें जान से मार डाला जाए। वह यहूदिया से कैसरिया गया और वहीं रहा। **हेरोदेस** टायर
और सिदोन के लोगों से बहुत नाखुश था, लेकिन वे सभी एक मन होकर आए। उन्होने बलास्तुस के साथ जो राजा
का व्यक्तिगत दास था मित्रता करके माँग की, कि शान्ति स्थापित हो, क्योंकि राजा के देश से उनके देश को भोजन
२२ सामग्री दी जाती थी। **एक** निश्चित दिन को हेरोदेस राजा ने राजसी ठाठबाठ से सिंहासन पर बैठकर उन्हें भाषण दिया।
२३,२४ **लोग** ऊँची आवाज़ में चिल्ला उठेः ''यह मनुष्य की नहीं ईश्वर की आवाज़ है।'' **उसी** समय परमेश्वर के स्वर्गदूत ने
२५ उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर की बड़ाई नहीं की। उसके कीड़े पड़ गए और वह मर गया। **लेकिन** परमेश्वर का

१२:४ शायद परमेश्वर निन्दा के आरोप के लिए वह पतरस को दण्ड देना चाहता था ।

१२:५ जैसा कि पद १५,१६ से दिखता है, उनकी बिनतियाँ आपतकालीन थीं। हालाँकि विश्वास कमज़ोर था, उन्हें स्वर्गिक पिता ने जवाब दिया । यह हम में से हर एक के लिए है जो सच्चे प्रभु से बिनती करता है।

१२:६ हेरोदेस पतरस को मार डालना ही चाहता था।

१२:७ ११ ५:१८-२४ से तुलना करें। जैसे पतरस को स्वर्गदूत ने जेल से छुड़ा लिया था, वह याकूब को भी छुड़ा सकता था।

१२:१२ पद ५ मरकुस के द्वारा एक पुस्तक लिखी गयी, जो उसी के नाम पर है। उसके बारे में दूसरे पद हैं; २५; १३:५-१३; १५:३७-३९; कुलु ४:१०; फिलेमोन २४, २तिमो. ४:११; १ पत ५:१३।

१२:१३,१४ कम से कम उसने यकीन किया कि यहोवा परमेश्वर ने बिनतियों का जवाब दे दिया है।

१२:१५,१६ उनका यह ख्याल कि लड़की पगला गयी है और अचरज में रहना उनके अविश्वास को दिखलाता है।
''उसका दूत''-मत्ती १८:१० से तुलना करें। देखने से साफ ज़ाहिर है कि उन्होंने सोचा था कि एक स्वर्गदूत एक आदमी की तरह आ सकता है और लोग उलझन में पड़ सकते हैं। ऐसे विश्वास की कोई ठोस नींव बाईबल में नहीं है।

१२:१७ इस पद में याकूब यीशु का आधा भाई था (१:१४; मत्ती १३:५५)। वह यरुशलेम की मण्डली में एक अगुवा था।

१२:१९ रोमन कानून के हिसाब से अगर एक कैदी भाग निकलता है तो यह उसके पहरेदारों की ज़िम्मेदारी समझी जाती है।

१२:२० और सिदोन भूमध्यसागर तट पर इस्त्राएल के उत्तर के शहर हैं।

१२:२२,२३ सच्चे यहोवा के बारे में ओल्ड टेस्टामेन्ट की शिक्षा को हेरोद अच्छी तरह से जानता था। उसे यह भी मालूम था कि उस इज़्ज़त को हासिल करे जो स्वर्गिक पिता को मिलनी चाहिए (निर्ग २०:१-६)। उसे अपने घमण्ड की कीमत चुकानी पड़ी। १४:११-१८ में पौलुस, बरनबास और उसके रवैये की तुलना करें। इसी रवैये की तुलना ३:१२-१६ और १०:२६ में पतरस से करें। ज़रुरी है कि स्वर्गिक पिता और अपने बारे में हम सही ख्याल रखें। नहीं तो हम हेरोद की सी गलती कर बैठेंगे।

१२:२४ इस दुनिया के अधिकारी और सच्चाई की खिलाफ़त करनेवाले आते जाते रहेंगे। बाईबल अपनी सच्चाई को लिए हुए बनी रहेगी - मत्ती ५:१८; २४:३५; भजन ३७:३५,३६; यशा ४०:६-८ ।

१२:२५ पद १२, ११:२९,३० वे अन्ताकिया वापस लौट गए।

२६ वचन बढ़ता और फैलता गया। **जब** बरनबास और शाऊल यरुशलेम में अपनी सेवा खत्म कर वापस लौटे, उन्होंने उस
१३ यूहन्ना को जो मरकुस भी कहलाता है, अपने साथ ले लिया। **अन्तकिया** की मंडली में कुछ भविष्यद्वक्ता और शिक्षक थेः
बरनबास, नायजर कहलाने वाला शिमोन और सायरेने का यूसियस और मनाएन जो हेरोदेस टॅट्रार्क के साथ पालापोसा
२ गया था और शाऊल। **जब** वे उपवास के साथ यीशु की उपासना कर रहे थे तब पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिए
३ बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।" **उपवास** और प्रार्थना के
४ बाद उनके ऊपर हाथ रखकर उन्होंने पौलुस और बरनबास को विदा किया। **पवित्र** आत्मा की अगुवाई में बरनबास
५ और शाऊल सिलूकिया गए और वहाँ से कुप्रुस को रवाना हो गए। **जब** वे सलमिस पहुँचे, उन्होंने यहूदी आराधनालय
६ में परमेश्वर का वचन दिया। वहाँ पर यूहन्ना उनका सहायक था। **जब** वे पाफुस टापू से गुज़र चुके, उन्हें बार- यीशु
७ नामक यहूदी जादूगर और झूठा भविष्यद्वक्ता मिला। **वह** देश के प्रोकॉन्सल सरगयुस पौलुस नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति
८ के साथ था जो बरनबास और पौलुस से परमेश्वर का वचन सुनना चाहता था। **लेकिन** एलीमस जादूगर ने उनका
९ विरोध किया और प्रोकॉन्सल को विश्वास से हटाना चाहा। **तब** पौलुस ने पवित्र आत्मा से भरकर उसकी तरफ गौर
१० से देखा और कहा, "**तुम** सब तरह के धोखे और चालाकी से भरे, शैतान के बच्चे, सारी धार्मिकता के दुश्मन। क्या
११ तुम यीशु के सच्चे मार्गो को खराब करना बन्द नहीं करोगे? **अब** देखो, यीशु का हाथ तुम्हारे, खिलाफ है। तुम
अन्धे हो जाओगे और कुछ समय तक रोशनी को नहीं देख सकोगे।" तुरन्त उसके ऊपर एक धुंधलापन और अंधेरा
१२ छा गया, और वह टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़ कर उसकी मदद करे। **प्रोकॉन्सल** ने यह देखकर विश्वास
१३ किया और यीशु की शिक्षा पर आश्चर्य किया। **पौलुस** और उसके साथी पाफुस से निकलकर पंफूलिया मे पिरगा तक
१४ गए। वहाँ यूहन्ना उन्हें छोड़कर वापस यरुशलेम चला गया। **पिरगा** से निकल कर वे पिसीदिया में अन्तकिया आए। वहाँ

१३:१ भविष्यद्वाणी और सिखाना यह दो बड़े वरदान हैं जो मण्डली को दिए गए हैं - रोमि १२:६,७ १ कुरि. १२:२८, १४:१ इफि ४:११-१३
"हेरोद " मत्ती १४:१

१३:२ मत्ती ६:१४,१५ मे उपवास पर नोट्स देखें। यहाँ पवित्रात्मा के व्यक्तित्व पर वचन देखिए ८:२६; १०:१६; यूहन्ना १४:१६,१७। परमेश्वर अपने राज्य में खास काम के लिए लोगों को बुलाते हैं। अन्ताकिया में जिन दो लोगों को मिश्नरी काम के लिए उन्हे परमेश्वर ने बुलाया वे पूरी मण्डली में सिखाने और संदेश देने के लिए योग्य थे। अच्छा है अगर लोगों को मालूम है कि पवित्र आत्मा ने उन्हें कोई काम करने की ज़िम्मेदारी दी है। यह ध्यान रहे कि मण्डली को पवित्रात्मा के साथ सहयोग करना है ताकि सेवकाई करने वाले लोगों को अलग करने के बारे में मार्गदर्शन हासिल करें।

१३:३ यहाँ सिर पर हाथ रखे जाने का मतलब था कि उनकी बुलाहट को मंजूरी दी गयी। यह भी कि वे उन्ही के साथ के हैं।

१३:४ यदि पवित्र आत्मा लोगों को संदेश देने के लिए प्रेरित न करे तो मण्डली के भेजने से कुछ नहीं होता है।
"कुप्रुस" - ११:१६

१३:५ सलमीस, इस टापू का एक खास शहर था। जैसा उनका तरीका था, पहले वे यहूदियों के पास गए - पद ४६; रोमि :१:१६। मरकुस का दूसरा नाम यूहन्ना था - १२:१२।
"आराधनालय" मत्ती ४:२३।

१३:६ इस टापू की राजधानी पाफुस थी। बार-यीशु का अर्थ है "यहोशू का बेटा" (इब्रानी यहोशू, यूनानी में यीशु है)। यह बार यीशु खोटा यहूदी था - वह एक सच्चे परमेश्वर की सच्चाई से भटक चुका था। परमेश्वर ने लोगों को जादू-टोने से अलग रहने के लिए कहा था। देखें व्यवस्था १८:१०-१३।

१३:७ "प्रोकॉन्सुल" का यहाँ मतलब था टापू का गवर्नर। सभी बुद्धिमान लोगों की तरह उसने भी सत्य को सुनना चाहा था।

१३:८ दूसरों को यीशु पर विश्वास करने से मनाही करने वाली बड़ी गलती करते हैं। देखें मत्ती २३:१३। "बार यीशु" का दूसरा नाम था एलीमास।

१३:९ यहाँ पहली बार शाऊल का दूसरा नाम पौलुस आया है। इसी नाम से वह हमेशा जाना गया।
"पवित्र आत्मा से भरकर" - २:४; ४:३१; ६:३,५; ११:२४

१३:१० कभी-कभी परमेश्वर का आत्मा किसी इन्सान के चरित्र को देखने और हिम्मत से सच्चाई बताने में मदद करता है
"शैतान के संतान" देखें मत्ती १३:३८; यूहन्ना ८:४४ अपने जादू-टोना से एलीमास ने बहुत समय तक लोगों को धोखे में रखा था।

१३:११ यदि परमेश्वर हमारी तरफ हैं, तो हमारे खिलाफ कौन प्रबल हो सकता है? इसका उल्टा रोमि ८:३१ में देखिए।

१३:१२ देखें २:४३; ५:१२-२४; ८:६,१३; ६:३४,३५,४१,४२।

१३:१३ पिरगा दक्षिण तट जो आज टर्की कहलाता है २० किलोमीटर दूरी पर एक टापू है। यहाँ छोड़े जाने का कोई कारण नहीं है कि यूहन्ना मरकुस ने ऐसा क्यों किया, १५:३८,३६। पौलुस भी ऐसे किसी जायज़ कारण के बारे में सोच नहीं सका। पौलुस को छोड़ने की वजह से यूहन्ना मरकुस ने कुछ न कुछ पहली यात्रा मे ज़रुर खोया। दूसरी यात्रा में भी उसे नही ले जाया गया।

१३:१४ पिरगा के उत्तर में, १६० किमी. दूर अन्ताकिया था।
"आराधनालय" - मत्ती ४:२३ इससे मालूम पड़ता है कि अन्तकिया में यहूदियों की एक बस्ती थी।

१५ सब्त के दिन वे आराधनालय में जाकर बैठ गए। **नियमशास्त्र** और भविष्यद्वक्ताओं की किताबों के पढ़े जाने के बाद
आराधनालय को चलानेवालों ने उन्हें समाचार भेजा कि "हे लोगो, भाइयो यदि तुम्हारे पास ऐसा कुछ संदेश है, जो हिम्मत
१६ बढ़ाने वाला है, तो दो।" **तब** पौलुस ने खड़े होकर अपने हाथे को दिखाकर कहा, "हे इस्राएलियो, तुम जो परमेश्वर
१७ को इज़्जत देते हो, सुनो। **इन** इस्राएलियों के परमेश्वर ने हमारे बुज़ुर्गों को चुना। जब वे मिस्त्र देश में परदेशी की
१८ तरह रह रहे थे तब उन्हें महान किया"। बढ़ी हुयी भुजा से वह उन्हें मिस्त्र से बाहर ले आए। **तकरीबन** चालीस साल
१९ तक परमेश्वर जंगल में उनके बर्ताव को सहते रहे। **जब** कनान देश में उन्होंने सात राष्ट्रों को बर्बाद कर डाला, तब
२० से उनकी ज़मीन को बाँट दिया। "**तकरीबन** चार सौ पचास साल तक शमूएल के आने तक, उन्होंने न्यायी (जज) दिए।
२१ **इसके** बाद उन लोगों ने एक राजा की माँग की। परमेश्वर ने उन्हें, कीश का बेटा शाऊल जो बेन्जामिन के गोत्र का था,
२२ राजा होने के लिए दिया। उसने चालीस साल तक शासन किया। **जब** उसे सिंहासन से उतार दिया गया, तब दाऊद
को राजा होने के लिए खड़ा किया। दाऊद के बारे में यह गवाही दी गयी मैंने यिशै के बेटे दाऊद को पा लिया है।
२३ वह मेरे मन के मुताबिक है और जो मैं कहूँगा, वह वही करेगा।' **परमेश्वर** ने अपने वायदे के अनुसार, इसी व्यक्ति
२४ के वंश से इस्राएल के लिए एक मुक्तिदाता यीशु को भेजा । **यीशु** के आने से पहले, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले
२५ ने इस्राएल के सभी लोगों के लिए मन बदले जाने के बपतिस्मे का संदेश दिया। **जब** यूहन्ना का समय खत्म होने पर
था, उसने कहा, 'तुम मुझे जो समझते हो, मैं वह नहीं हूँ। लेकिन देखो, मेरे बाद में एक आनेवाला है। मैं इस लायक
२६ भी नहीं कि उसके पैर की चप्पलों को उतारुँ। "**हे** लोगो, भाइयो, अब्राहम के खानदान के बच्चो, तुम में से जो भी
२७ परमेश्वर से डरते हो, तुम्हारे लिये यह मुक्ति का संदेश भेजा गया है। **क्योकि** यरुशलेम में रहनेवाले लोगों और उनके
शासकों ने न उन्हें पहचाना, न ही भविष्द्वक्ताओं की वाणी सुनी, जिनकी किताबें, हर सब्त के दिन पढ़ी जाती हैं; उन्हें
२८ दोषी ठहराकर पूरा किया है। **हालाँकि** उन्होंने यीशु को मौत की सज़ा का दोषी नहीं पाया,फिर भी उन्होंने पिलातुस
२९ से बिनती की, कि उन्हें मार डाला जाए। जब **अपने** बारे में सब लिखा हुआ उन्होंने पूरा किया तो उन्होंने यीशु को
३० क्रूस पर से उतारकर, कब्र में रख दिया। **लेकिन** परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओ में से जिला दिया। **गलील** से जो
लोग यीशु के साथ यरुशलेम आए थे, उन्होंने बहुत दिनों तक यीशु को देखा। वे लोग दूसरों के सामने इस सच्चाई
३२,३३ के गवाह थे। **हमने** इस ख़ुशी की बात की घोषणा तुम से की, कि जो वायदा बुज़ुर्गों से किया गया, **उसे** हमारे लिए
यीशु को जिलाकर पूरा किया। जैसा कि दूसरे भजन में भी लिखा है, "तुम मेरे बेटे हो, मैनें तुम्हें आज जन्म दिया
३४ है। **यह** कि परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओ में से जिलाया, जो फिर कभी मरने का नहीं, और यह भी कहा : मैं तुम्हें
३५ दाऊद की कृपा दूँगा। **इसीलिए** किसी और भजन में भी उन्होंने कहा, आप अपने पवित्र जन को कभी भी सड़ने नहीं

१३:१५ लूका ४:१६,१७, १४:१ । यह यहूदियों के लिए आम बात थी कि वे आराधनालय मे अजनबी लोगों को बोलने के लिए नेवता देते थे ।

१३:१६ "तुम परमेश्वर से डरते हो " शायद इसका मतलब है गैरयहूदी जो यहूदी बन गए थे ।

१३:१७-१९ तीन पदों में पुरानी वाचा की उत्पति से यहोशू तक की किताबों (ओल्ड टेस्टामेन्ट) के ४५० सालों के इतिहास के विषय बतलाता है।

१३:२० शमूएल वह आखिरी न्यायी था मूसा के पहले जिसे भविष्यद्वक्ता कहा गया।
"न्यायी" - न्यायी की किताब का परिचय देखें।

१३:२१ १ शमू ८:५; ९:१,२; १०:१ देखें।

१३:२२ १ शमू १६:१,१३; २ शमूएल २:४; ५:१-५, १ शमूएल १३:१४ मे " उनके मन के अनुसार" पर नोट्स देखिए।

१३:२३ इस्राएल के इतिहास की तरफ इशारा करने की वजह यह थी कि पौलुस को परमेश्वर द्वारा दी गयी रोशनी पर कट्टर भरोसा था। वह चाहता था कि सुनने वाले यीशु की ओर अपनी दृष्टि करें। वह काफी शब्दों में कहता है कि यीशु मसीह (इस्राएल को बचानेवाले) का इन्तज़ार बहुत समय से किया जा रहा था। यीशु के बारे पहला वायदा उत्पत्ति में था और वहाँ से वह मलाकी ३:१ तक जाता है।

१३:२४,२५ मत्ती ३:१-६; यूहन्ना १:१९-२७।

१३:२६ अब्राहम इस देश का पूर्वज था, सभी यहूदियों का वह आदि पिता है।

१३:२७ देखें २:२३; ३:१७,१८ ज़्यादा यहूदी उन दिनों में ओल्ड टेस्टामेन्ट की भविष्यद्वाणी की किताबों को समझ नहीं पाए थे। लेकिन अपनी कही बातों को पूरा करने के लिए परमेश्वर ने यहूदी अगुवों की बुरी अज्ञानता को भी इस्तेमाल किया। उत्पत्ति ५०:२० से मिलान करें।

१३:२८ मत्ती २७:१,२ ११-२६।

१३:२९ लूका २३:५३; २४:२६,२७ ४६।

१३:३० मत्ती २८:६।

१३:३१ देखें १:३-८; १ कुरि. १५:३-८।

१३:३२-३५ पौलुस ऐसे यीशु को सामने लाता है जिन्होंने ओल्ड टेस्टामेन्ट के वायदे को पूरा किया (मत्ती ५:१७ से मिलान करें)। वह ओल्ड टेस्टामेन्ट के तीन पदों की तरफ इशारा करता है-इन पदों को और उसके नोट्स को देखेंः भजन २:७; यशा ५५:३; भजन १६:१०।

३६ देंगें। "**परमेश्वर** की इच्छा में अपनी पीढ़ी की सेवा करने के बाद दाऊद मर गया, अपने बुज़ुर्गो की कब्र के पास
३७,३८ ही दफनाया गया और सड़ गया। **लेकिन**, जिन्हें परमेश्वर ने जिलाया, वह मिट्टी में सड़ते नहीं रहे। **इसलिए** भाइयो
३९ और बहनो यह जान लो, कि इस व्यक्ति के द्वारा अपराधों की माफी का संदेश दिया गया है। **जिन्होंने** उन पर भरोसा
४० किया, वे सभी निर्दोष ठहराए गए। मूसा के नियमशास्त्र से यह निर्दोष ठहराया जाना संभव नहीं था। **इसलिए**
४१ सावधान रहना, ताकि जो कुछ भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था, वह सब कुछ तुम्हारे ऊपर न आए। **हे** बदनामी करनेवालो,
देखो और आश्चर्य से भर जाओ और मिट जाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे समय में एक ऐसा काम कर रहा हूँ जिसके बारे
४२ में अगर तुम्हें कोई बताए तो तुम बिल्कुल उसकी बात न मानना। **जब** पौलुस और बरनाबास बाहर जाने लगे तो लोगों
४३ ने उनसे बिनती की, कि आनेवाले सब्त के दिन यही बातें उन्हें फिर सुनाई जाएँ। **जब** उपासना खत्म हो गयी तो बहुत
से यहूदी और यहूदीमत में आए हुए भक्तों में से बहुत लोग पौलुस और बरनाबास के साथ चल पड़े। उन्होंने बातचीत
४४ करते हुए उनसे बिनती की, कि वे परमेश्वर की असीम कृपा में बने रहें। **अगले** सब्त के दिन लगभग पूरा शहर
४५ परमेश्वर का वचन सुनने इकट्ठा हुआ। **जब** यहूदियों ने भीड़ देखी, तो ईर्ष्या से भर गए। उन्होंने निन्दा करते हुए
४६ पौलुस की बातों की काट-छाँट की। **बड़ी** हिम्मत करते हुए पौलुस और बरनाबास ने कहा, "यह ज़रुरी था कि पहले
परमेश्वर के वचन को तुम तक पहुँचाया जाए। लेकिन यह देखकर कि तुम इसे अपनाते नहीं और हमेशा की जिंदगी
४७ पाने के लायक नहीं बनते, अब हम गैरयहूदियों को वचन सुनाएंगे। **क्योंकि** प्रभु ने हमें यह हुक्म दिया है: 'मैने तुम्हें
४८ गैरयहूदियों के लिए रोशनी ठहराया है कि तुम पृथ्वी के आखिर तक मुक्ति का कारण हो। **जब** गैरयहूदियों ने यह सुना,
तो वे खुश हुए और परमेश्वर के वचन की बड़ाई की। उन सभी ने विश्वास किया जो अनन्त जीवन के हकदार थे।
४९,५० **यीशु** का संदेश उस सारे क्षेत्र में फैल गया। **लेकिन** यहूदियों ने भक्त, ऊँचे घराने की महिलाओं और शहर के मशहूर लोगों
को भड़काया। उन्होंने पौलुस और बरनाबास के खिलाफ बलवा करवा कर उन्हें अपने सरहद के बाहर निकाल दिया।
५१,५२ **तब** वे उनके खिलाफ में अपने पैरों की धूल झाड़ कर इकुनियुम को चले गए **और** शिष्य खुशी और पवित्रात्मा से लगातार
१४ भरते गए। **इकुनियम** में यहूदी आराधनालय में उन्होंने ऐसा संदेश दिया कि बड़ी संख्या मे यहूदी और यूनानियों ने
२ विश्वास कर लिया। **लेकिन** अविश्वासी यहूदियों ने गैरयहूदियों को भाइयों के खिलाफ भड़का कर उनके मन को खिलाफत

"दाऊद की कृपा" जिन भलाइयों का वायदा दाऊद से किया गया उनमें से एक यह था कि उसके वंश का एक व्यक्ति को परमेश्वर अपना बेटा कहते हैं। वह उनके सिंहासन पर राज्य करेगा और वह भी हमेशा के लिए (देखें २ शमू. ७:१४)। पौलुस यह कहना चाहता है कि अगर इस्त्राएल के मसीह मरे हुए में से जी नहीं उठे, तो वह उन भलाइयों को नहीं चख सकता था, जिनका वायदा किया गया था।

१३:३६,३७ देखें २:२५-३२। "सो गया" - यूहन्ना ११:११-१३।

१३:३८ देखें २:३८; २६:१८; लूका २४:४७। गुनाहों की माफी - १०:४३ के पदों को देखिए।

१३:३९ निर्दोष ठहराया जाना माफी पाने का दूसरा पहलू है। इसका मतलब है परमेश्वर द्वारा लोगों को बिना किसी आरोप के देखना। इस सच्चाई को बाद में पौलुस रोमियों और गलातियों में दिखाता है (रोमि ३:२०,२४,२८; ५:१,९; ८:३०; गल २:१६: ३:११,२४)। हर जगह वह सिखाता है कि बेगुनाह साबित किया जाना यीशु पर भरोसा लाने से होता है। मूसा का नियम शास्त्र किसी को निर्दोष नहीं गुनाहगार साबित करता है - निर्गमन १९:२१-२५; रोमि ३:१९,२०; गल ३:१०।

१३:४०,४१ जो लोग ईमान लाते हैं, उन्हीं के लिए यीशु की खबर खुशी की है। इसलिए पौलुस एक चेतावनी देता है। २:४० से तुलना करें। पौलुस उन्हें चिताता है कि जैसे हबक्कूक के समय में लोगों का रवैया था वैसा न रखें (हबक्कूक १:५)।

१३:४३ " परमेश्वर की असीम कृपा" इस शब्द को पौलुस ने बहुतायत से इस्तेमाल किया है - २०:२४,३२; रोमि १:७; ३:२४; ५:१,२,२०,२१; ६:१४; इफि ३:१; तीतुस २:११-१५; ३:७।

१३:४४ इसका मतलब है कि ज्यादातर लोग गैरयहूदी थे।

१३:४५ ५:१७; ७:९, मत्ती २७:१८; नीति २७:४ से तुलना करें। और कोई व्यक्ति इतने लोगों को इकट्ठा न कर सका था न ही ढेर से लोगों मे दिलचस्पी पैदा कर सका था। इसलिए लोग पौलुस और बरनबास से जलते थे। यह आज भी होता है।

१३:४६ ३:२६; रोमि १:१६ देखें। "हमेशा की ज़िन्दगी" पर नोट्स देखें यूहन्ना ३:१६ में।

१३:४७ यशा ४९:६ "तू " यानि कि मसीह।

१३:४८ हमेशा की ज़िन्दगी ईमान लाने से मिलती है। इन गैरयहूदियों ने मसीह पर यकीन लाने से दिखा दिया कि वे परमश्वेर द्वारा चुने गए थे। तुलना करें यहून्ना ६:३७, ४४; १७:२ इफि १:४।

१३:५० " भक्त" जो अच्छे लोग मसीह यीशु को नहीं जानते, उन्हें दुष्ट और चालाक लोग यीशु के लोगों को सताने के लिए उकसा सकते हैं देखें यूहन्ना १६:२,३

१३:५१ मत्ती १०:१४ इकुनियुम शहर दक्षिणपूर्व में १३० कि.मी. दूर था।

१३:५२ जब कभी यीशु के संदेश को सचमुच में कबूल किया जाता है, खुशी होती है (८:८; १६:३४; लूका २:१०; २४:५२; रोमि १४:१७;

३ से भर दिया। **इसलिए** लम्बे अर्से तक वे वहीं ठहर गए। वे यीशु की असीमित कृपा की गवाही बड़े जोश और उनके
४ हाथ से चमत्कारिक निशान और अजीब कामों के द्वारा देते रहे। **लेकिन** शहर के सारे लोग दो हिस्सों में बँट गए थे।
५ आधे यहूदियों के साथ और बाकी प्रेरितों की तरफ। **कुछ** गैरयहूदियों और कुछ यहूदियों ने उनके अधिकारियों, के साथ
६ मिलकर गुस्से से पत्थरवाह करना चाहा। **उन्हें** यह खबर लग गयी और लुस्त्रा-दिरबे के नगरों मे और आस-पास के
७,८ प्रदेशों में भाग गए। **वे** वहीं शुभसंदेश सुनाते रहे। **लुस्त्रा** में पाँव से कमज़ोर एक आदमी बैठा हुआ था : जन्म ही
९ से लंगड़ा होने की वजह से वह कभी भी चल-फिर न सका था। **वह** पौलुस की सुन रहा था। पौलुस ने उसकी तरफ
१० गौर से देखा तो जान लिया कि उस लंगड़े के पास ठीक हो जाने का विश्वास था। **पौलुस** ने चिल्ला कर कहा, "अपने पाँव
११ के बल सीधे खड़े हो जाओ।" उसी वक्त वह लँगड़ा उछल कर खड़ा हुआ और चलने लगा। **पौलुस** के इस काम को
१२ देखकर लोगों ने लुकाउनिया जुबान में चिल्लाते हुए कहा, "इन्सान की शक्ल में देवता हमारे बीच उतर आए हैं। **उन्होंने**
१३ बरनबास को ज्यूस और पौलूस को हिरमेस कहा। पौलुस बोलने में पहल कर रहा था। **ज्यूस** का मन्दिर शहर के सामने
ही था। उस मन्दिर का पुजारी वहाँ के लोगों के साथ मिलकर बैल और फूलों की माला बरनबास और पौलुस को चढ़ाना
१४ चाहता था। **यह** खबर लगते ही प्रेरित, बरनबास और पौलुस अपने कपड़े फाड़ते हुए, लोगों के बीच यह चिल्लाते हुए
१५ दौड़े, "तुम लोग यह सब क्या कर रहे हो? **तुम्हारी** तरह हम भी इन्सान ही हैं और तुम्हें यह संदेश देते हैं, कि तुम
बेकार की बातों से हट जाओ। साथ ही जीवित परमेश्वर की तरफ मुड़ जाओ, जिन्होंने आसमान, ज़मीन, समुन्दर और
१६ जो कुछ उसमें है, उसे बनाया है। **पुराने** समयों में इन्ही परमेश्वर ने सभी राष्ट्रों को अपने अपने तरीके से जीने दिया
१७ था **फिर** भी उन्होंने अपने आप को बे-गवाह नहीं छोड़ा; लेकिन भलाई करते रहे। वह तुम्हें बरसात और फलदायक मौसम
१८ देकर तुम्हारे मनों को खाने तथा खुशी से फलवन्त सन्तुष्ट करते रहे। **यह** कहने के बावजूद भी भीड़ को बड़ी मुश्किल
१९ से रोक पाए कि उनके लिए बलिदान न चढ़ाएं। **अन्ताकिया** और इकुनियम से आए हुए यहूदियों ने लोगों को अपनी
तरफ कर लिया। पौलुस को पत्थरवाह करने के बाद वे उसे मरा हुआ समझकर खींचते हुए शहर के बाहर तक ले

१५:१३;१ पत १:८)। इसी पवित्र आत्मा की भरपूरी को अनुभव करने का मौका मिलता है २:४, इफि ५:१८)

१४:१ देखें १३:१४-१५।

१४:२ रोमि ८:७; १ थिस्स २:१४-१६।
"भाइयो बहनो" - जिन लोगों ने यीशु मसीह को अपनाया था उनके लिए यह शब्द आया है। यह उस रिश्ते की तरफ इशारा है जो परमेश्वर के खानदान में एक दूसरे के साथ हैं। मसीह में सभी भरोसा रखनेवाले एक खानदान के हिस्सा हैं। उनके पिता भी एक हैं।

१४:३ इसमें कोई शक नहीं कि वे विश्वासी लोगों को मजबूत करने के लिए वहाँ रह गए क्योंकि सताव आने वाला था।
"निशान और अजीब काम" - २:४३; ५:१२; ८:६; यूहन्ना २:११; इब्रा २:४।

१४:४ मत्ती १०:३४-४६; यूहन्ना ७:४३; ९:१६; १२:१६।

१४:५-७ वे तब तक ठहरे, जब तक ठहरना वाजिब था। जब उन्हें जाना ठीक लगा, निकल पड़े हालाँकि उन्हें मौत से डर नहीं था, फिर भी उनकी मौत से किसी का फायदा न हुआ होता (फिलि १:२१-२४; इब्रा २:१४,१५)। ३० किमी दक्षिण और इकुनियुम के थोड़ा पश्चिम में लुस्त्रा शहर था।

१४:९,१० कभी-कभी पवित्रात्मा अपनी सेवा करने वालों को यह पहचानने में मदद करता है, कि देखें कि कहाँ लोगों में विश्वास है।

१४:११,१२ जिस तरह से यूनानी लोग तमाम ईश्वरों को मानते थे, ये लोग भी ऐसा करते थे। यूनानी जिसे सबसे बड़ा ईश्वर समझते थे, उसे वह ज्यूस कहते थे। हिरमेस को वह ईश्वरों का संदेशवाहक समझते थे। रोम के लोगों ने इन ईश्वरों का नाम जुपिटर और मरकरी रख दिया था।

१४:१३,१४ १२:२१-२३ से मिलान करें। उनके सामने इन्सान की उपासना की जाने वाले थी। उन्होंने उसे रोकने की पूरी कोशिश की। अपने कपड़े फाड़ने का मतलब यह दिखाना था कि वे उस बात को पसन्द नहीं करते हैं (२ शमूएल १३:३१; अय्यूब १:२०; मत्ती २६:६५)। ये स्वर्गिक पिता की सेवा करनेवाले हर युग के उन लोगों से कितने फर्क थे, जो ईश्वर या सृष्टिकर्ता होने का दावा करते हैं।

१४:१५ देखिए ३:१२; प्रका : २२:८,९ मत्ती ४:१०। यहाँ कुछ खास शब्द हैं। उन्होंने सृष्टिकर्ता और ईश्वरों में एक अन्तर को देखा। सृष्टिकर्ता "जीवित" हैं। तमाम ईश्वरों का मानना और उन्हें चीज़ें चढ़ाना "बेकार की बातें" हैं। इनसे दूर रहना चाहिए। तुलना करें भजन ११५:२-८; यशा ४०:१८-२६; ४४:९-२०। उनके दिए जाने वाले संदेश का यह एक हिस्सा थी।

१४:१६ देखें १७:३०। " पुराने समयों में" सृष्टिकर्ता इस्त्राएल देश के साथ काम कर रहे थे और अपनी इच्छा के बारे में उसे दिखाया था। उस समय उन्होंने दूसरे देशों को छूट दी थी कि वे वह सब करें जो चाहें। इसलिए नहीं कि उनके रास्ते उनको मंजूर थे (रोमि १:१८-३२ से तुलना करें। लेकिन इसलिए कि अब तक समय नहीं आ पहुँचा था कि उनके सेवक भेजे जाकर लोगों को खुशखबरी सुनाएँ (हालाँकि योना की बात थोड़ी अलग थी)

१४:१७ यहाँ तक कि जब देश बाईबल में दी गयी रौशनी से अनजान थे, इस प्रकृति में वे परमेश्वर की भलाई को देख सकते थे। देखें भजन १९:१-४ रोमि १:१९,२०।

१४:१८,१९ लोगों की डावाँडोला हालत को देखिए, उनकी अज्ञानता को भी। जिसे वह एक दिन चाहते थे, दूसरे दिन पत्थरवाह करना चाहते थे। देखें यर्मि १७:५,९। लेकिन उसके लुस्त्रा में आने से काफी फर्क पड़ा।

२० गए। **फिर** भी जब शिष्य उसके चारों तरफ खड़े हुए थे, वह खड़ा होने के बाद शहर में आ गया। दूसरे दिन वह
२१ बरनबास के साथ दिरबे चला गया। **उस** शहर में शुभसंदेश देने और शिष्य बनाने के बाद वे लुस्त्रा, इकुनियुम और
२२ अन्ताकिया लौट आए। **शिष्यों** की हिम्मत बढ़ाने और उन्हें विश्वास में बने रहने के साथ सिखाया, ‘‘बड़ी समस्याओं
२३ में से होकर हमें परमेश्वर के राज्य में दाखिल होना है।’’ **उन्होंने** प्रार्थना और उपवास के साथ हर एक मण्डली में
अगुवों को नियुक्त किया, उसके बाद उन्हें उस प्रभु के हवाले कर दिया, जिन को उन लोगों ने अपनाया था। इसके बाद
२४,२५ **पिसीदिया** से गुज़रते हुए वे पंमफूलिया पहुँच गए। **पिरगा** में शुभसंदेश सुनाने के बाद, वे अन्ताकिया आ गए।
२६ **वहाँ** से वे अन्ताकिया के लिए रवाना हुए। जहाँ उन्हें परमेश्वर की उस शर्तहीन कृपा के प्रति सुपुर्द किया गया था
२७ जिसकी ज़रूरत उन्हें पूरे किए हुए काम के लिए थी । **वहाँ** पहुँचने पर उन्होंने मण्डली को इकट्ठा किया। उनके
साथ मिलकर जो कुछ परमेश्वर ने किया, उसकी सूचना उन्होंने दी। यह भी कि गैरयहूदियों के लिए परमेश्वर ने किस
२८,**१५** तरह से दरवाज़ा खोल दिया । **वे** शिष्यों के साथ वहाँ पर बहुत समय तक ठहरे रहे। **कुछ** लोग जो यहूदिया से आए
थे यह सिखाने और कहने लगे, ‘‘जब-तक मूसा की प्रथा के अनुसार तुम्हारा खतना नहीं होगा, तुम मुक्ति या मोक्ष
२ नहीं पा सकोगे।’’ **इसलिए**, पौलुस और बरनबास के साथ उनका झगड़ा होने पर उन्होंने यह इरादा किया कि वे
३ इस सवाल का ज़वाब पाने के लिए वे प्रेरित और अगुवों के पास यरुशलेम जाएंगे। **मण्डली** द्वारा भेजे जाने पर वे,
फूनीशिया और सामरिया से गुज़रे। गैरयहूदियों के बदलाव की खुशखबरी सुनाने से उन्होंने भाइयों मे बड़ी खुशी पैदा
४ की। **जब** वे यरुशलेम गए तो प्रेरितों और अगुवों ने उन्हें ग्रहण किया। उन्होंने वे सब बातें उन्हें बतायीं, जिन्हें परमेश्वर
५ ने उनके लिए किया था। **फरीसियों** में से जिन्होंने विश्वास किया था, खड़े होकर कहा, ‘‘यह ज़रुरी है कि उनका
६ खतना किया जाए और वे मूसा के द्वारा दिए गए नियमों को मानें।’’ **प्रेरित** और वहाँ के बुज़ुर्ग अगुवे इस विषय पर
७ विचार विमर्श के लिए एक जगह मिले। **इसके** बाद काफी बहस के बाद, पतरस खड़ा होकर उनसे कहने लगा, ‘‘लोगो
और भाईयो, तुम्हें मालूम है कि कुछ समय पहले परमेश्वर ने एक फैसला किया, वह यह कि गैरयहूदी मेरे मुँह से
८ शुभसंदेश सुनें और विश्वास लाएँ। **परमेश्वर** ने जो मनों को जानने वाले हैं, पवित्र आत्मा देकर गवाही दी, जैसा
९ उन्होंने हमारे साथ किया **और** उनके तथा हमारे बीच कोई भेद भाव नहीं किया परंतु विश्वास के द्वारा उनके हृदयों को

१४:२० जो लोग पवित्र आत्मा से ओत-प्रोत थे उनकी बहादुरी देखें। जिस जगह पर उसे बड़ी पीड़ा देकर मार डालना चाहते थे, वहीं वह वापस गया (पद २१ भी)। ४:१३, नीति २८:१ से तुलना करें। इकुनियुम के दक्षिण पूर्व ८० कि.मी. दूर दिरबे स्थित था।

१४:२२ यीशु और उनके भेजे गए संदेशवाहकों ने यह बतला दिया था कि इस दुनिया में यीशु के लोगों को तकलीफ होगी। यीशु ने यह भी बताया कि हम लोगों का रवैया कैसा होना चाहिए (मत्ती ५:१०-१२; १ पत ४:१३)। जब यीशु की वजह से हमें क्लेश दिया जाता है, यह सवाल नहीं पूछना चाहिए क्यों ऐसा हो रहा है? इसके उल्टा जब सताव नहीं होता हैं हमे पूछना चाहिये कि ऐसा क्यों नहीं हो रहा है। यहाँ पौलुस कुछ इस तरह से कहता है, जैसे कि सृष्टिकर्ता का शासन आनेवाले समय में होगा- उसका मतलब है कि जब शासन पूरी शान के साथ सबके सामने आता है। मत्ती ४:१७ के नोट्स देखें।

१४:२३ १३:२,३ देखें। ‘‘अगुवों ’’ यहाँ इशारा उन लोगों की तरफ है जो मण्डली के अगुवे हैं, देखभाल करते हैं। (पत ५:१-३) जैसा ६:५,६ में हुआ उनको सलाह मशविरा के बाद ही ज़िम्मेदारी दी गयी थी।

१४:२४,२५ देखिए १३:१३ अन्ताकिया पंफूलिया राज्य का एक खास बन्दरगाह था।

१४:२६ देखें १३:१-३।

१४:२७ उन्होंने इस बात पर ज़ोर डाला कि वह स्वर्गिक पिता ही थे; जिन्होंने गैरयहूदियों के मन में काम किया और उन्हें विश्वास में लाए - यह उनका काम नहीं था।

१५:१ ये लोग जो यीशु के शिष्य होने का दावा कर रहे थे, यहूदी थे। एक खास बात के बारे में वे गलत थे। वे सोच रहे थे कि मण्डली मात्र यहूदियों तक सीमित होनी चाहिए। यह भी कि मुक्ति पाने के लिए लोगों को पहले यहूदी बनना पड़ेगा - यानि कि उद्धार पाए हुए लोगों का खतना कराना चाहिए और मूसा के नियमशास्त्र का पालन भी (पद ५)। उत्पत्ति १७:९-१४ में खतने पर नोट्स देखिए।

१५:२ पौलुस और बरनबास ने इस शिक्षा में एक खतरा देखा और इसका विरोध किया। वे यह जानते थे कि मुक्ति स्वर्गिक पिता की शर्तरहित कृपा और इन्सान के भरोसा करने पर है। यह भी कि रीतिविधियों और नियमशास्त्र का पालन करने से नहीं। रोमियों और गलातियों के पत्र में इस बात का उसने ज़ोरदार तरीके से खण्डन किया है (रोम ३:२७- ४:२५; गल १:६-९; २:१-६:१५)।

१५:४ १४:२७ देखें।

१५:५ पद १- ये फरीसी मसीह के शिष्य होने का दावा कर रहे थे और मण्डली में भी थे।
‘‘फरीसी’’ - मत्ती ३:७ में नोट्स देखें।

१५:७ अध्याय १०।

१५:८ देखें १०:४४-४७। गल ३:२-५ से तुलना करें।

१५:९ दूसरे शब्दों में सृष्टिकर्ता ने गैरयहूदियों से नहीं कहा, मैं तुम्हें बचाऊँगा नहीं और न ही तब तक मैं अपना आत्मा दूँगा जब तक तुम खतना नहीं कराओगे और मूसा के नियमशास्त्र को नहीं मानोगे।
‘‘हृदयों को शुद्ध’’-यहोवा परमेश्वर ने उन्हें विश्वास दिया और उसे एक हथियार के रुप में इस्तेमाल किया ताकि उनके आत्मा को

१० शुद्ध किया। **इसलिए** शिष्यों की गर्दन पर बोझा रखकर जिसने हमारे पूर्वज, न हम सह सकते हैं, तुम परमेश्वर का
११ इम्तिहान क्यों लेते हो? **लेकिन** हमें यकीन है कि जैसे उन्हें माफी मिली, हमें भी यीशु मसीह से मिलेगी।''
१२ **तब** सभा के सभी लोग खामोश रहे और पौलुस और बरनबास की बात ध्यान से सुनाते रहे। उन दोनों ने उन अज़ीब
१३ कामों की चर्चा उनसे की, जिन्हें परमेश्वर ने उनके ज़रिए से किया था। **उनके** चुप हो जाने के बाद याकूब ने कहना
१४ शुरु किया, ''हे लोगो और भाईयो, मेरी सुनो। **शिमोन** ने यह ऐलान किया है कि परमेश्वर ने किस तरह से पहली
१५ बार, गैरयहूदियों से भेंट करके अपने नाम के लिए एक लोग अलग किए। **यह** बात भविष्यद्वक्ता के शब्दों से पुष्ट हो
१६ जाती है, जैसा कि लिखा है, '**इन** बातों के बाद मैं लौटूँगा और दाऊद के गिरे हुए तम्बू को फिर से खड़ा करुँगा। उसके
१७ खण्डहरों को फिर से बनाऊँगा। और स्थिर करुँगा। **जिससे** कि बचे हुए लोग और गैरयहूदी जो मेरे नाम के कहलाते
१८ हैं, यीशु को चाहें। **परमेश्वर** को उनके किए गए सभी कामों की जानकारी इस सृष्टि की शुरुआत से है।
१९ ''**इसलिए** मेरे ख्याल से जो लोग गैरयहूदियों में से परमेश्वर की तरफ मुड़ रहे हैं, उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए
२० **लेकिन** यह कि हम उन्हें यह लिखें, कि मूर्ति से अशुद्ध किया हुआ खाना न खाएँ, अनैतिक और अस्वभाविक यौन
२१ सम्बन्ध से बचें, गला घोटे हुए पशुओं और पशुओं के रक्त से अलग रहें। **क्योंकि** पुराने समयों से हर एक शहर
२२ में मूसा के नियमशास्त्र को सब्त के दिन प्रार्थना भवन में पढ़ा जाता रहा है'' **तब** प्रेरितों और बुजुर्ग अगुवों और पूरी
मण्डली की राय से वहीं से कुछ लोगों को चुनकर पौलुस बरनबास के साथ अन्तकिया भेजने का फैसला लिया गया।
२३ इनमें यहूदा जो बरसबा और सीलास खास अगुवे थे। **उन्होंने** उनके हाथ यह चिट्ठी भेजी : प्रेरित अगुवे और भाई
२४ लोग अन्ताकिया, सीरिया और किलकिया के गैरयहूदियों में से विश्वास में आने वालों को सलाम कहते हैं। **जब** से हमने
सुना है कि हममें से कुछ ने हमारे बिना हुकुम के अपनी बातों से तुम्हें घबरा दिया। उन्होने कहा, ''खतना कराओ और

शुद्ध करें। परमेश्वर की मंजूरी पाने के लिए उन्हें और कुछ करने की ज़रुरत नहीं थी। मत्ती ५:८ में भीतरी शुद्धता की बात है।

१५:१० जब यीशु अपनी मर्जी को दिखा देते हैं तब उसके खिलाफ में जाना और परमेश्वर के तरीकों की शिकायत करना परमेश्वर को परखना है। देखें मत्ती ४:७; निर्ग १७:७। गल ५:१ में नियमशास्त्र को 'बन्धन का बोझ' कहा गया है। ये दोनों संदेशवाहक जानते थे कि यीशु का ''बोझ'' काफी था (मत्ती ११:२६,३०)। यह भी कि यीशु से मिलने वाली ज़िम्मेदारी, बन्धन या गुलामी लाने वाले बोझ से बिल्कुल फर्क थी।

१५:११ इस खास विषय पर पतरस और पौलुस एक मत थे (११:४३; १३:३८,३९; रोमि ३:२१-२४; गल २:१६; रफि २:८,९)

१५:१२ यहूदियों में से निकले यीशु के लोगों को यह बताया जा रहा था, कि जैसे यीशु का काम उनके बीच में है, ''गैरयहूदियों'' (जो मूसा की किताबों को नहीं जानते) में भी यह काम चल रहा है।

१५:१३ देखें १२:१७; २१:१८; गल १:१९। यह याकूब यीशु का आधा भाई और यरुशलेम मण्डली का लीडर था।

१५:१४ पतरस का दूसरा नाम शिमोन था।
''अपने नाम के लिये एक लोग अलग किये''-इस काम को आज भी यीशु कर रहे हैं। मत्ती १६:१८ में ''चर्च' मण्डली का मतलब देखें।

१५:१५-१८ याकूब ने कहा था कि ओल्ड टेस्टामेन्ट के भविष्द्वक्ताओं ने गैरयहूदियों के बदलाव के बारे में कहा था। वह आमोस ९:११,१२ की तरफ इशारा करता है (नोट्स देखे)। ऐसा लगता नहीं है कि इसका मतलब यह रहा होगा कि यह भविष्यद्वाणी पूरी हो चुकी है । यह इतना दिखाता है कि गैरयहूदियों का यीशु को अपनाना कोई अजीब बात नहीं थी। यह परमेश्वर के वचन के खिलाफ भी नहीं थी।

१५:१९ वह पतरस से सहमत था (पद १०)। इस बात की कोई ज़रुरत नहीं थी कि गैरयहूदियों से आए विश्वासियों के ऊपर नियमशास्त्र को लादा जाए।

१५:२०,२१ जिन बातों के बारे में याकूब बतलाता है वे सब बातें यूनानियों और रोमी लोगों में प्रचलित थीं लेकिन ओल्ड टेस्टामेन्ट में मना की गयी थीं। जहाँ जहाँ शुभसंदेश पहुँचाया गया था, जहाँ उन्होंने जाकर हर शहर में वचन दिया वहाँ हर सातवें दिन यहूदी आराधनालय में इसे पढ़ा जाता था (१३:१४; १४:१)। याकूब और दूसरे यहूदी ओल्ड टेस्टामेन्ट में मना की गयी बातों को जानते थे। उसका मतलब यह था कि गैरयहूदी यीशु के मानने वालों को वे बातें नहीं करनी चाहिए जिनसे यहूदियों को दुख पहुँचता है और जिनसे वे नफरत करते हैं।

यही सिद्धांत सभी लोगों को अपनाना चाहिए चाहे वे किसी भी तरह के लोगों के बीच रह रहे हों। तुलना करें १ कुरि. ९:१९-२३; १०:३२; २ कुरि ६:३ रक्त सहित माँस खाने की प्रथा मूसा के नियम शास्त्र दिए जाने से पहले थी (उत्पत्ति ९:४)। सेक्स सम्बन्धी बुराईयों को बाईबल में हर जगह बुरा कहा गया है और विश्वासियों की ज़िन्दगी में उसको कोई जगह नहीं होनी चाहिए (निर्ग. २०:१४; मत्ती ५:२७,२८; गल ५:१९-२१; इफि ५:३)। मूर्ति के सामने चढ़ाए गए खाने के बारे मे देखें १ कुरि. ८:१, ४,१०; १०:१९,२८; प्रका २:१४,२०।

१५:२२ सीलास के सम्बन्ध में दूसरे पद - ४०; २ कुरि. १:१९; थिस्स १:१,२; २ थिस्स १:१; १ पत ५:१२।

१५:२३ अन्ताकिया, सीरि़या और किलकिया के राज्यों का खास शहर था। वहीं नियमशास्त्र के बारे में मतभेद उठा था (पद १)

१५:२४ उन्होंने गैरयहूदी विश्वासियों को यह आश्वासन दिया कि जिस गलत शिक्षा के बारे में उन्होंने सुना था उसमें यीशु के संदेश देनेवालों का हाथ नहीं था।

२५ नियमशास्त्र को मानो"। जबकि हमने ऐसा कोई आदेश दिया ही नहीं था। **एक** मत होकर हम को यह अच्छा लगा
२६ कि अपने प्रिय बरनबास और पौलुस के साथ कुछ लोगों को चुनकर तुम्हारे पास भेजें। **ये** वे लोग हैं, जिन्होंने हमारे
२७ स्वामी यीशु मसीह के नाम के लिए अपने जीवन को जोख़िम में डाल दिया था **इसीलिए** हमने यहूदा और सीलास
२८ को भेज दिया है, वे खुद भी तुम्हे ये बातें बतलाएँगे। **क्योंकि** पवित्र आत्मा को और हमें यही अच्छा लगा कि कुछ
२९ ज़रुरी बातों के अलावा तुम पर कुछ और बोझ न डालें। **मूर्ति** के सामने चढ़ायी हुयी चीज़ों, खून, गला छोटे पशुओं
३० और व्यभिचार से बचे रहो। अगर तुम अपने आप को इन बातों से बचाए रखोगे तो तुम्हारा भला होगा।" **उन्हें** भेजे
३१ जाने पर वे अन्ताकिया आए। जब उन्होंने सभा इकट्ठा किया, तब वह चिट्ठी भी दे दी। **उसको** पढ़कर, उन्हें बड़ी
३२ खुशी हुयी और हिम्मत मिली। **यहूदा** और सिलास ने, जो खुद भविष्यद्वक्ता थे उन्हें हिम्मत दी और मज़बूत किया।
३३,३४ **कुछ** समय वहाँ पर रुकने के बाद भाईयों ने उन्हे शान्ति के साथ प्रेरितों के पास भेज दिया। **फिर** भी सीलास को
३५ यह ठीक लगा कि वहीं ठहर जाए। **पौलुस** और बरनबास भी अन्ताकिया में ठहर गए और अन्य दूसरों के साथ शिक्षा
३६ और संदेश देते रहे। **कुछ** दिनों के बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, "चलो, उन शहरों में जाएँ, जहाँ हमने संदेश
३७ सुनाया था और हमारे भाई लोग रहते है" **यूहन्ना** ने यह इरादा कर लिया था कि मरकुस जिसे बरनबास भी कहते
३८,३९ हैं; अपने साथ ले जाए। **इस** व्यक्ति ने प्रेरितों को पंफूलिया में छोड़ दिया था और उनके साथ न गया था। **इसलिए**
४० पौलुस ने उसे अपने साथ न ले जाना चाहा। **उन** दोनों के बीच आपसी मतभेद इतना हुआ कि उन दोनों ने अपना
४१ रास्ता लिया। बरनबास मरकुस को लेकर कुप्रुस चला गया **और** पौलुस ने सीलास को अपने साथ लिया। भाइयों ने इन
१६ दोनों दलों को आशीष वचन से विदा किया। **फिर** वह दिरने और लुस्त्रा आया। वहाँ उसकी मुलाकात तिमोथी नामक
२ शिष्य से हुयी। वह यीशु की उस शिष्या का बेटा था, जो पहले यहूदी मत की थी। लुस्त्रा और इकिनियुम में तिमोथी
३ का अच्छा नाम था। **पौलुस** उसे अपने साथ ले जाना चाहता था, इसलिए उस क्षेत्र के यहूदियों को खुश करने के लिए

१५:२८ वे इस बात से कायल थे कि पवित्र आत्मा ने उन्हें मिलकर एक फैसला लेने के लिए अगुवाई की।

१५:२९ यहाँ ध्यान दें कि गैरयहूदियों में से आए मसीहियों को सब्त से लेना देना नहीं था। यहाँ तक कि यहूदी विश्वासी भी सहमत थे कि गैरयहूदी विश्वासियों को सब्त का दिन नहीं मानना है।

१५:३१ यह बढ़ियाँ बात थी कि जिस शिक्षा ने उन्हें परेशान किया (पद १,५) वह सही नहीं थी।

१५:३२ उत्पत्ति २०:७ में भविष्यद्वक्ताओं पर नोट्स देखें।

१५:३५ कुछ समय के लिए, गलत शिक्षा पिछड़ गयी। लेकिन इसी शिक्षा ने गलातिया की मण्डलियों में गड़बड़ी पैदा की। समय समय पर ऐसी शिक्षाएँ मण्डलियों में फैलती हैं।

१५:३६ पौलुस के लिए यह काफी नहीं था कि दूसरों को खुशी की खबर (सुसमाचार) सुनाए और हमेशा के लिए छोड़ दे। उसके पास चरवाहे का मन था (२कुरि. ११:२८,२९)। हर एक मसीह के सेवक के लिए वही नमूना है।

१५:३७,३८ देखें १३:१३। मरकुस बरनबास का रिश्तेदार था (कुल ४:१०)। इसी से उस पर यह ज़ोर पड़ा होगा, कि वे उसे अपने साथ लें। कभी-कभी परमेश्वर के लोगों के बीच रिश्तेदारी का ज़्यादा ध्यान रखा जाता है। जो नाकामयाब भी होते हैं उन्हें जगह दी जाती है और काम खराब होता है। पौलुस का कहना यह था कि जो इन्सान भरोसेमन्द नहीं है, उसे खास काम में हिस्सा नहीं देना चाहिए।

यहाँ पर पौलुस के फैसले से मरकुस को परमेश्वर के काम में वफादारी के बारे में सीखने के लिए मिला। साथ ही यह कि वह आनेवाले दिनों में काम का इन्सान बनें। (फिलेमोन २४; २ तिमो. ४:११)। यह बात सही है कि पौलुस जैसे व्यक्ति के द्वारा नकारे जाने का असर मरकुस पर हो सकता था। इससे उसे प्रेरणा भी मिली होती कि अपने मन को जाँचता।

१५:३९ खरा जीवन जीने वाले लोगों में आपस में मतभेद हो सकता है। यह नहीं कि ये मतभेद अच्छे हैं। पौलुस जैसा इन्सान जब एक बात को सही देखता था तो उसे नज़रअन्दाज़ नहीं करता था। प्रेरितों के काम की किताब में यहाँ बार बरनबास के बारे में पढ़ते हैं ।

१५:४० ऐसा लगता है कि अन्तकिया की मण्डली बरनबास के साथ पौलुस की इस असहमति में पौलुस की तरफ थी। यहाँ पौलुस और सीलास को भेजा गया लेकिन बरनबास एवं मरकुस को भेजने के बारे में कुछ नहीं है। यह बात ध्यान देने लायक है भी। यह भी याद रखें कि परमेश्वर ने यहाँ पौलुस को एक नमूना करके रखा है, बरनबास को नहीं। - फिलि ३:१७; १ कुरि. ४:१६; ११:१; २ थिस्स ३:८,९।

१५:४१ सीधा और ज़रुरत के लायक वचन जब दिया जाता है तो मण्डली मजबूत होती है।

१६:१ देखें १४:६ यह कोई आम बात नही थी कि यहूदी और यूनानी शादी करें। तिमोथी की माँ यीशु को मानने वाली थी (२ तिमु. १:५)।

पौलुस के काम में तिमोथी एक खास व्यक्ति था - १७:१४,१५; १८:५; १९:२२; २०:४; रोमि १६:२१; २ कुरि. १:१; ४:१७; फिलि १:१; कुलु १:१; १ थिस्स १:१; २ थिस्स १:१; १ तिमो १:२; २ तिमो. १:२। जिस जगह (शहर) में उस पर पत्थरवाह किया गया और मरा सा हो गया, वहीं उसकी मुलाकात तिमोथी से हुयी थी।

१६:३ शायद तिमोथी के पिता के यूनानी होने की वजह से उसका खतना नही किया गया था। उसे यहूदी मत का ज्ञान था (२ तिमो ३:१५)। उसकी माँ के यहूदी होने की वजह से उसे यहूदी समझा गया। उसका खतना करके पौलुस १५:१,५ में बतायी गलती नहीं कर रहा

४ उसने उसका खतना करवाया। उन सभी को मालूम था कि उसका पिता यूनानी है। **जब** वे शहरों से होकर गुज़र रहे
५ थे, तब उन्होंने उन्हें उन बातों को करने के लिए कहा जिनका निर्णय यरुशलेमी प्रेरितों और अगुवों ने लिया था। **इसलिए**
६ मण्डलियाँ विश्वास में मज़बूत होती गयीं और हर दिन संख्या मे बढ़ती गयीं। **जब** वे फ्रिगिया और गलातिया से गुज़रे,
७ पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया प्रान्त में शुभसंदेश देने को मना किया। **जब** वे मूसिया आए, तब बितूनिया में प्रवेश करना
८ चाहा, लेकिन पवित्र आत्मा ने उन्हें ऐसा करने से मना किया। **मूसिया** से होते हुए उन्होंने बितूनिया में प्रवेश करना
९ चाहा, लेकिन पवित्र आत्मा ने उन्हें ऐसा करने से रोका। मूसिया से होते हुए वे त्रोआस आ पहुँचे। **रात** में पौलुस
ने एक दर्शन देखाः मकिदुनिया का एक व्यक्ति खड़ा होकर बिनती कर रहा था ''मकिदुनिया आकर हमारी मदद करो''।
१० **पौलुस** को यह दर्शन मिलते ही हमने तुरन्त मकिदुनिया जाने की कोशिश की, यह जानते हुए कि यीशु ने उन्हें शुभसंदेश
११ देने के लिए हमें बुलाया है। **इसलिए** त्रोआस से निकलकर हम सीधे समोथ्रेस चल दिए और दूसरे दिन नियापुलिस
१२ **वहाँ** से फिलिप्पी जो कि रोमन कॉलोनी के मकिदुनिया के उस हिस्से का खास शहर है। उस शहर में हम कुछ दिन
१३ ठहर गए। **सब्त** के दिन हम शहर से बाहर नदी के किनारे पहुँचे, जहाँ प्रायः प्रार्थना की जाती थी। हम वहाँ बैठकर
१४ उन स्त्रियों से बातचीत करने लगे जो वहाँ पर बैठी हुयी थीं। **थुआतीरा** शहर की बैंजनी वस्त्र बेचनेवाली, लुदिया नाम
की एक स्त्री ने जो परमेश्वर की उपासक थी हमारी बातें सुनी। यीशु ने उसके मन को खोला, ताकि जो बातें पौलुस
१५ ने कही थीं, उन्हें अपना सके। **जब** उसे और उसके परिवार को बपतिस्मा दिया गया, उसने एक बिनती की, ''यदि
१६ आप लोग मुझे यीशु के प्रति वफादार समझते हैं, मेरे यहाँ आकर ठहरिये''। **जब** हम प्रार्थना के लिए जा रहे थे, हमारी
मुलाकात एक ऐसी गुलाम लड़की से हुयी, जो भविष्य बताने वाली आत्मा से ग्रसित थी। वह लोगों के भविष्य बतलाकर
१७ अपने मालिक के लिए काफी पैसा इकट्ठा कर लिया करती थी। **हमारे** पीछे चिल्लाते हुए यह लड़की यह कहती थी,
१८ ''ये लोग महान परमेश्वर के सेवक हैं, जो हमें मुक्ति का रास्ता बतलाते हैं।'' **वह** बहुत समय तक ऐसा करती रही। पौलुस

था। क्योंकि वह खुद यहूदियों के बीच काम कर रहा था और तिमोथी उसके साथ जाने वाला था। उसका खतना कराया जाना, यहूदियों के बीच काम करने में आसानी पैदा करने वाला था। तुलना करें १ कुरि. ९:१९-२२। पौलुस की यहूदियों के लिए लालसा रोमि ९:१-४ में देखें। उसने खतने के बारे मे अपने मत का हमेशा साफ कर दिया था - गल ६:१५।

१६:४ देखें १५:२३-२९।

१६-५ यरुशलेम में एक मत होने से (अध्याय १५) मण्डलियों को काफी फायदा हुआ।

१६:६ एशिया प्रान्त का नाम था,और इफिसुस राजधानी थी। एशिया माइनर (आज का टर्की) काफी बड़ा हिस्सा था जो कि एशिया के महाद्वीप का एक हिस्सा था। बाद में पौलुस को काफी सफलता यहाँ के काम में मिली थी (१९:१-२२)। अब परमेश्वर के आत्मा ने उसे वहाँ जाने से रोका। किसी भी काम के लिए परमेश्वर का एक समय होता है और उन्हें (स्वर्गिक पिता) को यह भी मालूम है कि किसे कहाँ होना चाहिए। लोगो को मार्गदर्शन मिलने पर आज्ञा माननी चाहिए।

१६:७ एशिया प्रान्त के उत्तर-पूर्व में बितूनिया था। पौलुस वहाँ जाना चाहता था, लेकिन जा न सका। इस बात से हम कुछ सीख सकते हैं। अगुवाई पाकर पौलुस हर जगह खुशखबरी पहुँचाना माँगता था। हमेशा वह नहीं जानता थाः कि उसे कहाँ जाना चाहिए। लेकिन सिर्फ इसी वजह से वह घर पर नहीं बैठा रहा। जैसे वह अपने काम में आगे बढ़ता गया, परमेश्वर उसे अपनी इच्छा बताते गए। ध्यान दें; जिसे पद ६ में पवित्र आत्मा कहा गया है, यहाँ यीशु का आत्मा कहा गया है। यूहन्ना १४:१६,२६; १६:७; रोमि ८:९।

१६:८ यूनान और मकिदुनिया के सामने एशियन सागर था । वहीं त्रोआस एक खास शहर था।

१६:९,१० ''दर्शन'' १८:९,१० में पद देखें । वे लोग परमेश्वरके मार्गदर्शन का इन्तजार कर रहे थे। परमेश्वर ने इस तरह से मार्गदर्शन किया। वे तुरन्त आज्ञा मानते हैं। पहली बार (जहाँ तक हमें मालूम हैं) यीशु का खास संदेशवाहक खुशखबरी को यूरोप ले जाता है। मसीही मत एशिया में शुरु हुआ, पहली मण्डलियाँ पश्चिम एशिया में थीं। ''हम'' शब्द पर ध्यान दें जो पद १० में है - लूका अपने आपको इस दल में शामिल करता है। लूका त्रोआस में पौलुस के साथ हो लेता है।

१६:११ एज़ियन सागर मे सेमोथ्रेस एक टापू था। मकिदुनिया में फिलिप्पी में नियोपोलिस एक बन्दरगाह था। फिलिप्पी एक रोमी शहर था - उस समय रोमी लोग मकिदुनिया पर शासन कर रहे थे।

१६:१३ उन्हें मालूम था, शहर में कोई आराधनालय नहीं था। इसलिए यहूदियों के लिए (और जो यहूदियों से प्रभावित थे) एक आराधना की जगह ढूँढ रहे थे; ताकि सच्चे जीवित प्रभु की बड़ाई करें।

१६:१४ एशिया प्रान्त में युआतीरा था, जहाँ यीशु ने पौलुस को जाने नहीं दिया - पद ६
''प्रार्थना '' - इसका मतलब यह हुआ कि वह बाईबल के परमेश्वर की आराधना करती थी। यीशु के संदेश मानने के लिए उसका मन खुल गया (लूका २४:४५ से तुलना करें)। हर एक जन जो विश्वास से आता है, ऐसा ही उसके जीवन में होता है।

१६:१५ बपतिस्मे पर नोट्स २:३८; मत्ती ३:६; मरकुस १६:१६ में देखें। उसने अपने कामों से अपना विश्वास दिखाया (याकूब २:१४-१९)।

१६:१६ यह ''आत्मा'' एक गंदी आत्मा थी (मत्ती ४:२४ के नोट्स देखें)

१६:१७,१८ दूसरी गंदी आत्माओं के चिल्लाने को देखें - मत्ती ८:२९; मरकुस १:२४; ३:११,१२; ५:७ लूका ४:३३,४१; ८:२८। न ही यीशु न ही यीशु के शिष्य अपने बारे में उनके मुँह से सुनना माँगते थे। यह अच्छी बात नहीं थी कि लोग यह समझें कि यह लड़की मसीह के संदेश के पक्ष में थी। अगर ऐसा लगता है कि शैतान मसीह के सेवकों के साथ सहयोग करता है, तो उसका लक्ष्य होगा सच्चाई

ने बड़ा दुखी होकर उसकी तरफ मुड़कर उस आत्मा से कहा, ''यीशु मसीह के नाम से मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ, कि
१६ उसके भीतर से निकल आओ।'' उसी क्षण वह आत्मा उसमें से निकल आयी। **उसके** मालिकों ने देखा कि फायदा उठाने
की उनकी आशा जाती रही। तब वे पौलुस और सीलास को पकड़ कर बाज़ार तक अधिकारियों तक खींचते ले आए।
२० **मजिस्ट्रेट** लोगों तक उन्हें लाकर कहा, ''ये लोग यहूदी हैं और हमारे शहर में गड़बड़ी फैलाए हुए हैं।
२१,२२ **वे** ऐसी बातें सिखा रहे हैं, जो हम रोमी लोगों को अपनाना या मानना वाजिब नहीं है। **भीड़** उनके खिलाफ उठ खड़ी
२३ हुयी और मजिस्ट्रेट ने अपने कपड़े फाड़े और उनकी पिटाई की आज्ञा दी। **जब** वे उन पर खूब बेंते लगा चुके, तब
२४ उन्हें जेल मे डाल दिया और जेलर को हुकुम दिया कि उनकी रक्षा की जाए। **ऐसा** हुक्म पाकर उसने उन्हें भीतरी कोठरी
२५ में डाल दिया और उनके पैरों को लकड़ी मे जड़ दिया। **बीच** रात में पौलुस और सीलास प्रार्थना करते रहे और गीत
२६ गाते रहे और कैदी उनको सुन रहे थे । **अचानक** ही एक ऐसा भूकम्प आया जिससे जेल की नींव तक हिल गयी।
२७ तुरन्त सभी दरवाज़े खुल गए और हर एक जंजीर खुल कर गिर पड़ी। **जेलर** की नींद खुल गयी। जेल के दरवाज़े खुले
देखकर उसको लगा कि कैदी भाग गए होंगे। तुरन्त उसने अपनी तलवार निकालकर अपने आपको मारना चाहा।
२८,२९ **लेकिन** पौलुस ने ऊँची आवाज़ से चिल्ला कर कहा, ''अपने आपको मत मारो, क्योंकि हम सभी यहीं हैं।'' **तब** जेलर
३० दीपक लेकर डरता काँपता दौड़ता आया और पौलुस, सीलास के कदमों पर गिर पड़ा। **उन्हें** बाहर लाकर उनसे पूछा,
३१ ''श्रीमानजी, मुक्ति पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?'' **उन्होंने** कहा, ''यीशु मसीह पर भरोसा करो। तुम मुक्ति
३२,३३ पा जाओगे और तुम्हारा परिवार भी। **उसे** और जो लोग वहाँ थे उनको, उसने यीशु के विषय में बताया। **रात** ही में
३४ उसने उनके घाव धोए और परिवार सहित उसे बपतिस्मा दिया। **उन्हें** अपने घर लाकर उसने उन्हें खाना खिलाया।
३५ परमेश्वर पर विश्वास करके अपने परिवार सहित उसने खुशी मनायी। **सुबह** होते ही मजिस्ट्रेट ने कुछ अधिकारियों

को बर्बाद करना। पौलुस लोगों की, तलाश में नही रहता था, लेकिन वह इस घटना से थोड़ा परेशान था। दुष्टात्मा निकालने के बारे मे देखें मत्ती ४:२४;; १०:१; आदि।

१६:१९-२१ दौलत वहाँ के लोगों की ईश्वर थी। उन्हें लड़की की सेहत, सच्चाई और इन्साफ से कुछ लेना देना नहीं था। तुलना करें यूहन्ना १२:६ से।

१६:२३ ५:४०; मत्ती २७:२६; २ कुरि.११:२३,२५।

१६:२४ ''जंजीर'' पैरों के लिए छेद बने हुए लकड़ी के गुटके या फिर हाथ और पैरों, दोनों के लिए,ताकि हिल-डुल न सकें।

१६:२५ देखिए यीशु के सच्चे विश्वासी, तकलीफों और सताव को कैसे सह सकते हैं - शाप के बदले प्रार्थना, कड़वाहट और शिकायत के बजाए गीत; उलझन और निराशा के बजाए शान्ति, बदला लेने के बजाए खुशी। तुलना करें ५:४१; मत्ती ५:१०-१२; रोमि ५:३; २ कुरि. १:५; १ पत ४:१३। उन्हें मालूम था। परमेश्वर ने वहाँ तक उनकी अगुवाई की थी (पद १०)। यह भी कि चरवाहा उनकी देखभाल करता हैं। परमेश्वर के पास उनके लिए एक अच्छी योजना है।

१६:२६ पौलुस और सीलास को कुचलने की शैतान की योजना थी। इस तरीके को प्रभु ने इस्तेमाल किया कि अपने सेवकों को बचाए और खुशखबरी को फैलने दे। वह हमेशा ऐसे तरीके इस्तेमाल नहीं करता है (७:५७,५८; १२:१-७)। वह जो तरीके भी इस्तेमाल करे हम मान सकते हैं वे बुद्धिमानी के होंगे, अच्छे होंगे।

१६:२७ १२:१९ देखें।

१६:२८ जिस जेलर ने पौलुस के साथ बुरा व्यवहार किया था उसकी भलाई की बात पौलुस ने सोची थी (२४)। मत्ती ५:४४; रोमि १२:१९-२१ देखें।

१६:२९,३० उसने महसूस किया कि पौलुस और सीलास परमेश्वर के सच्चे संदेशवाहक हैं। पवित्रात्मा ने उसे, उसकी ज़रुरत के बारे में दिखा दिया था। एक इन्सान अगर कोई बहुत ज़रुरी सवाल पूछ सकता है, तो वही था जो उसने पूछा था। अगर अधिक लोग ईमानदारी से परमेश्वर के सेवकों से पूछें तो ज़्यादा लोग सच्चाई की पहचान कर पाएंगे। न पूछने से और उत्तर न पाने की इच्छा की वजह से बहुत से लोग अज्ञानता और अँधेरे मे टटोलते रहते हैं।

१६:३१ कोई व्यक्ति, कहीं भी, जो मुक्ति का रास्ता चाहता है, उसके लिए जवाब है। यह वह जवाब है जो यीशु ने खुद और उनके संदेश वाहकों ने बार-बार दिया - १३:३९; यूहन्ना १:१२; ३:१६,३६; ५:२४; ६:४७ रोमि ५:१; गल २:१६; इफि २:८,९ आदि। मन बदलाव के समय ही से सच्चा विश्वास शुरु होता है। पौलुस यहाँ मन बदलाव की, बात नहीं करता है, क्योंकि साफ दिख रहा है कि वहाँ ऐसा हो रहा था। जब लोगों को इसकी जरुरत थी तब लोग इस बात से पीछे नहीं हटें।-२:३८;१७:३०; मत्ती ३:२ आदि। जो लोग मन बदलते हैं उनके लिए शब्द ''विश्वास करो'' इस्तेमाल किया गया है। जो लोग अभी तक बदलाव के लिए तैयार नहीं हैं, उनके लिए शब्द है ''मन बदलो''। यहाँ पौलुस उसके खानदान के बारे में भी कहता है। जब विश्वास है, स्वर्गिक पिता चाहते है कि पूरा परिवार बदल जाए - ११:१४; उत्पत्ति ७:१; यहोशू २:११-१३; ६:२२,२३; इब्रा ११:७।

१६:३२ उन्होंने एक या दो पद देने से कहीं ज्यादा किया - उन्होंने खुशी की खबर (शुभसंदेश) को समझाया।

१६:३३,३४ मन बदलाव के नतीजे उसकी ज़िन्दगी में दिख रहे थे (मत्ती ३:८)। उसके कामों से उसके अन्दर का विश्वास और बदलाव दिख रहा था (याकूब २:१४-१९)। विश्वास और खुशी में सम्बन्ध देखें और ३४ वें तथा २७-२९ के बीच भी। यही मसीह कर सकते हैं और लोगों की ज़िन्दगी में करते भी हैं - २ कुरि. ५:१७

१६:३५ शहर की शान्ति को बिगाड़ने के सम्बन्ध में दी जाने वाली सज़ा उनके हिसाब से जायज़ थी।

३६ को भेजा कि वे कहें, ''इन लोगों को जाने दिया जाए'' **जेलर** ने कहा, ''मजिस्ट्रेट ने यह आज्ञा दी है, कि तुम लोगों
३७ को छोड़ दिया जाए। इसलिए यहाँ से शान्ति से चले जाओ।'' **लेकिन** पौलुस ने उत्तर दिया, ''बिना किसी जाँच पड़ताल
उन्होंने सबके सामने हमें मारा है। हम रोमी नागरिक हैं। हमें जेल में उन्होंने डाला है। अब क्या चुपचाप से वे हमें
३८ भेजना चाहते हैं? ऐसा नहीं हो सकता है। उन्हें खुद आकर हमें विदा करने को कहो। **आफिसर** लोगों ने यह बात
३९ मजिस्ट्रेट लोगों को बता दी। जब उन्हें यह मालूम पड़ा कि वे रोमी नागरिक हैं, तो डरने लगे। **आकर** उन्होंने बिनती
४० की और बाहर निकालने के बाद कहा कि शहर से चले जाएँ। **वे** जेल से निकल कर लुदिया के घर पहुँचे। वहाँ भाई-बहनों
१७ से मिलकर उन्हें हिम्मत दिलायी और आगे बढ़ गए। **वे** एम्फिपोलिस और अपोलेनिया से गुज़रते हुए थिस्सुलोनिका पहुँचे
२ जहाँ एक यहूदी आराधना का घर था। **जैसा** पौलस का तरीका था, वह आराधना घर में तीन सब्त के दिन जाता रहा
३ और बाईबल में से उनके साथ बातचीत करता रहा। **समझाते** हुए और दिखाते हुए कि मसीह का दुख उठाना और
४ मरे हुओं में से जी उठना ज़रुरी है उसने कहा, ''मैं जिस यीशु के बारे में सिख रहा हूँ, वही मसीह हैं।'' **कुछ** लोग
कायल हो गए और पौलुस सीलास से मिल गए। उन्हीं के साथ कुछ यूनानी भक्त और सम्माननीय महिलाएँ थी।
५ **जिन** यहूदियों को कायल नहीं किया जा सका उन्होंने ईर्ष्या से भरकर बाज़ार से कुछ फालतू लोगों को लेकर भीड़ इकट्ठी
६ कर ली। उन्होंने शहर में हुल्लड़ मचाया और जेसन के घर घुसकर बाहर लोगों के बीच लाना चाहा। **जब** वे उन्हें पा
नहीं सके तो जेसन और कुछ भाइयों-बहनों को शहर के अधिकारियों के पास खींच लाए और कहने लगे, ''ये जिन्होंने
७ इस दुनिया को उलट-पुलट किया है, यहाँ भी आ गए हैं। **जेसन** उनकी आवभगत कर रहा है। वे सभी कैसर की आज्ञा
८ के खिलाफ़ जा रहे हैं। वे कहते हैं कि यीशु नाम के एक दूसरे राजा हैं।'' **जब** उन्होंने ये सब बातें सुनी, तो लोगों
९ और शहर के अधिकारियों को उकसाया। **जेसन** और दूसरों से ज़मानत लेने के बाद, उन्होंने उन सभी को जाने दिया।
१०,११ **भाईयों** ने पौलुस और सीलास को रात मे बिरीया भेज दिया। वहाँ पहुँचने पर वे आराधनालय पहुँचे। **थिस्सलुनीके**
के यहूदियों से ज्यादा यहाँ के यहूदी समझदार थे। इसलिए कि उन्होंने मन की तैयारी से संदेश को कबूल किया।
१२ वे हर दिन अपने मत की पुस्तकों मे ढूँढते रहे कि देखें कि जैसा पौलुस कह रहा है, वैसा सच है या नहीं। **इसलिए**
उनमें से बहुत से लोगों ने विश्वास किया, बहुत सी ऊँचे खानदान की कहलानेवाली यूनानी महिलाओं ने भी और साथ
१३ ही थोड़े बहुत पुरुषों ने भी। **जब** थिस्सुलनीके, के यहूदियों को यह मालूम हुआ कि पौलुस बिरीया में परमेश्वर यहोवा
१४ का संदेश दिया करता था, वे वहाँ आकर भी गड़बड़ी फैलाने लगे। **इसलिए** तुरन्त भाइयों ने पौलुस को समुद्र के किनारे
१५ तक भेज दिया, लेकिन सीलास और तिमोथी वहीं रह गए। **पौलुस** के पहुँचानेवाले उसे एथेन्स तक ले गये और सीलास

१६:३७ पौलुस बदला नहीं लेना चाहता था, न ही अपने हक के लिए लड़ना। मजिस्ट्रेट लोगों ने बेइन्साफी की थी। पौलुस चाहता था कि जनता के सामने वे यह मान लें। ऐसा वह अपने फायदे के लिए नहीं लेकिन उनके और उस वचन के लिए कह रहा था।

१६:३८ यह कानून के खिलाफ था कि, कि रोमी नागरिक की पिटाई की जाए - २२:२५-२६। उन्हें मालूम था कि पौलुस और सीलास रोमी नागरिक थे। लेकिन उन्हें पिटाई से पहले यह पूछताछ करनी चाहिए थी।

१७:१ फिलिप्पी के पश्चिम में करीब १५० किमी दूर थिस्सलुनीके था।
''आराधनालय'' मत्ती ४:२३।

१६:२ देखिए १३:५,१४; १४:१।

१७:३ लूका २४:२५-२७; ४५-४७।

१७:४ १०:२; १३:५० देखें।

१७:५ ५:१७; १३:४५ देखें।

१७:६,७ ,१६:२०,२१; यूहन्ना १६:१२-१६ देखें। जो लोग सत्य का संदेश देते हैं, उन्हें समस्या पैदा करनेवाला कहा जाता है। सच पूछें तो वे सुलह करवाने वाले हैं - परमेश्वर और इन्सान के बीच सुलह करवानेवाले। मत्ती ५:९; १०:३४-३६; २ कुरि. ५:१८-२०)। इस दुनिया को जिस बात की ज़रुरत है वह उसे नहीं चाहती है। जो यह देना चाहते हैं, उनसे नफरत करती है।

१७:१० बीरिया थिस्सलुनीके के पश्चिम में १०० किमी दूरी पर है।

१७:११,१२ यूनानी शब्द जो ''समझदार '' है, इसका मतलब है, एक शाही खानदान में पैदा होना। बाद में इसका मतलब भले गुणों वाला हो गया - दूसरे के लिए दयालु, पूर्वधारणा से अलग, सच्चाई के लिए खुला। बिरिया में इन लोगों ने अपने अच्छे गुणों को इस तरह दिखाया - यीशु के लोगों की बात सुनकर, बाईबल खोलकर मिलान करते हुए और समझने के बाद भरोसा करने से। आइए, हम सभी अपने दिमाग से अपनी सोच निकाल दें।, सकरी विचारधारा छोड़ दें। दूसरों का डर और सच्चाई का डर निकाल दें। इन बिरियनवासी का नमूना अपनाएँ। इसमें हमारा फायदा है।

१७:१३-१४:१६, मत्ती २३:१३ देखें। ईर्ष्या और गलत सोच की वजह से, लोग क्या-क्या बुराई नहीं करते हैं।

१७:१४ पौलुस दल का प्रधान और उनकी तरफ से बोलनेवाला था। इसीलिए वह खतरे में था। डर की वजह से वह भागा नहीं (१४:६,१९,२०)। लेकिन ऐसा करना समझदारी थी इसलिए।

१७:१५ थिस्सलुनीके के दक्षिण मे ३०० कि.मी. दूर एथेन्स था। यह पृथ्वी पर एक मशहूर शहर था। प्रजातन्त्र का जन्मस्थान, कला, भाषा, साहित्य, विज्ञान और दर्शन का केन्द्र था। यह सुकरात और प्लेटो की जन्मभूमि थी। अरस्तु, इपीक्यूरस और ज़ेनो ने इसे अपना घर बनाया था। पौलुस के समय में रोमी इस पर शासन करते थे। यह संस्कृति और ज्ञान का घर था।

१६ और तीमुथियुस के लिये यह आज्ञा लेकर विदा हुए, कि मेरे पास बहुत शीघ्र आओ । **पौलुस** उनके लिए एथेन्स में
१७ इन्तज़ार कर रहा था, उस शहर को मूर्तियों से भरा देखकर भीतर ही भीतर बहुत वह व्याकुल हो उठा। **इसीलिए** यहूदियों
के साथ आराधनालय और बाज़ार में उन गैर यहूदियों से वाद-विवाद किया करता था, जो उसके पास आया करते थे।
१८ **तब** कुछ इपीक्यूरियन और स्टौइक दर्शन शास्त्रियों ने उसका सामना किया। उनमें से कुछ ने कहा, यह बड़बड़िया क्या
कहना चाहता है।" दूसरे लोगों ने कहा, "वह शायद विदेशियों के ईश्वरों की चर्चा कर रहा है।" ऐसा इसलिए था,
१९ क्योंकि वह यीशु की खुशखबरी और यीशु के जी उठने की बात किया करता था। **और** वे यह कहते हुए उसे आरयुपिगुस
२० तक लाए, "क्या हम उस नयी शिक्षा के बार में जान सकते हैं, जो **तुम** हमें दे रहे हो? तुम हमें कुछ अजीब बातें
२१ बतला रहे हो, इसलिए हम उन्हें जानना चाहते हैं।" **वहाँ** पर सभी अथेनी और विदेशी एक दूसरे को नयी बातें बताने
२२ और सुनने के अलावा कुछ नहीं करते थे। **तब** पौलुस अरियुपगुस के बीच खड़े होकर कहने लगा, ऐथेन्स के लोगो, मुझे
२३ ऐसा लगता है कि तुम बहुत धार्मिक स्वभाव के हो। **क्योंकि** मैं जब यहाँ घूम रहा था तो तुम्हारी उपासना की चीज़ों
में से एक पर यह लिखा हुआ देखाः अनजाने परमेश्वर के लिए "इसलिए मैं तुम्हें उन के बारे में बताना चाहता हूँ, जिसे
२४ तुम बिना जाने पूजते हो। **जिस** परमेश्वर ने इस दुनिया और जो कुछ इस में है, उसे बनाया है। और इसलिए कि, कि
२५ वह स्वर्ग और पृथ्वी के मालिक हैं, हाथ से बनाए हुए मन्दिरों मे नहीं रहते हैं। **और** इसलिए कि वही सबको ज़िन्दगी,
२६ सांस और सब कुछ देते हैं, उन्हें इन्सान के हाथों की सेवा या किसी और चीज़ की ज़रुरत नहीं। **उन्हीं** ने एक ही खून

१७:१६ एथेन्स में इस इन्सानी शान और ज्ञान के बीच, पौलुस ने दुष्ट लोगों को देखा और ऐसों को भी जो झूठ के पीछे चले जा रहे थे। मूर्तियों को देखकर पौलुस को बड़ी ज़लजलाहट हुयी थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि वह मूर्तिपूजा के बारे में परमेश्वर का रुख समझता था। वह मसीह, उसकी शान और उन लोगों से मोहब्बत रखता था जो मूर्तिपूजा में बन्धे हुए थे (निर्ग २५:१-६; भजन ११५:२-८; यशा ४० १८-२६; ४४:६-११; २ कुरि. ५:१३,१४)

रोमि १:१८-२५ में पौलुस उस काली सच्चाई का पर्दाफाश करता है जो शान और खूबसूरती के पीछे चमकने वाली बातों के पीछे हैं। एथेन्स में वह आत्मिक अच्छेपन और बुद्धि व योग्यता की मिलावट को देखकर बहुत दुखी हुआ। यही बात हम हर जगह आज देखते हैं।

१७:१७ जहाँ कहीं उसे मौका मिलता था, वह सच्चाई को बेधड़क बतलाता था। तुलना करें ४:२०; यिर्म २०:६।

१७:१८ ३४१-२७० बी.सी. में इपीक्यूरस ने यह सिखाया था कि मज़ा करना ज़िन्दगी का सबसे बड़ा मकसद है। उसके हिसाब से सबसे श्रेष्ठ मज़ा देह का नहीं है लेकिन दिमाग का है। एक ऐसा शांन्त जीवन जो पीड़ा, परेशान करनेवाली इच्छाओं, डरों और मौत की चिन्ता से परे है। वह मानता था कि ईश्वर बहुत से हैं, लेकिन उन्हें इन्सान की ज़िन्दगी से कुछ लेना देना नहीं है। पौलुस के समय में लोगों ने इपीक्यूरस की तालीम को बिगाड़ डाला। वे लोग देह के मज़े और चाह को ज्यादा तूल देने लगे।

३४०-२६५ बी.सी. में ज़ेनो द्वारा स्टौइक फिलॉस्फी की नींव डाली गयी। उसने सिखाया था कि इन्सान को चाहिए कि प्रकृति के साथ तालमेल का जीवन जीए । यह भी कि तर्क या डिज़ाइन इस प्रकृति में सबसे ऊँची चीज़ है। वह मानता था कि परमात्मा और प्रकृति मिले हुए हैं। दोनों एक दूसरे के बिना रह नहीं सकते। वह परमेश्वर को दुनिया की आत्मा मानता था। वह यह भी मानता था कि अपने तर्क और खुद की काबलियत इन्सान में हैं।

इन दोनों विचारकों के माननेवाले पौलुस को अजीब नज़र से देखते थे और उसे "बकबक करनेवाला" समझते थे। वे अपनी सीख और पौलुस की तालीम में फर्क नहीं समझ पा रहे थे। दर्शन, वास्तविकता की प्रकृति के बारे में मनुष्य कल्पना है, लेकिन मसीह की खुशखबरी सत्य का खुलासा है। यह भी कि इन्सान इस रोशनी में कैसे जिए। (१ कुरि १:१७-२५; कुलु २:८)।

१७:१९ अयुरोपगुस एथेन्स में सबसे बड़ी अदालत थी। धार्मिक मामलों में उनकी पहुँच सभी जगह थी। उसे यह हक था कि पौलुस को प्रचार की आज़ादी दे या न दे।

१७:२१ इनमे से ज्यादातर लोग सच्चाई की खोज में नही लेकिन कुछ नयी बात की खोज में थे।

१७:२२ यह बिल्कुल सही था। लेकिन उनका मत सच्चाई पर नहीं टिका हुआ था
"धार्मिक " इस यूनानी शब्द का सही मतलब है ईश्वरों (देवी देवताओं के लिए डर या इज़्जत होना)।

१७:२३ रोमी राज्य में लोगों ने जगह-जगह ऐसे स्थान बनाए थे। वे किसी देवता या परमेश्वर से चूकना नही माँगते थे, जो उन्हें मदद दे सकता या नुकसान पहुँचा सकता था। विचारकों ने बताया कि पौलुस विदेशी "देवताओं" को ऊँचा उठा रहा है पद (१८)। "नहीं" पौलुस कहता है, "मैं उस की खुशी की खबर सुनाता हूँ जिस के नाम का एक पत्थर (वेदी) शहर में है - उसे तुम नहीं जानते लेकिन वही सच्चा जीवित परमेश्वर है।"

१७:२४ पौलुस कहता है, कि सच्चे परमेश्वर इस सृष्टि के बनाने वाले हैं। वह और कोई देवी देवता नही है। वह अपने ज्ञान को बाईबल की नेंव पर रखता है - उत्पत्ति १:१; निर्गमन २०:११; भजन ८:३; १६:१; यशा ४०:२८; ४२:५; ४५:१२,१८। सच्चे सृष्टिकर्ता इन्सान के हाथ के बने भवन में नहीं रहते हैं, - १ राजा ८:२७; यशा ६६:१,२।

१७:२५ पौलुस ने सच्चे परमेश्वर और मूर्तियों मे अन्तर बतलाया। इन्सान मूर्तियों की देखभाल करता है। परमेश्वर की अपनी कोई ज़रुरत नहीं है। (भजन ५०:६-१५)। जो कुछ लोगों के पास है, वह सब परमेश्वर ने दिया है। १४:१५-१७; १ तिमो. ६:१७)।

१७:२६ एक आदम था (उत्पत्ति १:२६-२८)। परमेश्वर ने पहले ही से देशों के ऊँचाई और निचाई में जाना निश्चित किया था। ऐसे अवसरों को भी जब वे उन्हें पा सकते थे। वे सीमाएँ भी जिनमें उन्हे रहना था।

२७ से सारी ज़मीन पर रहनेवाले सभी लोगों को बनाया और उनके समयों तथा रहने की सरहद को ठहराया। **ताकि** वे
२८ अपने परमेश्वर की चाहत रखें और उन तक पहुँच कर उन्हें पा लें, क्योंकि वह हममें से किसी से दूर नहीं हैं। **क्योंकि**
उन्हीं में हम रहते हैं, चलते-फिरते हैं और जीवित पाए जाते हैं। जैसा कि तुम्हारे कुछ कवियों ने कहा है, ''हम सभी
२९ की शुरुआत परमेश्वर आप ही से है।'' **और** क्योंकि हमें परमेश्वर ही ने बनाया है, हमे यह नहीं सोचना चाहिए कि
३० परमेश्वर सोने, चाँदी या पत्थर की तरह हैं, जिन्हें एक आकृति दी जाती है। **ऐसे** नासमझी के समयों को परमेश्वर
३१ ने अनदेखा किया था लेकिन अब सभी जगह सब लोगों को यह हुक्म देते हैं, कि लोग मन बदलें **क्योंकि** उन्होंने एक
दिन निश्चित किया है, जिसमें वह एक इन्सान के ज़रिए ईमानदारी से दुनिया का इन्साफ़ करेंगे। इस इन्सान को मुर्दों में से
३२ जी उठाने के द्वारा उन्होंने इस बात का सबूत दिया है। **जब** इन लोगों ने मरे हुओं में से जी उठने की बात सुनी, तो कुछ
३३ लोगों ने मज़ाक करते हुए कहा,''इस विषय पर हम तुम से फिर कभी सुनेंगें।' **इसलिए** पौलुस उनसे दूर चला गया।
३४ **फिर** भी कुछ लोग उसकी तरफ हो गए और विश्वास भी कर लिया। इन विश्वास करनेवालों में डायोनिसियस, अरियुपगुस
१८ और दमरिस नाम की एक महिला और कुछ दूसरे लोग थे। **इन** बातों के बाद पौलुस ऐथेन्स से कुरिन्थ चला गया।
२ **वहाँ** पर वह अक्विला नामक एक यहूदी से मिला, जो पोन्तुस मे उत्पन्न हुआ था और कुछ दिन पहले अपनी पत्नी
प्रिसिल्ला के साथ इटली से नया आया था। ऐसा इसलिए, क्योंकि क्लोडियस ने सभी यहूदियों को आज्ञा दी थी कि वे
३ रोम से चले जाएँ। वह उनके पास गया। **इसलिए** कि दोनों का एक ही रोज़गार था, वह उन्हीं के साथ रहकर काम
४ करता रहा। दोनों ही तम्बू बनाने का काम करते थे। **हर** सब्त के दिन आराधनालय में वह सिखाता रहा और यहूदियों

१७:२७ इस पृथ्वी पर के सभी देशों से बातचीत करने का यह अच्छा मकसद था। ''पहुँच '' का अनुवार अँधेरे में ''टटोलना'' भी हो सकता है। यशा. ६०:२; यूहन्ना १२:४६)। परमेश्वर ने काफी रोशनी उन्हें दी थी कि अगर वे उसे चाहें, तो पा लें (यूहन्ना १:६; रोम १:१६,२०; भजन १६:१-४)।

१७:२८ यहाँ पौलुस दो कवियों की तरफ इशारा करता है, जिन्हें सुननेवाले जानते होंगे। पौलुस शायद उनकी सभी बातों से राज़ी नही था लेकिन उनकी कविताओं में जो सच था, उसे वह ले लेता है, ताकि लोगों के साथ बातचीत में मदद मिले। परमेश्वर हमसे कहीं बहूत दूर नहीं है। तीर्थयात्रा की ज़रुरत नहीं जब इन्सान ईमानदारी से अपने ख्यालों को सृष्टिकर्ता तक उठाता है, वह उन्हें जान सकता है, अगर सच्चे मन से भूखा-प्यासा है। तुलना करें यिर्म. २६:१३।

१७:२९ उत्पत्ति १:२७; निर्गमन २०:४; यशा. ४०:१६,२५।

१७:३० ध्यान दें, मूर्तिपूजा को वह अज्ञानता कहता है।
रोमि १:२१-२३; यशा. ४४:६,१८,२०। ऐथेन्स मे शानदार मन्दिर थे। मूर्तियाँ कला का एक जीता जागता उदाहरण थीं। पौलुस और उसके स्वर्गिक पिता के लिए यह सब ऐथेन्स के लोगो की बुद्धि की कमी दिखाती थी। जहाँ तक परमेश्वर के ज्ञान का सवाल है, उनका ज्ञान बेकार था (तुलना करें १ कुरि. १:१६-२५)। ऐसी बातों से वहाँ के लोग खुश नहीं हो सकते थे। लेकिन वह उस जगह तक पहुँच जाता है, जहाँ पहुचना चाहता था - यह था उनका बदलाव । मन बदलाव पर मत्ती ३:२,८ और लूका १३:१-५ मे देखें। परमेश्वर यह चाहते हैं कि सब जगह लोग मनबदलाव करें- सभी दर्शनशास्त्री, धार्मिक लोग, मूर्तिपूजक, ज्ञान विज्ञान के जानने वाले अधिकारी, आम लोग। ऐसा वह इसलिए करते हैं क्योंकि सभी ने बुरा स्वभाव पाया है (रोमि ३:२३)।सभी को इसके परिणाम से बच जाना चाहिए। वह सभी को बचाना चाहते हैं (यूहन्ना ३:१६; १ तिमा २:४,५; २ पत ३:६)।

१७:३१ सृष्टिकर्ता की सजा के बारे में देखें मत्ती १०:१५; ११:२२,२४; १२:३६; रोमि २:२; १४:१०; २ पत २:६ प्रका १४:७; २०:११-१५। यीशु के जी उठने के बारे में देखें पद १८; २:२४; ३:१५; ४:१०, १३:३०; मत्ती २८:६। यह देखें कि यीशु का जी उठना यह साबित करता है कि स्वर्गिक पिता दुनिया का इन्साफ करेंगे।

१७:३२ उन्होंने अपनी नादानी और सच्चाई के लिए चाह में कमी को दिखाया।

१७:३४ खुशी की खबर का असर जितना एथेन्स मे मिला उतना और कहीं नहीं मिला। गंभीर तरीके से सोचने के बजाए वे छोटे दिमाग और बुद्धि पर घमण्ड करने वाले लोग ज़्यादा थे (पद १८,२१,३२)। लेकिन वह शहर में सबसे बड़ी अदालत के सदस्य को जीत सका।

१८:१ रोम, एलेक्ज़ेन्ड्रिया और अन्ताकिया के बाद कुरिन्थ रोमी साम्राज्य का चौथा सबसे बड़ा शहर था। यह एथेन्स से ७५ कि.मी. दूर था। यह अखाया (ग्रीस) की राजधानी और व्यापार का केन्द्र था। यहाँ यौन के सम्बन्ध में बुराई बहुत ज्यादा थी। १ कुरि. २:१-५ में पौलुस के मन को हम समझते हैं जब वह कुरिन्थ पहुँचता है। शायद उसने सोचा होगा। कि एथेन्स में वह नाकामयाब हुआ और कुरिन्थ में भी होगा। ऐसा लगता है कि उसने भाषण के तरीके को बदला। पौलुस हालात के हिसाब से अपने संदेश को बदल सकता था लेकिन सच्चाई से समझौता किए बगैर।

१८:२ अक्विल्ला का मतलब है ''उकाब''। पुन्तुस एशिया माइनर (तुर्किस्तान) के उत्तरी भाग में था। इटली पश्चिम में था, इसकी राजधानी रोम थी। ''क्लौदियुस'' - ११:२८

१८:३ हालाँकि पौलुस एक भेजा हुआ खास खबर(सुसमाचार) देने वाला था लेकिन अपने रोज़मर्रा की ज़रुरतों के लिए हाथ से काम करना बुरा नहीं समझता था। वह हम सबके लिए एक नमूना था - २०:३४; १ थिस्स २:६; २ थिस्स ३:७,८; १ कुरि. ६:१-१५।

५ तथा गैरयहूदियों को समझाता था । **जब** सीलास और तिमोथी मकिदुनिया से आए, पौलुस आत्मा मे सिखाने की
६ धुन में ही यहूदियों को समझाया कि यीशु ही वह अभिषिक्त हैं, जिनका उन्हें इन्तज़ार है। **जब** उन्होंने उसकी खिलाफत
७ की, निन्दा की, तब उसने अपने कपड़े झाड़ते हुए उनसे कहा, ‘‘तुम्हारा खून तुम्हारे सिर पर हो, मैं निर्दोश हूँ। मैं
८ अब से गैर यहूदियों के पास ही जाऊँगा।’’ **वहाँ** से निकलकर वह जस्तुस नामक व्यक्ति के घर गया जो परमेश्वर को
मानने वाला था। उसका घर आराधनालय के पास ही था। उस आराधनालय के प्रधान क्रिस्पुस ने अपने परिवार
सहित यीशु पर विश्वास किया। साथ ही में बहुत से कुरिन्थवासियों ने भी विश्वास किया और सबको बपतिस्मा दिया
६ गया। **रात** में एक दर्शन के माध्यम से यीशु ने पौलुस से बातचीत की, ‘‘डरना नहीं, बोलते जाओ और ख़ामोश मत
१० हो जाना। **इसलिए** कि मैं तुम्हारे साथ हूँ कोई व्यक्ति तुम्हारे ऊपर हमला करके तुम्हारा नुकसान नहीं कर सकेगा,
११ क्योंकि इसी शहर में मेरे बहुत से लोग हैं’’। **वहाँ** पर वह उनके बीच परमेश्वर की बातों को डेढ़ वर्ष तक सिखाता
१२ रहा। **जब** गैलियो अखाया का हाकिम था, यहूदी लोग एक मत होकर पौलुस के खिलाफ़ उठ खड़े हुए और इन्साफ़
१३ की ज़गह पर लगाए। **वे** कह रहे थे, ‘‘ये लोग दूसरों को इस तरह परमेश्वर की उपासना करने के लिए उकसा रहे
१४ हैं, जो नियमशास्त्र के खिलाफ है।’’ **अब** जब पौलुस अपना मुँह खोलने ही वाला था, कि गैलियो ने यहूदियों से कहा,
१५ ‘‘हे यहूदिया, अगर यह गलत काम या दुष्ट बुरे कामों की बात होती, तो मैं तुम्हारे साथ सह लेता। **लेकिन** यह शब्दों,
नामों और तुम्हारे नियमशास्त्र का विषय है, इसलिए इससे तुम ही निबटो। मैं इन सब बातों में तुम्हारा इन्साफ नहीं
१६,१७ करुँगा।’’ **यह** कहकर उसने उन्हें इन्साफ की जगह से निकाल दिया। **तब** सभी यूनानी लोगों ने सोस्थिनेस को लिया
१८ जो आराधनालय का मुख्य प्रधान था, और उसी जगह के सामने उसकी पिटाई की। **इसके** बाद पौलुस वहाँ कुछ समय
तक रहा और प्रिसकिल्ला और अक्विला के साथ विदाई लेकर जहास से सीरिया को रवाना हुआ। इसलिए कि उसने
१६ प्रण किया था, किंख्रिया में अपना सिर मुण्डवाया। **इफिसुस** आकर उसने उन्हें वही छोड़ दिया, लेकिन खुद
२० आराधनालय जाकर यहूदियों से वाद-विवाद करने लगा। **जब** उन्होंने उससे कुछ और समय तक रुकने के लिए कहा,
२१ तो सलाह न ली, **लेकिन** यह कहते हुए उन्हें छोड़ दिया, ‘‘ज़रुरी है कि मैं आने वाले त्यौहार को यरुशलेम में मनाऊँ।
२२ लेकिन परमेश्वर चाहेंगे, तो मैं तुम्हारे पास वापस लौटूँगा।’’ वहाँ से वह इफिसुस को रवाना हो गया। **कैसरिया** पहुँचने
२२ के बाद उसने मण्डली को शान्ति की आशीष दी और अन्ताकिया को रवाना हुआ। **वहाँ** कुछ समय बिताने के बाद
२३ वह गलातिया और फ्रिगिया के इलाके में शिष्यों की हिम्मत बढ़ाता गया। **अलेक्ज़ेन्ड्रियावासी** यहूदी अपुल्लोस,
२५ जो बोलने में योग्य और शास्त्र का अच्छा ज्ञान रखता था, इफिसुस आया। **इस** व्यक्ति को यीशु के बारे में सिखाया

१८:५ -१३:१४; १४:१; १७:२ देखें।

१८:५ शायद सीलास और तिमोथी मकिदुनिया से धन लाते थे, ताकि कुछ समय तक उन्हें शारीरिक मेहनत न करनी पड़े। ‘‘मसीह’’ पर मत्ती १:१; प्रेरित २:३६ में नोट्स देखें।

१८:६ -१३:४५,४६; १४:१६; १७:५; २८:२८; मत्ती ८:११; २१:४३; रोमि १:१६। पौलुस अपनी ज़िम्मेदारी जानता था - २०:२६,२७। अगर उसने उन्हें खुशी की खबर न सुनायी होती तो वह अपने आप को कोसता।

१८:६,१० ‘‘दर्शन’’ - ६:१०; १०:३; १६:६; उत्पत्ति १५:१, गिनती १२:६; भजन ८६:१६; यिर्म. १४:१४; २३:१६; दानि. २:१६; लूका १:२२। यह पौलुस के लिए स्वभाविक था कि शारीरिक क्लेश से डरे। इसके पहले जो उसके साथ हुआ था, उसे सब याद था (१४:१६; १६:२२-२४)। स्वर्गिक पिता जानते हैं कि अपने सेवकों को हिम्मत कैसे दें।

१८:११ शायद यहाँ पौलुस सबसे ज्यादा समय तक ठहरा।

१८:१२ उन्होंने पौलुस पर हमला तो किया लेकिन नुक्सान नहीं पहुँचाया। इतिहास से हम जानते हैं कि गैलिओ पढ़ा लिखा मज़ाकी और सनकी दर्शनशास्त्री का भाई था। लेकिन यहूदी मत या यीशु में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी।

१८:१३ देखें १६:२०,२१; १७:६,७ ।

१८:१५ जो लोग मसीह की खुशखबरी को नही जानते हैं, सोच सकते हैं कि सभी मज़हब एक हैं। गैलियो सारी शिक्षा और ज्ञान के होने के बावजूद सच्चाई से दूर था।

१८:१८ ‘‘प्रण ’’ २१:२३,२४ देखें
गिनती ६:१-२१। शपथ के आखिर में बालों को उतारा जाता था। साफ दिखता है कि शुरु से यहूदी होने की वजह से उसने सोचा, कि यहूदी मत के अनुसार ‘प्रतिज्ञा’ को या ‘मन्नत’ को मानना ठीक है। शायद अपने साथ के यहूदिया की वजह से उसने यह किया था (१ कुरि. ६:१६-२३)

१८:१६-२१ एशिया प्रान्त में इफिसुस राजधानी थी । एशिया माइनर में सबसे बड़ा शहर भी । एक बार पौलुस कों वहाँ जाने से यीशु ने उसे रोका था (१६:६)। अब वहाँ जाने का वक्त आ गया था।

१८:२३ देखें १५:३६,४१; २ कुरि. ११:२८

१८:२४ देखें १६:१; १ कुरि. ३:४-६, २२; ४:६; १६:१२; तीतुस ३:१३। एलेक्जेन्ड्रिया मिस्त्र में था। इसे एलेक्ज़ेन्डर महान ने स्थापित किया था। यह शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र बन गया था। अपुल्लोस वहॉ बड़ी यहूदी जनता का एक सदस्य था

१८:२५ ‘‘यूहन्ना का बपतिस्मा’’ मत्ती ३:१-६। शायद ये यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को माननेवाले थे जिन्होंने मसीह के बारे में अपोल्लोस को सिखाया था।

गया था। वह बहुत जोशीला था और सही-सही सिखाता था। लेकिन वह सिर्फ यूहन्ना के बपतिस्मे के बारे में जानता
२६ था। **वह** आराधनालय में बड़ी हिम्मत से बोलने लगा। जब अक्विला और प्रिसिल्ला ने उसे सुना, तब परमेश्वर के बारे
२७ में उसको और अच्छी तरह सिखाया। **जब** वह अखाया से गुज़रना चाहता था, भाइयों ने शिष्यों पर ज़ोर डालकर कहा,
२८ कि उसे अपनाएँ। जब वह वहाँ पहुँचा, उसने उन सबकी मदद की, जिन्होंने विश्वास किया था। **वह** बहुत प्रबलता से
यहूदियों से तर्क किया करता था और वह भी सार्वजनिक तरीके से। वह यहूदी शास्त्र में से दिखाता था कि आनेवाले
१९ मसीह, यीशु ही थे। **जब** अपोल्लोस कुरिन्थुस में था, पौलुस ऊपरी भाग में यात्रा करते हुए इफिसुस पहुँचा वहाँ उसकी
२ मुलाकात कुछ शिष्यों से हुयी। **उसने** उनसे कहा, ''क्या विश्वास करते समय तुमने पवित्र आत्मा पाया था?'' उन्होंने
३ उससे कहा, ''हमने पवित्र आत्मा के बारे में कुछ सुना भी नही'' **उसने** उनसे पूछा, ''तुमने कौन सा बपतिस्मा लिया,''
४ उन्होने कहा, ''यूहन्ना का'' **तब** पौलुस ने कहा, इसमें कोई शक नहीं है, कि यूहन्ना ने तुम्हें मन बदलाव का बपतिस्मा
५ दिया था। उसने कहा था, कि ''यीशु मसीह जो आने वाले हैं, उन्हीं पर तुम्हें विश्वास होना चाहिए।'' **यह** सुनने के
६ बाद उन्हें प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा दिया गया। **जब** पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा
७,८ और उन्होंने अन्य भाषा में बात की और भविष्यद्वाणी की। **वे** सभी बारह लोग थे। **आराधनालय** जाकर वह तीन महीनों
९ तक हिम्मत से बोलता रहा। वह परमेश्वर के राज्य के बारे में बड़ी दिलेरी से वाद-विवाद करता रहा। **कुछ** लोगों ने
अपने मत को सख्त कर लिया और विश्वास करने से इन्कार किया। भीड़ के सामने यीशु के नाम की बेज़्ज़ती भी की
१० गयी। पौलुस ने उन्हें छोड़ दिया और शिष्यों को अलग किया और हर रोज़ तरन्नुस की पाठशाला में पढ़ाता रहा। **ऐसा**
दो साल तक चलता रहा और एशिया प्रान्त में रहनेवाले यहूदी और यूनानी लोगों ने प्रभु यीशु मसीह के बारे में सुन
११,१२ लिया। **परमेश्वर** ने विशेष अद्‌भुत काम पौलुस के हाथों से किए। **यहाँ** तक कि रुमाल और अँगोछे उसकी देह से
छुआकर बीमार लोगों पर रखे गए। इन कपड़ों के छूते ही बीमारियाँ ठीक हो गयीं और आत्माएँ उनमें से निकल गयी।
१३ **कुछ** यहूदी झाड़ा फूँकी करके दुष्ट आत्माओं को निकाला करते थे। उन्होंने यीशु के नाम का इस्तेमाल करके दुष्टात्मा

१८:२६ हालाँकि अपुल्लोस ज्ञान और भाषण में निपुण था, मण्डली के दो सदस्यों से सीखने के लिए तैयार था। ये दोनों मण्डली के लिए कीमती सेवा को कर रहे थे और दूसरों के लिए नमूना थे।

१८:२७ अखाया की राजधानी कुरिन्थ थी (१ पद) ''भाई बहन'' और ''शिष्य'' शब्द यीशु के मानने वालों के लिए इस्तेमाल किए जाते थे। इन शब्दों पर गौर करें।''जिन्होंने विश्वास किया था'' तुलना करें-१३:४८; यूहन्ना ६:३७,४४; इफि २:८,९; फिलि १:२९। सच्चे और ज़िन्दा ईमान जिससे लोग मुक्ति पाते है; उसका मन में होना ज़रुरी है।

१८:२८ पद ५; ९:२२; १७:२,३. देखें

१८:१९ प्रिसिल्ला और अक्विल्ला इफिसुस के सभी शिष्यों को सिखा नहीं पाए थे जैसा उन्होंने अपोल्लोस को सिखाया था (१८:२६)। ये १२ लोग को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यहूदिया में या उसके किसी शिष्य ने कहीं और बपतिस्मा दिया होगा (पद ७ और ३ देखें)। अगर वे यहूदिया गए थे तो यीशु की मौत, जी उठने और स्वर्ग पर जाने से पहले और पवित्र आत्मा के आने से पहले वहाँ से चले गए होंगे। इसलिए यूहन्ना की शिक्षा से ज़्यादा वे कुछ नहीं जानते थे।

१९:२ उनके रहने सहने के तरीके और बात-चीत से पौलुस समझ गया कि उनकी आत्मिक दशा और यीशु के बारे में ज्ञान कितना है। उसका सवाल यह दिखाता है, कि अगर उन्होंने मसीह पर भरोसा किया होता तो पवित्र आत्मा पा लिया होता (इफि १:१३; गल ३:१४;रोम८:९) उनके जवाब से मालूम पड़ता है कि वे यूहन्ना की मौत के बाद की घटनाओं को कितना कम जानते थे।

१९:४ मत्ती ३:६; यूहन्ना ३:२७-३६।

१९:५ देखें २:३८; मत्ती २८:१९। सिर्फ यही एक जगह है जहाँ दूसरी बार बपतिस्मा लिया जाना दिखता है।
यीशु के नाम में इन शब्दों का इस्तेमाल यूनानियों मे व्यापार के समय किया जाता था - सम्पत्ति और पैसा किसी के खाते मे लिख दिया जाता था, वह उसका हो जाता था। एक व्यक्ति जो यीशु के नाम में बपतिस्मा लेता है वह ऐलान करता है कि वह यीशु का है।

१९:६ ''हाथ रखे'' - ८:१५-१७; ९:१७ और १०:४७ देखें
''भाषाएँ'' (न सीखी भाषाएँ - २:४,११ और १०:४६ के नोटस देखें। यह बेकार है कि हम यह सोचें कि २:४-११ में और यहाँ पर इसका मतलब अलग है। लूका ने ऐसा इशारा भी नहीं किया है। भविष्यद्वाणी पर उत्पत्ति २०:७; गिनती ११:२५; १ कुरि. १२:१० में नोट्स देखें।

१९:८ - १३:१४; १४:१; १७:२ देखें।

१९:९ १३:४५,४६; १४:१९; १७:५,१३; १८:५,६। कभी-कभी यीशु के माननेवालों को ''रास्ता'' कहा जाता था।

१९:१० अपनी सभी यात्राओं में पौलुस इतने ज़्यादा समय के लिए कहीं नहीं रहा (२०:३१)। यह एक वह जगह थी जहाँ पौलुस बहुत समय तक जा नहीं पाया था (१६:६; १८:१९)।

१९:११,१२- परमेश्वर ने इस तरीके का इस्तेमाल लोगों को यह कायल करने के लिए किया कि पौलुस उनका भेजा हुआ है (२कुरि. १२:११,१२)। ५:१५, ८:१५,१७ भी देखें। पौलुस ने ये अजीब काम खुद नहीं किए और न ही उनसे आर्थिक फायदा उठाने की कोशिश की।

१९:१३-१६ दुष्टआत्माओं और उनके निकाले जाने के बारे में मत्ती ४:२४; १०:१ देखें। यहाँ हम सीखते हैं कि दुष्टात्माओं को निकालने में सिर्फ यीशु का नाम लेना काफी नहीं है। इसके लिए मसीह के अधिकार और परमेश्वर के आत्मा की ज़रुरत है।

१४ ग्रसित की तरफ देखकर कहा, ''जिस यीशु का संदेश पौलुस देता है, उन्ही के नाम मे हम तुम्हें हुक्म देते हैं।'' **वहाँ**
१५ एक यहूदी याजकों के प्रधान स्कीवा के सात बेटे थे, जो ऐसा किया करते थे। **दुष्टात्मा** ने उत्तर में कहा, ''यीशु को
१६ मैं जानती हूँ और पौलुस को भी, लेकिन तुम कौन हो? **जिस** व्यक्ति में दुष्टात्मा थी, वह उन पर लपका और उसने
१७ अपना ज़ोर दिखा डाला। इसलिए वे उस घर में से नँगे और घायल हालत में भाग निकले। **इफिसुस** में रहनेवाले सभी
यहूदी और यूनानी लोगों को यह बात मालूम हो गयी और उनके ऊपर डर छा गया। यीशु के नाम को बड़ाई मिली।
१८,१९ **जिन्होंने** आकर विश्वास किया, अपने गलत कामों को मान लिया और उनका खुलासा किया। **बहुत** से उन लोगों ने,
जो जादू किया करते थे, अपनी किताबें लाकर सबके सामने जला डाला। जब उसकी कीमत आँकी गयी तो पचास हज़ार
२० चाँदी के सिक्कों के बराबर थी। **इस तरह** से परमेश्वर का संदेश बड़ी सामर्थ से बढ़ता गया और अपनी ताकत दिखाता
२१ गया। **इन** सभी बातों के बाद पौलुस ने जब मकिदुनिया और अखाया की यात्रा कर ली मन में यरुशलेम जाने की ठान
२२ ली। **उसने** कहा, ''वहाँ जाने के बाद मुझे रोम जाना चाहिए।'' इसलिए अपने सहायक तिमोथी और इरास्तुस को उसने
२३ मकिदुनिया भेज दिया, लेकिन खुद कुछ समय के लिए एशिया में ठहर गया। **उसी** समय इस मत के बारे मे बड़ा उपद्रव
२४ हुआ। **देमेत्रियुस** नाम का एक सुनार था, जो डायना के लिए चाँदी के मन्दिर बनाता था, और काफी कमा लिया करता
२५ था। **उसने** अपने ही धन्धे वाले लोगों को बुलाया और कहा, ''लोगो, तुम्हें मालूम है कि यह धन्धा हमारी आमदनी का
२६ एक ज़रिया है। **साथ** ही तुम देख और सुन रहे हो कि न सिर्फ इफिसुस लेकिन सारे एशिया में इस पौलुस ने लोगों
को अपनी तरफ कर लिया है। उसने उन्हें कायल कर दिया है कि जिन ईश्वरों को हाथ से बनाया गया है, वे ईश्वर
२७ हैं ही नहीं। **इसलिए** न ही यह कला अब खतरे में है लेकिन यह कि महान देवी अरतिमिस का मन्दिर भी तुच्छ
२८ ठहराया जाएगा, जिसे सारे एशिया और दुनिया में पूजा जाता है, उसकी सारी शान जाती रहेगी।'' **जब** उन्होंने यह सुना
२९ तो गुस्से से भरकर चिल्ला उठे, ''इफिसियों की अरतिमिस महान है।'' **पूरे** शहर में गड़बड़ी मच गयी। पौलुस के यात्री
३० सहयोगी गयुस और अरिस्तर्खुस जो मकिदुनिया के थे, एक साथ मिलकर थियेटर में घुसे। **जब** पौलुस ने वहाँ भीतर
३१ जाना चाहा, तो शिष्यों ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। **एशिया** के कुछ अधिकारियों ने, जो उसके दोस्त थे, यह बिनती
३२ की, कि थियेटर में न जाएँ। **कुछ** लोग एक बात कह रहे थे,दूसरे कुछ और। वहाँ बड़ी गड़बड़ी थी और ज्यादातर लोगों
३३ को यह नहीं मालूम था कि वे वहाँ क्यों थे। **उन्होंने** एलेक्ज़ेण्डर को भीड़ में से खींच कर निकाला, क्योंकि यहूदियों
३४ ने उसे धक्का मारकर आगे कर दिया था। एलेक्ज़ेण्डर ने हाथ हिलाकर अपने पक्ष में कहने का इशारा किया। **जब**

१९:१७ स्कीवा के बेटों की दुष्टात्मा निकालने में नाकामयाब होने का अच्छा परिणाम हुआ था। पौलुस के जीवन से दिखने वाली परमेश्वर की शक्ति और स्कीवा के अनुभव में आसमान ज़मीन का फ़र्क था (पद ११,१२)। अगर परमेश्वर चाहे तो शुभसंदेश के बढ़ावे के लिए इन बातों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

१९:१८ मत्ती ३:५,६।

१९:१९ उन्होंने सच्चे परमेश्वर की शक्ति को देखा था और यह भी कि परमेश्वर की शक्ति की तुलना में जादूगरी कितनी बुरी है। जादू टोने पर व्यवस्था १८:९-११ में देखें। प्रेरितों ८:९-११; १३:८-१० में यह तीसरी बार आया है। उनकी ''किताबें'' पुस्तकें थीं जिसमें जादू के नुस्खे थे। चाँदी के पचास हजार टुकड़े एक बड़ी रकम थी। चाँदी का एक टुकड़ा एक मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी थी। रूपये ५०,०००- १४० साल के लिए मजदूरी बनती है। ध्यान दें उन्होंने इन किताबों को बेचकर उस पैसे का इस्तेमाल नहीं किया। उन लोगों ने जादू टोने की बुराई को समझा और किताबों को बर्बाद कर डालना सही समझा। एक बार जब उन्होंने सच्चाई को जान लिया तो उनकी बड़ी उमंग को देखिए।

१९:२१ यरुशलेम में जाने का एक कारण था दूसरी मण्डलियों से दान इकट्ठा करके यरुशलेम की मण्डली के गरीबों की मदद करना (१ कुरि. १६:१-४; २ कुरि. ८:१-९:१५)। बहुत समय से यह उसकी तेज़ इच्छा थी कि वह रोम भी जाए (रोमि १:१५; १५:२३-२८)। यहाँ वह कहता है कि उसे ऐसा करना चाहिए। क्या इससे यह मालूम नहीं पड़ता कि इस बात में वह परमेश्वर की इच्छा को जानता था (२०:२२)?

१९:२४ पद ६ ''डायना'' - यहाँ यूनानी में इसे अरतिमिस कहते है। यूनानी ''अरतिमिस'' रोम में डायना कहलाती थी। इफिसुस और एशिया माइनर के लोग अरतिमिस को देवी माता समझते थे। वे यह मानते थे कि इफिसुस में आसमान से उसकी मूरत गिरी थी। पुराने समय के सात अजूबों मे से एक यह मन्दिर हुआ करता था। इसका माप एथेन्स के पोथिनान से चार गुना ज्यादा था। शहर की आमदनी का ज्यादा हिस्सा इसकी उपासना से ही आता था। शहर में गड़बड़ी इसी वजह से हो गयी थी (२३) इतने ज़्यादा लोग मूर्ति पूजा को छोड़ रहे थे कि इफिसुस की आर्थिक हालत पर इसका असर हो रहा था (२५, २६)। क्योंकि देमेत्रियुस और उसके दोस्त सच्चाई से ज़्यादा पैसे से प्यार करते थे, स्वाभाविक था कि गड़बड़ी पैदा होती।

१९:२६ १७:२९,३०; १ कुरि. ८:४-६ देखें।

१९:२८ धन से लगाव और झूठी शिक्षाओं का दिवानापन एक खतरनाक मिश्रण है।

१९:३४ वे यह जानते थे कि मूर्तियों के बारे में यहूदियों और मसीहियों का मत एक ही था (निर्गमन २०:१-५; भजन ११५:२-८)। करीब दो घण्टे तक उन लोगों ने डायना की बड़ाई की। लेकिन क्या आज उसकी पूजा कोई आज करता है। उसका बड़ा मन्दिर इफिसुस में दब चुका है।

उन्हें मालूम पड़ा कि वह यहूदी है, तो लगभग दो घण्टे तक एक आवाज़ में चिल्लाते रहेः "इफिसुस की अरतिमिस महान
३५ है।" **जब** शहर के मंत्री ने लोगों को खामोश कराने के बाद कहा, इफिसुस के लोगो ऐसा कौन है जो यह नहीं जानता
३६ कि इफिसियों का शहर, महान देवी अरतिमिस और उसकी मूर्ति का उपासक है, जो आसमान से उतरी थीः **यह** देखते
३७ हुए कि इन बातों का इन्कार नहीं किया जा सकता, तुम्हें खामोश रहना चाहिए और जोश में कुछ नहीं करना चाहिए। **क्योंकि**
३८ तुम इन लोगों को लाए हो जो न तो मन्दिर के लुटेरे हैं और न ही तुम्हारी देवी को बुरा कहते हैं। **इसलिए** अगर
देमेत्रियुस और दूसरे मूर्तिकारों को कुछ शिकायत है, तो अदालत और हाकिम के दरवाज़े खुले हुए हैं। वहाँ पर उनके
३९ खिलाफ आरोप साबित किए जा सकते हैं। **लेकिन** यदि इसके अलावा कोई और विषय है तो कानूनी सभा (सवैधानिक
४० सभा) में उसका फैसला किया जा सकता है। **आज** के उपद्रव के बारे में जवाब देने का खतरा खड़ा हो सकता है,
४१,**२०** लेकिन इसका जवाब हम देंगे भी क्या?" **यह** सब कहने के बाद उसने सभा को बर्खास्त किया। **जब** हुल्लड़ थम गया,
२ पौलुस ने शिष्यों को अपने पास बुलाया, उनको समझाया और फिर मकिदुनिया को रवाना हो गया। **उन** सभी जगहों
३ से होते हुए, वह लोगों की हिम्मत बढ़ाता गया और आखिर में यूनान आ गया। **वहाँ** पर वह तीन महीने तक रहा।
जब वह सीरिया जानेवाला था, और यहूदियों ने उसके खिलाफ एक योजना बनायी। तभी उसने मकिदुनिया होते हुए वापस
४ आना चाहा। **बिरीया** का सोपेटर उसके साथ एशिया यात्रा में हो लिया। साथ ही थिस्सुलुनीके का अरास्तर्खस और
५ सिकुन्दुस, दिरबे का गयुस, तिमोथी, तुखिकुस और एशिया का त्रुफिमुस। **आगे** जाकर ये लोग त्रोआस में हमारा इन्तज़ार
६ करने लगे। **अखमीरी** रोटी के दिनों के बाद हम फिलिप्पी से चले। पाँच दिन में हम त्रोआस में उनसे मिल गए, यहाँ
७ हम सात दिन ठहर गए। **हफ्ते** के पहले दिन, शिष्य रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए। पौलुस दूसरे दिन वहाँ से जाने
८,९ की तैयारी में तो था ही, लेकिन उन्हें बीच रात तक सिखाता रहा। **ऊपर** के कमरे मे जहाँ वे सब इकट्ठा हुए थे,
तमाम दिए जल रहे थे। **वहीं** खिड़की पर एक नवजवान आदमी यूतुखुस को बहुत ज़ोरों से ऊँघाई आ रही थी। पौलुस
१० बहुत देर तक सिखाता रहा। इसी बीच वह व्यक्ति नींद की वजह से तीसरी मंजिल से गिर पड़ा और मर गया। **नीचे**
जाकर पौलुस औधे मुँह उसके ऊपर पसर गया। उसने अपने हाथों को उसके चारों तरफ डालकर कहा, "परेशान मत
११ हो, क्योंकि जान अभी भी उसी में है **जब** वह फिर से ऊपर आया उसने रोटी तोड़ी और खायी। वह भोर तक उनसे
१२ बातें करता रहा और उसके बाद वहाँ से रवाना हो गया। **इसी** बीच वह नवजवान बिना किसी नुकसान घर पहुँचाया
१३ गया और हर एक जन को बड़ी तसल्ली मिली। **हम** जहाज से आगे बढ़ गए और एसोस को रवाना हुए। वहीं उसने
१४,१५ हमसे मुलाकात का इन्तज़ाम किया। **वहाँ** मिलने के बाद हम सब मिलेतुस को रवाना हुए। **अगले** दिन हम किओस टापू
१६ के सामने पहुँचे। अगले दिन हम सामोस गए, ट्रौगिलियम में रुके और फिर मिलेतुस आ गए। **पौलुस** ने इस यात्रा
में इफिसुस में रुकना न चाहा, क्योंकि वह एशिया में समय नहीं गुज़ारना चाहता था। क्योंकि वह चाहता था कि
१७ किसी न किसी तरह अगर संभव हो, पेन्टिकॉस्ट के दिन तक यरुशलेम में हो। **मिलेतुस** से उसने इफिसुस खबर
१८ भिजवाकर मण्डली के अगुवों को बुलाया। **जब** वे वहाँ आए तो उसने उनसे कहा, "तुम्हें मालूम है कि पहले दिन ही
१९ से जब से मैं एशिया आया, मैं तुम्हारे साथ था और तुमने मेरा जीवन देखा। **यह** कि मैं किस तरह से मन की दीनता

१९:३५-४४ रोमी लोग इफिसुस पर शासन कर रहे थे। प्रोकौन्सुल (३८) रोमी गवर्नर थे। लोगों को यह अधिकार नहीं था कि कानून को अपने हाथें मे लें। अगर उन्होंने कोशिश की होती तो समस्या में पड़ जाते। इसलिए शहर के क्लर्क (बाबू) लोगों ने भीड़ को खामोश करके भेज दिया।

२०:१,२ जिन मण्डलियों को पौलुस ने शुरु किया था (१६:१०-१८:१८) वे सभी मकिदुनिया और यूनान में थीं

२०:३ १३:४५; १४:२,५,१९ देखें।

२०:४ "दिरबे" - १६:२०,२१।

२०:५ "हम" - १६-१०।

२०:६ "अखमीरी रोटी के दिन" - निर्ग १२:१७-२०; लैव्य २३:४-८।

२०:७ सब्त के दिन के बजाए वे रविवार को प्रभु भोज लेने के लिए मिलते थे (१ कुरि. १६:२ भी देखें)। यह ठीक भी था क्योंकि इसी दिन यीशु मरे हुओं में से जी उठे थे। इसी दिन एक नये युग की शुरुआत हुयी थी।

२०:१० ९:४०,४१; लूका ८:११-१५;८:४९-५५; यूहन्ना ११:४३,४४ १ राजा १७:२१; २ राजा ४:३४,३५।

२०:१५ मिलेतुस इफिसुस के दक्षिण में ५० किलोमीटर पर एक बन्दरगाह था।

२०:१६ "पेन्टिकॉस्ट" - २:१-४; लैव्य २३:१५-२१।

२०:१७ "बुज़ुर्ग या अगुवे" - १४:२३

२०:१८-३६ एक मसीह के सेवक को क्या होना चाहिए, पौलुस इसका नमूना था। दूसरों को सिखाने के लिए खुद परमेश्वर ने उसे ठहराया था (फिलि ३:१७; १ कुरि. ४:१६; ११:१; २थिस्स. ३:८,९ १ तिमो. १:१६)। अपना बड़प्पन दिखाने के लिए अगुवों से ये शब्द पौलुस ने नहीं कहे थे। लेकिन इसलिए कि अगुवे होने के नाते उन्हें कैसा होना चाहिए। उसे मालूम था कि वह क्या है। वह खुद पर घमण्ड नहीं करता था (रोमि ७:१८; १ कुरि. ३:७; २ कुरि. २:५,६; १ तिमो. १:१५)।

२०:१९ क्या एक नम्र इन्सान यह जान सकता है कि वह नम्र है? हाँ क्यों नहीं? कम से कम वह इतना जान सकता हैं कि उसने दीनता का व्यवहार किया है।

२० से और यहूदियों के षडयन्त्र के कारण आँसुओं के साथ यीशु की सेवा की। **जो** कुछ तुम्हारे फायदे का था, वह सब
२१ तुम्हें बताता रहा। मैंने घर घर जाकर और खुली रीति से सिखाया। **यहूदियों** और यूनानियों को परमेश्वर की तरफ
२२ मन बदलाव की ज़रुरत और यीशु मसीह पर विश्वास की ज़रुरत पर गंभीरता से ज़ोर डालता रहा। ''**अब** देखो, मैं
२३ पवित्रात्मा में बँधा हुआ यरुशलेम जा रहा हूँ। मुझे यह नहीं मालूम कि मेरे साथ क्या होगा । **हर** शहर में पवित्रात्मा
२४ केवल यह गवाही देता है कि जंजीरें और तकलीफें तुम्हारा इन्तज़ार कर रही हैं। **लेकिन** इन बातों से मैं बिल्कुल परेशान
नहीं होता हूँ । न ही मैं अपने जीवन को कीमती जानता हूँ। ऐसा इसलिए, ताकि परमेश्वर के प्रेम की खुशखबरी की
२५ गवाही दे सकूँ और यीशु से मिली सेवा को करके खुशी से अपनी दौड़ पूरी कर सकूँ। **और** अब देखो, मुझे मालूम
२६ है कि वे सभी जिन के बीच मैं परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाता रहा, मेरा मुँह नहीं देख सकेंगे। **इसलिए** आज
२७ मैं तुम्हें इस बात का गवाह ठहराकर कहता हूँ, कि मैं सभी के खून से निर्दोष हूँ **क्योंकि** मैं कभी भी परमेश्वर की
२८ पूरी योजना की घोषणा करने में हिचकिचाया नहीं। **इसलिए** अपनी रक्षा करो और उस झुण्ड की भी जिसके ऊपर
निगरानी रखने के लिए पवित्र आत्मा ने तुम्हें परमेश्वर की मण्डली का चरवाहा ठहराया है। इस मण्डली को यीशु ने
२९ अपने खून से खरीदा है। **इसलिए** कि मैं यह जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़खाने वाले भेड़िए तुम्हारे बीच आएंगे
३० और झुण्ड को छोड़ेंगे नहीं। **साथ** ही तुम्हारे बीच ही से लोग उठ खड़े होंगे और शिष्यों को अपनी तरफ खींच लेने
३१ के लिए झूठी बातें बोलेंगे। **इसलिए** सावधान रहो और याद रखो कि तीन साल तक मैंने दिन रात तुम्हें आँसुओं के
३२ साथ चेतावनी देना न छोड़ा ''**और** अब, भाइयो बहनो, मैं तुम्हें परमेश्वर और उसकी कृपा के वचन के प्रति सौंप

''बहुत आँसू बहाने से'' पद ३१; २ कुरि. २:४; ११:२८,२९; भजन १२६:५,६; लूका १९:४१।

२०:२०,२१ चाहे कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े, वह इस खुशखबरी को लोगों तक पहुँचाना चाहता था। अगर वे आम सभाओं में न आ सके तो वह खुद वहाँ जाता था। वह दो बातों को हर जगह सिखाता था

मन बदलाव और मसीह पर भरोसा करना। (सच्चा विश्वास, मन बदलाव से जुड़ा हुआ है)। मन बदलाव पर देखें २:३८; १७:३०; मत्ती ३:२; ४:१७; लूका १३:१-५; २४:४७।

२०:२२,२३ देखें २१:१,,१०,११।

२०:२४ इस व्यक्ति की बड़ी सफलता की चाभी यहाँ है। वह मत्ती १०:३८, लूका ६:२३; १४:२६,२७ का अभ्यास करता था। उसकी ज़िन्दगी में एक लक्ष्य था - उस काम को पूरा करना जो उसे दिया गया था और ईनाम को जीत लेना - १ कुरि. ९:२४-२७; फिलि ३:१२-१४; २ तिमो. ४:७,८। उसका काम यह था कि जिस किसी तक वह पहुँचे उसे परमेश्वर की कृपा के बारे में बताए। (इफि ३:२,७; २ तिमो.१:९-११)। आराम सुविधाएँ, आमोद-प्रमोद और जीवन आदि उसके लिए उसके लक्ष्य के सामने कोई मायने नहीं रखते थे। इन सभी बातों के लिए शक्ति हमें कुलु १:२९ में दिखती है।

२०:२५ उसने यह जान लिया था कि दुनिया के उस हिस्से में उसका काम खतम हो गया और उसे कहीं और जाना चाहिए (१९:२१; रोम १५:२३,२४)। ध्यान दें, राज्य के बारे में बताना और परमेश्वर की कृपा की गवाही देना एक ही बात है (पद २४)

२०:२६,२७ १८:६ देखें और यहे. ३३:७-९ भी। पौलुस एक बड़ा संदेश वाहक था। लेकिन वह शुरुआती बातों को बता कर खुश नहीं था। वह किसी भी सच्चाई को इन्सान के डर से न ही अपने तक सीमित रखता था और न ही लोगों की वाह-वाह चाहता था (पद२०; गल १:१०)।

२०:२८ वहाँ मण्डली के अगुवे पवित्र आत्मा ने ठहराए थे किसी भी मण्डली में यही अगुवे थे, जिन्हें इज्ज़त दी जानी चाहिए। सिर्फ ऐसे ही अगुवे अपने पद पर सफलता से काम कर सकते हैं - वह है मसीह की भेड़ों का सच्चा चरवाहा होना (यूहन्ना २१:१६; इफि ४:११; १ पत ५:२'४)। अगर मण्डलियाँ बिना पवित्रात्मा की अगुवाई में अगुवों को चुनेगी, तो उसका परिणाम उन्हें भुगतना पड़ेगा- ये परिणाम अच्छे नहीं होंगे।

"मण्डली'' - मत्ती १६:१८ के नोट्स। इस पद में यीशु को परमेश्वर कहा गया है - परमेश्वर ने अपनी मण्डली को ''खुद के खून'' से खरीदा है - यानि कि यीशु का खून (१ कुरि. ६:१९,२०; इफि. १:७; १ पत १:१८,१९)। यीशु के ईश्वरत्व के बारे में दूसरे पद फिलि २:६; लूका २:११ हैं।

२०:२९ ''भेड़िए - मत्ती ७:१५; यूहन्ना १०:१२ यहाँ पौलुस का इशारा उन झूठे शिक्षकों से है, जो मण्डली को टुकड़े में बाँटना चाहेंगे (रोमि १६:१७,१८; १ तिमो ४:१; २ पत २:१)।

२०:३० मण्डली के अगुवों के लिए यह काफी नहीं है कि बाहर से आने वाले झूठे शिक्षकों से सावधान रहें। मण्डली के भीतर भी ऐसे लोग होंगे, जो चाहेंगे कि लोग उनकी सुनें और माने न कि यीशु की। ऐसे लोगों की चाहत में वे परमेश्वर की सच्चाई को बदलना चाहेंगे क्योंकि उनका अहम उनके लिए सच्चाई से बढ़कर है।

२०:३१ पद १९। मसीह के वफ़ादार सेवक सच्चाई से प्यार करते हैं। जो सच्चाई को मरोड़ते हैं, उनके बारे में परमेश्वर के लोगों को चेतावनी दी जानी चाहिए। यीशु और उनके प्रेरितों ने लगातार यह किया (मत्ती ७:१५; २४:४,५; २ कुरु ११:१३-१५; १ यूहन्ना २:१८,१९; यहूदा ३,४

२०:३२ ''कृपा की बातें'' ही हमें मसीह के संदेश में मिलती हैं।

''मजबूती देते '' - इफि ४:११-१३,१६,२९; २ तिमो ३:१६,१७; १ पत २:१,२; २ पत २:१८; यहूदा २०

३३ देता हूँ, जो तुम्हें मजबूती देने के साथ साथ सभी अलग किए हुए लोगों मे मीरास देने के लायक हैं ।**मैंने** किसी की
३४ चान्दी-सोने या कपड़े का लालच नहीं किया । **तुम** आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की
३५ आवश्यकताएं पूरी की । **मैंने** तुम्हें सबकुछ करके दिखाया, कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना,
३६ और प्रभु यीशु की बातें स्मरण रखना अवश्य है, कि उस ने आप ही कहा है; कि लेने से देना धन्य है। **यह** कहकर
३७ उस ने घुटने टेके और उन सब के साथ प्रार्थना की । **तब** वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले में लिपट कर उसे
३८ चूमने लगे । **वे** विशेष करके इस बात का शोक करते थे, जो उस ने कही थी, कि तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे;
२१ और उन्हीं ने उसे जहाज तक पहुंचाया । **उन्हें** विदा करने और वहाँ से रवाना होने के बाद हम कोस आए। अगले
२,३ दिन रुदुस और वहाँ से पतरा। **एक** जहाज जो फूनीशिया से गुज़रने वाला था, हम उस पर सवार हुए। **जब** हमने
कुप्रस को देखा, इसे हमने बायीं ओर छोड़ दिया और सीरिया की तरफ रवाना हो चले तथा जाकर टायर में रुके। वहाँ
४ पर जहाज पर से सामान नीचे उतरवाना था। **शिष्यों** को पाकर, हम वहाँ सात दिन ठहर गए। पवित्रात्मा की मदद से
५ उन्होंने पौलुस से कहा कि उसे यरुशलेम नहीं जाना चाहिए। **जब** हमने वे दिन पूरे कर लिए, हम वहाँ से निकलकर
६ अपनी राह पर हो लिए। **जब** हम एक दूसरे से अलग हो गए, तब हम जहाज पर बैठ गए और वे सब वापस घर
७ आ गए। **जब** हम सूर से अपनी यात्रा पूरी कर चुके, हम पतुलिमयिस आए, और भाईयों का अभिवादन करके और
८ एक दिन उन्हीं के साथ ठहर गए। **अगले** दिन हम लोग जो पौलुस के साथ थे, निकल कर, कैसरिया आए और
९ फिलिप खुशखबरी देने वाले के घर गए। वह सातों मे से एक था। हम उसी के यहाँ ठहर गए। **इस** व्यक्ति के पास
१० चार कुवाँरी बेटियाँ थीं जो आत्मा की प्रेरणा से संदेश देती थीं। **जब** हम वहाँ बहुत दिन ठहरे, तो अगुबस नाम का
११ एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से आया। **जब** वह हमारे पास आया तो पौलुस की पेटी (बेल्ट) लेकर अपने हाथ-पैर
बान्धकर बोला, ''पवित्र आत्मा यों कहता है: ''जिस व्यक्ति का यह बेल्ट (पेटी) है उस व्यक्ति को यहूदी, यरुशलेम
१२ में बान्धेंगे और गैरयहूदियों के हाथों में सौपेंगे।'' **जब** हमने ये बातें सुनी, तब हमने और वहाँ के लोगों ने उससे
१३ बिनती की कि वह यरुशलेम न जाए। **तब** पौलुस ने जवाब में कहा, ''तुम रोने से मुझे दुखी क्यों करते हो? मैं यीशु
१४ मसीह के नाम के लिए यरुशलेम मे सिर्फ बान्धे जाने के लिए नहीं, लेकिन मारे जाने के लिए भी तैयार हूँ।'' **जब** पौलुस

'' मीरास'' २६:१८; रोमि ८:१६,१७;
१ कुरि. ६:९; इफि १:११,१४; ५:५; कुरि. १:१२; ३:२४; इब्रा १:१४; १ पत १:४; प्रका २१:७
''अलग किये हुए '' यूहन्ना १७:१७-१९; रोमि ८:१५,१६, १ कुरि. १:२,३०ण ६:११; इफि ५:२६

२०:३३ जिन खतरों के विषय में उसने १ तिमो ६:६-१० मे बताया था, उन्हे वह अच्छी तरह जानता था। फिलि ४:१०-१३ से तुलना करें।

२०:३४ १८:३ देखें

२०:३५ यीशु की ये बातें किसी और शुभ समाचार में नहीं हैं। लेनिक इस सिद्धान्त को उन्होंने अपने जीवन और सेवा में दिखाया (यीशु ने बहुत सी वे बातें कहीं और की, जिन्हे किसी किताब मे नहीं लिखा गया है - यूहन्ना २१:२५। मत्ती ६:३६; ११:५; १९:२१, लूका ४:१८; ६:२०; ११:४१; १४:१३; यूहन्ना ५:६-८ (यीशु ने ज्यादा आश्चर्यकाम गरीबों के लिए किए थे)। उन्होंने अपना सब कुछ दूसरों को दिया। वापस उनसे कुछ नही चाहा। तुलना करें मत्ती २०:२८; यूहन्ना १०:११
पौलुस ने यीशु के नमूने को अपनाया - १ कुरि. ६:१२-१७; २ कुरि. १२:१५। वह आजकल के बहुत से लोगों की तरह नहीं था जो सेवा को अपने पेट का एक तरीका बनाते हैं (१ तिमो ६:५)। ये लोग चीजों और धन को ही आशीवीद समझते हैं (यूहन्ना १२:६ से तुलना करें)। ऐसे लोगों ने यह नहीं सीखा है कि मसीह शिष्यता यह नहीं है कि हमें दूसरों से क्या मिल सकता हैं, लेकिन हम दे क्या सकते है। क्या हमने इस खास बात को सीखा है? देने के बारे में २ कुरि. ९:१५ पर नोट्स और पद देखें।

२०:३७ वे जानते थे कि पौलुस के शब्दों मे मात्र बढ़ा चढ़ा कर बातें नहीं थी। उसने सचमुच मे अपना समय, पैसा, योग्यताएँ और बल दिया था।

२१:४ परमेश्वर के आत्मा ने उन्हें पौलुस के लिए फिकर दी थी। शायद आनेवाले सताव के बारे में भी। लेकिन उसी आत्मा ने उसे मजबूर किया कि यरुशलेम जाए (२०:२२)।

२१:५ २०:३६ देखे।

२१:८ ''फिलिप्पुस'' ''सात'' - ६:५; ८:५-४०। फिलिप को प्रेरित और खुशखबरी देने वाला भी कहा गया है (१:१३)।

२१:९ बाईबल में दूसरी स्त्रियों ने भी भविष्यद्वाणी की योग्यता पायी थी - निर्ग १५:२०; यहूदा ४:४; २ राजा २२:१४; नहे ६:१४; यशा ८:३; लूका २:३६।

२१:१० ११:२७ देखें।

२१:११ उसने पौलुस से यह नहीं कहा कि पवित्र आत्मा उसे यरुशलेम जाने को मना कर रहा था। पवित्र आत्मा खुद की खिलाफत नहीं करता है (२०:२२)। अगबुस के ज़रिए पौलुस को पवित्र आत्मा ने बताया कि क्या होने वाला है ताकि पौलुस तैयार रहे।

२१:१२ पद ४।

२१:१३ २०:२४ देखें।

१५ टस से मस न हुआ, तो हम भी खामोश हो गए और कहा, "परमेश्वर की इच्छा पूरी हो।" **उन** दिनों के बाद,
१६ हमने अपना बोरी बिस्तरा उठाया और यरुशलेम को चल दिए। **कैसरिया** के कुछ शिष्य हमारे साथ हो लिए और अपने
१७ साथ मनासोन के एक बुज़ुर्ग शिष्य को लाए जिसके यहाँ हम मेहमान होने वाले थे। **जब** हम यरुशलेम पहुँचे, भाई
१८,१९ बहनों ने हमें खुशी से अपनाया। **अगले** दिन पौलुस हमारे साथ याकूब के पास गया और सभी अगुवे वहाँ थे। **उन**
सभी को अभिवादन करने के बाद उसने उन सभी बातों को बताया, जिन्हें परमेश्वर ने उनके बीच उसके ज़रिए से
२० किया था। **जब** उन्होंने सुना तो परमेश्वर की बढ़ाई की और पौलुस से कहा, "आप ही देखो भाई, कितने हज़ार
२१ यहूदियों ने विश्वास किया है। वे सभी नियमशास्त्र के सम्बन्ध में बहुत जोशीले हैं। **तुम्हारे** बारे में उन्हें बतलाया गया
है, कि जो यहूदी, गैर यहूदियों के बीच रहते है, उन्हें तुम मूसा को त्यागने के लिए कहते हो। तुम यह भी कहते हो
२२ कि उन्हें अपने बच्चों का खतना नहीं करवाना चाहिए और रीति रिवाजों को भी नहीं मानना चाहिए। **इन** बातों का
२३ नतीजा क्या होगा? अब उन्हें मालूम पड़ेगा कि तुम यहाँ आए हो, **इसलिए** वही करो जो हम तुम से कहते हैं। हमारे
२४ बीच चार ऐसे लोग हैं जिन्होने शपथ ली है। **उन्हें** लो और उनसे अपने आपको शुद्ध कर उनका चुकता कर दो, ताकि
वे अपने सिर मुढ़ा लें। तब जो बातें तुम्हारे बारे में फैलायी गयी थीं, लोग जान जाएंगे कि वे सब झूठी हैं। यह भी
२५ कि तुम सही जीवन जी रहे हो और नियमशास्त्र की बातें मानते हो। जहाँ तक **गैरयहूदियों** का सवाल है, हमने यह
फैसला किया है कि उन्हें इन सब बातों को मानने की ज़रुरत नहीं। सिर्फ यह कि मूर्ति के सामने चढ़ाई हुयी चीजों,
२६ खून और गला घोटे हुए जानवरों के गोश्त और यौन अनैतिकता से बचे रहें। **तब** पौलुस ने अगले दिन लोगों को लिया
और उनसे अपने आपको शुद्ध किया। शुद्धिकरण के दिनों के पूरा होने को दिखाने के लिए वह प्रार्थना भवन(मन्दिर)
२७ में दाखिल हुआ, और बताया कि उनमें से हर एक के लिए बलिदान कब चढ़ाया जायगा। **जब** सात दिन करीब-करीब
२८ खतम होने पर थे, एशिया प्रान्त के यहूदियों ने उसे प्रार्थना भवन में देखा और लोगों को भड़काकर उन्हें पकड़ा। **और**
चिल्लाकर कहा, "इस्त्राएल के लोगों, मदद करो! यही वह इन्सान है जो सभी जगह लोगों को नियमशास्त्र और इस
जगह के खिलाफ सिखाता है, इसके अलावा इसने यूनानियों को इस प्रार्थना भवन(मन्दिर) में लाकर इस पवित्र जगह
२९ को गंदा कर दिया है।" **इसके** पहले शहर में उन्होंने इफिसीवासी त्रुफिमुस को उसके साथ देखा था। उनका ख्याल

२१:१६ "साइप्रस" १३:४-१२।

२१:१७ इस समय वे मण्डलियों से धन दान के रुप में लाए थे (रोमि. १५:२५-२७; १ कुरि.१६:१-४)

२१:१८ याकूब १५:१३।

२१:१९ १५:४ देखें। सामरियों को छोड़कर सभी लोगों को यहूदी, "गैर यहूदी" कहते थे।

२१:२० ये वे यहूदी थे, जिन्होंने मसीह को इस्त्राएल का बचानेवाला मान लिया था। मसीह के नाम में उनका बपतिस्मा हुआ था। वे मसीह के बन गए थे। लेकिन इसके बावजूद वे मूसा से पाए गए नियमों - विशेष दिनों का मानना, शुद्ध-अशुद्ध भोजन, त्यौहार, रीति विधियों को मानने की कोशिश कर रहे थे। वे सच्चाई को समझ नहीं पाए थे कि ये सब बातें मात्र छाया थीं और मसीह में छिपी आत्मिक सच्चाईयों की तस्वीर थीं - मत्ती ५:१७; कुलु २:१७; इब्रा १०:१ (इब्रानियों का पत्र भी इसीलिए लिखा गया था, कि सिखाया जाए कि पुरानी वाचा खतम हो चुकी है। यह 'इब्रानियों' लिखे जाने का एक मकसद था)।

२१:२१ इल्ज़ाम झूठा था। पौलुस ने यहूदी मसीहियों को खतना जारी रखने और नियमशास्त्र को मानने के लिए कभी नहीं कहा था। वह सभी से यह कहता था कि माफी/मुक्ति मज़हब के उसूलों को मानने से नही मिलती। (१३:३९; रोमि ३:२८; गल २:१५,१६)। वह गैरयहूदियों को सिखाता था कि यह ज़रुरी नहीं कि वे यहूदियों की प्रथाओं और नियमों को माने (गल ५:१; ५:१५; कुल २:१६,१७)। लेकिन यहूदी धर्म की खास बातें - कैसे जीवन जीएँ इन्साफ सच्चाई आदि - ये बातें सभी के लिए हैं चाहे वे यहूदी हों या गैर यहूदी (रोमि ८:४)।

२१:२२-२४ उन्होंने जो सलाह दी उसमें पौलुस यह दिखा सका कि वह यहूदी धर्म से आए हुए लोगो के खिलाफ नहीं था। 'मन्नत' या 'शपथ' शायद वही थी जिसे पौलुस ने भी एक बार खायी / मानी थी

२१:२५ १५:२०-२९ देखें। वे पौलुस को कुछ ऐसा नहीं बता रहे थे जो वह जानता नहीं था। वे इस बात का आश्वासन दे रहे थे कि वे गैरयहूदियो में से यीशु के शिष्य बनने वालों से यहूदियों के धर्म की प्रथाओं को मानने के लिए मजबूर नहीं करेंगे।

२१:२६ शुद्धिकरण के समय मन्दिर के पुजारी (याजक) को बताना पड़ता था। साथ ही वह उन पर पानी छिड़कता था। चारों व्यक्तियों में से एक व्यक्ति के लिए दान गिनती की किताब के ६:१४,१५ में है। ओल्ड टेस्टामेन्ट में सभी भेंट और बलिदान मसीह की तरफ इशारा करते हैं। यीशु वास्तविकता थी, बाकी सब छाया मात्र (लैव्य १:२ में नोट्स देखें)। क्योंकि ये चार व्यक्ति मसीही थे, उन्हें यह मालूम होना चाहिए था कि मात्र यीशु की कुर्बानी से अपराध धुल चुके थे। अगर ऐसा नहीं था, क्या हम शक कर सकते हैं कि पौलुस ने इतने साफ तरीके से उन्हें सिखाया? इन सभी बातों मे पौलुस १ कुरि. ९:१९-२३ में दिए गए शब्दों के अनुसार कर रहा था। सच्चाई के लिए वह जिन्हें जीतना माँगता था, उनको वह प्यार और दीनता दिखा रहा था।

२१:२७ "एशिया" - १८-१९; १९:१,८,९; २०:१६।

२१:२९ पौलुस गैर यहूदी त्रोफिमुस को मन्दिर में नही लाया था। इसलिए जिन यहूदियों को वह जीतना चाहता था, उन्हें चोट लगाने (दुख पहुँचाने) का सवाल ही नहीं उठता।

३० था कि पौलुस उन्हें प्रार्थना भवन में लाया था। **पूरा** शहर बहुत गुस्सा हो उठा और लोग एक जगह इकट्ठे होने लगे।
३१ उन्होंने पौलुस को प्रार्थना भवन के बाहर घसीटा और तुरन्त दरवाज़ा बन्द कर दिया। **जैसे** ही वह उसे जान से मार
३२ डालने वाले थे, रोमी सेना के कमाण्डर के पास यह खबर पहुँची कि सारे यरुशलेम में हल्ला-गुल्ला हो रहा है। **तुरन्त**
उसने सिपाहियों और सूबेदारों को लिया और उनकी तरफ दौड़ पड़े। जब उन्होंने कमाण्डर और सिपाहियों को देखा
३३ तब पौलुस को मारना रोक दिया। **तब** कमाण्डर ने आगे बढ़कर उसे दो जंजीरों से बान्धने की आज्ञा देकर पूछा कि
३४ वह कौन है और उसने क्या किया है। **भीड़** में से कोई कुछ चिल्ला रहा था और कोई कुछ और। जब हुल्लड़ की वजह
३५ से उसके हाथ कुछ सच्चाई नहीं लगी, उसने उसे बैरेक में ले जाने का हुक्म दिया। **जब** वह सीढ़ी तक पहुँचा, लोगों
३६,३७ के उपद्रव की वजह से सिपाही उसे उठा कर ले गए। **लोगों** की भीड़ चिल्लाती गयी, ''इसे मार डालो।'' **जब** पौलुस बैरेक
में ले जाया जाने वाला था, तभी उसने कमाण्डर से कहा, ''क्या मैं आपसे कुछ कह सकता हूँ? उसने कहा, क्या तुम्हें
३८ यूनानी भाषा आती है? **क्या** तुम वही मिस्री नहीं हो, जिसने कुछ दिनों पहले बलवा किया और चार हज़ार लोगो को
३९ जंगल ले गया?'' **लेकिन** पौलुस ने कहा, ''किलकिया में तारसुस जो एक मशहूर शहर है, वहाँ का मैं रहनेवाला हूँ।
४० मुझे इज़ाजत दो कि मैं लोगो से बातचीत कर सकूँ।'' **जब** उसे इज़ाजत मिल गयी, तब खामोशी के बाद वहीं सीढ़ी
२२ पर चढ़े हुए उस ने अपने हाथ हिलाते हुए लोगों से इब्रानी भाषा में बातचीत की, **''लोगो**, भाई, बहनो और बुजुर्गों,
२ मैं अपने बचाव के लिए जो कहता हूँ, उसे सुनो'' **जब** उन लोगों ने उसे इब्रानी भाषा में बोलते हुए सुना, तब और
३ खामोश हो गए। **इसमें** कोई शक नहीं है कि किलकिया के तारसुस शहर का मै रहनेवाला हूँ। लेकिन गमलीएल के
कदमों पर इसी शहर में मुझे बुजुर्गो के नियम और तौर तरीकों को सिखाया गया। और आप सभी परमेश्वर के लिए
४ जिस तरह से आज जोश मे भरे हुए हैं, मैं भी था। **इस** मत के पुरुष और स्त्रियों को जान से मारने, बान्धने और
५ जेलखाने में डालने के द्वारा उन्हें सताता रहा। **इस** बात के गवाह महायाजक और बुजुर्गो की सभा भी है। उन्हीं से
मैंने भाइयों के लिए चिट्ठियाँ पायीं थीं, ताकि जो लोग दमिश्क में बँधे हुए थे, उन्हें यरुशलेम में सज़ा देने के लिए लाऊँ।
६ **अपनी** यात्रा के दौरान जब मैं दमिश्क पहुँचने ही वाला था, अचानक आसमान से एक बड़ी रोशनी ने उतरकर मुझे
७ घेर लिया। **जब** मैं ज़मीन पर गिर पड़ा तो अपने कानों से सुना, शाऊल, शाऊल, तुम मुझे क्यों दुख पहुँचा रहे हो,
८ **मैने** जवाब दिया, ''आप कौन है प्रभुजी?'' उन्होंने मुझसे कहा, ''मै नासरत का यीशु हूँ, जिसे तुम पीड़ा दे रहे हो।
९ **''जो** लोग मेरे साथ थे वे रोशनी देखकर डर गए, लेकिन जिस व्यक्ति ने मुझसे बातचीत की थी, उनकी आवाज़ नहीं

२१:३१ उस समय रोमी लोग यरुशलेम पर शासन कर रहे थे।

२१:३६ देखें २२:२२; लूका २३:१८; यूहन्ना १५:१८-२१

२१:३९ ''मामूली शहर'' दक्षिण एशिया माइनर में, किलकिया प्रान्त में तारसुस राजधानी थी। यह व्यापारिक शहर था जहाँ एथेन्स से ज़्यादा शिक्षा और दर्शन के लिए भूख-प्यास थी।

२१:४० ''इब्रानी भाषा'' शायद अरामी, एक ऐसी भाषा जो बाईबल की उस इब्रानी भाषा से मिलती जुलती थी जो उन दिनों यहूदियों द्वारा पलश्तीन में बोली जाती थी। कभी-कभी इसे इब्रानी भाषा कहा जाता था क्योंकि इब्री लोग इसे बोलते थे।

२२:१ ७:१ देखें।

२२:३ 'गमलीएल' - ५:३४-४० - ''जोश में'' फिलि ३:४-६

२२:४,५ देखें ८:१,३; ९:१,२

२२:६-१३, ९:३-१८।

२२:१० मैं क्या करूँ प्रभु जी १ अध्याय ९ में यह सवाल नहीं है। यह दिखाता है कि पौलुस यीशु के प्रति कितना आधीन था। यह बात उस दिन शुरु हुई जब उसका बदलाव हुआ और यह ज़िन्दगी के आखिर तक रही। उसने यीशु को मात्र मुक्ति देने वाला नहीं लेकिन अपना स्वामी स्वीकार किया था। आज बहुत से लोग ऐसा करने की कोशिश कर रहे हैं। हमारा यह मानना है कि, पौलुस, दूसरे शिष्य और प्रेरितो ने कभी भी मुक्तिदाता होने और स्वामी होने में कोई अन्तर नही रखा था ।

यीशु एक चमकदार चरित्र वाले व्यक्ति हैं - मसीह जो इन्सान की सन्तान होने के साथ-साथ परमेश्वर के बेटे हैं, यहोवा इन्सानी पोशाक में हैं, वही गुनाह की सज़ा से बचानेवाले हैं। जब एक मनुष्य मन बदलाव के साथ उनके पास आता है, चाहे ज्यादा गहराई की बातें न भी जानता हो, लेकिन जानबूझ कर ऊपर बतायी गयी बातों का इन्कार करने के साथ साथ विश्वास मे बना नहीं रह सकता। इस अद्भुत व्यक्ति को अपनाने का मतलब है जैसा वह है और जो वह है वैसा उसे अपनाना। चाहे उन्हें अपनाते समय हम उन्हें अच्छी तरह से न भी जाने और सारा जीवन उन्हें समझने मे लगा दें। इसमें भी कि उनकी बात मानना क्या है। इस पद में हम देखते हैं कि पौलुस ने यीशु को अपना स्वामी करके अपनाया। इसलिए वह जानता था कि यीशु की आज्ञा मानना भी ज़रुरी है। मत्ती ४:१७ देखें। यीशु की प्रभुता के खिलाफ बलवा का रवैया या विद्रोह एक बात है, जिससे हर अपराधी को मुड़ना चाहिए। बिना किसी राजा के स्वामित्व को स्वीकार किए कौन उसके शासन का हिस्सा बन सकता है। इसी तरह यीशु मण्डली के स्वामी और प्रधान हैं। अपने मन में यीशु के प्रभुत्व को धिक्कारने के साथ कोई व्यक्ति उनकी देह (मण्डली) में कैसे जुड़ सकता है - १ कुरु १२:१२,१३ मत्ती ७:२१ परमेश्वर की इच्छा यह भी है कि हम यीशु को सर्वेसर्वा मान लें।

१० सुन सके। **मैने** कहा, "प्रभु मैं क्या करुँ? यीशु ने कहा, उठो और दमिश्क को जाओ। वहाँ तुम्हें वे सभी बातें बतायी
११ जाएँगी, जो तुम्हें करनी है।" **इसलिए** कि उस रोशनी की चकाचौंध की वजह से मैं कुछ भी देख नहीं पा रहा था ।
१२ मेरे साथी मेरे हाथों को पकड़ कर मुझे दमिश्क लाए। **हनन्याह** नाम का एक यहूदी भक्त, वहाँ के यहूदियों के बीच
१३ काफी इज़्ज़त वाला व्यक्ति था। **वह** आकर वहाँ खड़ा हो गया और मुझसे कहा, "भाई शाऊल देखने लगो।" उसी समय

मत्ती १६:२४-२६ सच में अगर खुदगर्जी (स्वार्थ) से मुड़ कर क्रूस उठाकर यीशु की मानने लग जाएँ तो हम अपने ऊपर अपना स्वामित्व खो देते हैं।

मरकुस १०:१७-२७ एक नवजवान जो अनन्त जीवन पाना चाहता था, यीशु ने बताया कि ज़रुरी है कि वह अपने ऊपर अपना स्वामित्व खो दे, आज्ञा मानने के लिए तैयार हो। जहाँ सच्चा विश्वास है वहाँ मसीह की मानने में कोई रुकावट नहीं हो सकती। यीशु यहाँ परमेश्वर के राज्य का हिस्सा बनने के बारे मे ही कह रहे थे - पद २३,२६,२७।

लूका ६:४६, मत्ती ७:२४ क्या हम यह मान सकते हैं कि जो लोग माफी पा चुके हैं, वे यीशु की शिक्षाओं का नज़रअन्दाज़ करेंगे - मत्ती ७:२६, लूका १४:२६,२७,३३ अगर हम यीशु के शिष्य नही हैं, तो क्या हम उनके मुक्तिदाता होने का दावा कर सकते है?

यूहन्ना १:१०-१२। पद १०,११ बताते हैं कि यीशु सृष्टिकर्ता हैं। पद १२ यह दिखाता है कि यीशु को इस विचार से अपनाया जाना चाहिए। प्रायः जब १२ पद का इस्तेमाल होता है लोग यह भूल जाते हैं।

यूहन्ना ८:२४ मे यीशु कहते हैं कि यीशु देह मे यहोवा हैं। सारी सृष्टि के स्वामी हैं। परमेश्वर की सन्तान बनने के लिए यहूदियों को यह विश्वास करना ज़रुरी था।

यूहन्ना १०:४,१४,२७। यीशु कहते है कि, उनकी भेड़ें उन्हें पहचानती हैं, अपने मालिक के रुप में। वे उनकी मानती भी हैं। अगर वे ऐसा नहीं करती हैं, तो उनकी भेंड़े नहीं है।

यूहन्ना १४:१५ अगर हम यीशु से प्यार नही करते हैं, क्या हम दावा कर सकते हैं कि हमने मुक्ति पायी हैं - १ कुरि. १६:२२ । अगर हम उनसे प्यार करते है, हम उनकी बात मानेंगे प्रेरित २:३६-३८। पतरस यहूदियों से कहता है कि उन्हें यीशु को धिक्कारने की गलती मान कर सच्चाई को अपना लेना चाहिए। बपतिस्मा यही सच्चाई दिखाता है। पुरानी ज़िन्दगी का खतम होना नयी ज़िन्दगी की शुरुआत। बिना यह समझे लोगों को बपतिस्मा नहीं लेना चाहिए।

प्रेरित ५:३२ क्या बिना पवित्र आत्मा हम बच सकते हैं रोमि ८:६

प्रेरित १६:३१ जेलर को यह नहीं कहा गया कि वह मुक्तिदाता यीशु को अपनाए लेकिन यह कि स्वामी यीशु को अपनाए। क्या हम यह सोच सकते हैं कि यीशु की आधीनता स्वीकार न करने वाले जीवन में पवित्र आत्मा आ सकता है। क्या विश्वास लाना और अपनाना एक ही बात नही हैं, ताकि जो विश्वास लाए वे यीशु के मालिकपन को भी अपनाएँ। यूहन्ना १:१२ ।

रोम १:५ देखें कि बात मानना और विश्वास जुड़े हुए हैं। दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। २ थिस्स १:८; रोमि ६:१७ से तुलना करें। पवित्र आत्मा एक आज्ञा मानने वाला मन भी देता है, विश्वास के साथ। हम आज्ञा मानने से स्वर्गिक पिता की सन्तान नहीं बनते हैं, लेकिन विश्वास से बनते हैं - एक ऐसा विश्वास जो हमें आज्ञाकारी बनाने लगता हैं। दूसरे सब तरह के विश्वास मरे हुए हैं - याकूब २:१४-१६ से तुलना करें।रोमि ६:१६-२३ पौलुस कह रहा है जो जिसकी मानता है, उसका गुलाम होता हें। अगर हम दुष्टता के प्रति समर्पित होते हैं तो हम उसके नौकर हैं। अगर परमेश्वर को अपना जीवन सौंपते हैं, तो उनके नौकर हैं। एक रास्ता मौत और दूसरा ज़िन्दगी को ले जाता है। क्या प्रेरितों द्वारा मिली शिक्षा साफ-साफ यीशु की प्रभु सत्ता को नही दिखाती है? ऐसे कैसे हो सकता है कि हम परमेश्वर के गुलाम हो, और यीशु हमारे स्वामी न हो?

रोमिः८:१४ क्या परमेश्वर की आत्मा हमेशा हमारी अगुवाई नहीं करती कि यीशु को प्रभु (मालिक) मान लें? सवाल पूछने का मतलब है जवाब देना। क्या पौलुस यह नहीं कहता कि जो पवित्रात्मा के मार्गदर्शन में चलते है, परमेश्वर के बेटे-बेटियाँ हैं?

रोमि १०:६ क्या यीशु को प्रभु अंगीकार करने के साथ अपने मन में प्रभु होने से इन्कार कर सकते हैं? क्या हम कल्पना कर सकते है कि यह मुक्ति का तरीका है? क्या यह ढोंग नही हैं? ध्यान दे, वह मुक्ति की बुनियादी बातों की बात कर रहा है। रोमि १४:६ जो विश्वास से यीशु के पास आते हैं, उनके जीवन मे वह इस उद्देश्य को क्या पूरा नहीं करेंगे?

इफि २:१० और फिलि. १:६ विश्वासियों के मन मे एक अच्छा काम यह किया गया है कि वे यीशू को समर्पण करें और ज़िन अच्छे कामों को करने के लिए ठहराया है, उन्हें करें।

फिलि २:१०,११ जिन लोगों को प्रभु अपना होने के लिए बुलाते हैं, उनकी ज़िन्दगी में ऐसा होता है।

कुल २:६ कुलस्से के लोगों ने यीशु को अपनाया था, स्वामी की तरह। यही विश्वास उन्हें सिखाया गया और मिला था। सभी सच्चे विश्वासी ऐसा करते हैं।

१ थिस्स १:६,१० यहाँ सच्चे बदलाव का एक उदाहरण है। क्या बिना यीशु को प्रभु स्वीकार किए, परमेश्वर के लिए किसी सेवा की संभावना है?

इब्रा ५:६ अनन्त मुक्ति उन्हें मिलती है जो यीशु की मानते हैं। इससे हम जान जाते हैं कि बचाने वाला विश्वास और आज्ञा मानना साथ साथ चलते हैं। इब्रा ८:१०; यहेज ३६:२६,२७ आदि।

१ पत १:२ लोगों के चुने जाने और पवित्र आत्मा के काम का लक्ष्य यह है कि यीशु मसीह की बात मानी जाए। यहाँ देखें खून के छिड़के जाने से पहले आज्ञा मानना है।

१ पत ४:१७ - पतरस दिखाता है कि परमेश्वर का शुभसंदेश ऐसा है कि लोग उसे अपनाएँ । अगर नहीं करेंगे तो भयानक भविष्य है।

१४ से मुझे दिखने लगा। **उसने** मुझसे यह भी कहा, हमारे बापदादों के परमेश्वर ने तुम्हें चुन लिया है, ताकि तुम उनकी
१५ इच्छा जान सको, उस धर्मी को देखो उनके मुँह से उनकी आवाज़ सुन सको। **क्योंकि** जो तुमने देखा और सुना है
१६ उन सभी बातों में उनके गवाह ठहरोगे। **अब** तुम देर क्यों कर रहे हो? उठो और बपतिस्मा लो। और यीशु पर विश्वास
१७ करने से अपने अपराधों की माफी हासिल कर लो। **जब** मैं यरुशलेम आकर प्रार्थना भवन में प्रार्थना करने लगा, तो
१८ बेहोश सा हो गया। **तब** मैंने यीशु को मुझसे यह कहते हुए सुना, "जल्दी करो और यरुशलेम से भाग जाओ, क्योंकि
१९ यहाँ पर लोग तुम्हारी बातों को मानेंगे नही" **मैंने** कहा, "यीशु उन्हें मालूम है कि आप पर विश्वास करने वालों को
२० मैं मारता और जेल में डलवाता था। **जब** आपके शहीद स्तिुफनुस को पत्थरवाह किया जा रहा था, तब मैं भी वहाँ
२१ खड़ा था। उसको मारनेवालों के कपड़ों की मैं रखवाली कर रहा था और उसकी हत्या में सहभागी भी था। **उन्होंने**
२२ मुझसे कहा, "जाओ, क्योंकि मै तुम्हें यहाँ से दूर गैरयहूदियों तक भेजूँगा।'' **यह** सब कुछ सुनने के बाद उन लोगों ने
२३ अपनी आवाज़ को बुलन्द करते हुए कहा, ऐसे इन्सान को तो इस दुनिया में जीने नही देना चाहिए'' **जब** वे लोग चिल्लाते
२४ गए, और अपने कपड़ों को फेंकते और हवा में धूल उड़ाते गए, **कमाण्डर** ने हुकुम दिया कि उसे किले मे ले जाया
जाए। उसने यह भी कहा, बेंत लगवाकर वह जानना चाहेगा कि ये लोग उसकी खिलाफत में इतनी जोरों से क्यों चिल्ला
२५ रहे थे। **जब** उन्होंने चमड़े के बेल्ट से उसे बाँधा, पास में खड़े हुए सूबेदार से पौलुस ने कहा, ''क्या यह वाजिब है कि
२६ बिना गुनाह साबित हुए एक रोमी नागरिक की पिटाई की जाए?'' **सूबेदार** ने यह सुनकर कमाण्डर को जाकर कहा,
२७ "संभल कर रहना क्योंकि यह व्यक्ति रोमी नागरिक है'' **यह** सुनकर कमाण्डर ने आकर उससे कहा, ''मुझे बताओ,
२८ क्या तुम रोमी नागरिक हो?'' उसने उत्तर दिया, ''हाँ'' **कमाण्डर** ने कहा, ''मैने काफी कीमत चुकाकर यह आज़ादी
२९ हासिल की है।'' पौलुस ने कहा, ''मैं तो आज़ाद ही पैदा हुआ था।'' **तब** जो लोग उससे पूछताछ करने वाले थे, उन्होंने
उसे तुरन्त छोड़ दिया। कमाण्डर भी डर गया, जब उसे मालूम पड़ा कि उसने एक रोमी नागरिक को हिरासत में ले
३० लिया गया था। **अगले** दिन वह जानना चाहता था कि यहूदी उस पर दोष क्यों लगा रहे थे। इसलिए उसने उसे
आज़ाद कर दिया और महायाजकों और उनकी सभा को बुलाया। उसने पौलुस को लाकर उनके सामने खड़ा किया।

---

१ यूहन्ना २:४-६ इस शिक्षा की रोशनी मे क्या हम सोच सकते हैं कि यीशु का सच्चा और बचानेवाला ज्ञान, बिना आज्ञा मानने की तबियत रखने से मिल सकता है।

प्रका. ३:२० देखें। पद १४ में, यीशु मण्डली के सामने मुक्तिदाता के रुप में नही, परमेश्वर की 'सृष्टि के शासक' के रुप में अपने आप को प्रस्तुत करते हैं - पद १४। प्रायः इस सच्चाई को नज़र अन्दाज किया जाता है जब पद २० को उपयोग में लाते हैं। वह मालिक और राजा की शक्ल में दरवाज़े के बाहर हैं। भीतर आने पर भी उन्हें यही जगह मिलनी चाहिए। जितना हम उन्हे इस तरह कबूल करेंगे, हमारा फायदा होगा, क्या ऐसे और पद हैं जो दिखाते हैं कि मुक्तिदाता और मालिक दोनों साथ ही साथ हैं। मै यह नहीं कह रहा हूँ, कि हर एक जो यीशु को अपनाता है, पहले ही से यह सच्चाई जानता है। न ही मैं यह कह रहा हूँ कि उन्हें अपनाने के बाद हम सभी बातों में उनकी बात हमेशा मानते हैं या कभी बलवाई नही बनते हैं। हम सभी नाकामयाब होते हैं (याकूब ३:२)। सच्चाई यह है कि जब लोग सच्चे विश्वास से यीशु को अपनाते हैं, परमेश्वर उनके दिलों और मनों में बड़ा काम करते हैं, - उन्हें पवित्र आत्मा मिलता है।

जो इन्सान नया जीवन चाहते हैं लेकिन साथ-साथ यीशु के शासन के आधीन नहीं आना चाहते, वह स्थिर ज़मीन पर नहीं हैं। सिर्फ यीशु के दुश्मन ही ऐसा करेंगे। लूका १९:१४।

जो लोग आत्मिक रुप से अब्राहम के बेटे-बेटियाँ हैं, वे अब्राहम की तरह काम करेंगे - देखे इब्रा ११:८, याकुब २:१४, १७, २०-२४।

हर जगह न्यू टेस्टामेन्ट में लिखा है, विश्वास से न कि कामों से मुआफी है, यह भी कि प्रभु चाहते हैं कि हम उनकी भेड़ बनें, उनकी बात माने। ऐसा कोई विश्वास जो यीशु के आधीन नही होता है सच्चा विश्वास नहीं है। सच्चा विश्वास सिर्फ ग्रहण नहीं करता यह एक शक्ति है जिससे कुछ होता है - यह है बात मानना।

२२:१४-१६ ये शब्द अध्याय ९ में हैं। ''धर्मीजन'' यीशु के लिए सही शब्द हैं ३:१४।

२२:१५ देखें १:८ ।

२२:१६ २:३८, मत्ती ३:२; मरकुस १६:१६, इब्रा ६:१४ ।

२२:१७-२१ ६:२७-३० ।

२२:२० देखें ७:५७-८:१ ।

२२:२१ गल २:७,८ ।

२२:२२ देखें १६:३६।

२२:२४ देखें ५:४०; १६:२२,२३; मत्ती २७:२६ ।

२२:२५-२८ देखें १६:३७,३८ ।

२२:२८ -

२२:३० मत्ती ५:२२

२३, **सभा** की तरफ टकटकी लगाकर पौलुस ने देखा और कहा, ''लोगो और भाईयो, आज तक मैंने अच्छे मन (विवेक)
२ से परमेश्वर के साम्हने जीवन जीया है'' **हनन्याह** महायाजक ने पास खड़े हुए लोगों को यह हुकुम दिया कि उसके
३ गाल पर मारें। **तब** पौलुस ने कहा, ''तुम चूना फिरी हुयी दीवार (कब्र), परमेश्वर तुम्हें सज़ा देंगे क्योंकि तुम
नियमशास्त्र के तहत मेरा इन्साफ करने के लिए बैठे हो लेकिन नियमशास्त्र के खिलाफ मुझे मारने का हुकुम देते हो।
४,५ **तब** जो लोग नज़दीक खड़े थे उन्होंने कहा, ''तुम महायाजक से क्यों बदतमीज़ी कर रहे हो?'' **तब** पौलुस बोला, ''भाइयो
मुझे मालूम नहीं था कि वह महायाजक हैं। क्योंकि यह लिखा है तुम अपने अगुवों से बुराई के साथ मत पेश आओ।
६ **जब** पौलुस को मालूम हुआ कि वहाँ कुछ फरीसी थे और कुछ सदूकी, तो वह सभा मे ऊँची आवाज़ में बोल उठा,
''भाइयो, मै फरीसी हूँ और फरीसी का बेटा भी। भविष्य की आशा और मरे हुओं मे से जी उठने के बारे में मेरे ऊपर
७ मुकद्दमा चलाया जा रहा है''। **उसके** यह कहते ही फरीसियों और सदूकियों में आपसी मनमुटाव हो गया और पूरी
८ सभा दो हिस्सो में बँट गयी। **क्योंकि** सदूकियों का कहना है कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं। वे यह भी कहते
९ हैं कि न ही स्वर्गदूत और आत्मा कुछ है। लेकिन फरीसी दोनों ही बातों को मानते हैं। **वहाँ** बड़ा हल्ला-गुल्ला हुआ
और जो विद्वान फरीसियों की तरफ थे, उन्होंने खड़े होकर खिलाफत् यह कहते हुए की, ''हम इस आदमी में किसी
तरह का खोट नही पाते हैं। अगर किसी आत्मा या स्वर्गदूत ने उससे बातचीत की भी है तो हम परमेश्वर से लड़नेवाले
१० कौन होते हैं,'' **जब** आपसी झगड़ा बहुत बढ़ गया, इस डर से कि कहीं लोग पौलुस को मार न डालें, कमाण्डर ने
११ सैनिकों को हुकुम दिया कि ज़बरदस्ती उसे लोगों के बीच से हटाकर बैरेक में ले जाएँ। **अगली** रात को यीशु उसके
पास आ खड़े हुए और कहा, ''हिम्मत रखो पौलुस। जैसे तुमने यरुशलेम में मेरी गवाही दी थी, इसी तरह से रोम
१२ में भी तुम्हें करना है।'' **सुबह** होते ही, कुछ यहूदियों ने एक झुण्ड बनाकर शपथ ली, कि जब तक वे पौलुस को
१३ जान से मार न डालें, तब तक वे न खाएंगे और न ही पानी पीएँगे। **जिन** लोगों ने यह बुरी योजना बनायी
१४ थी, वे संख्या में करीब चालीस रहे होंगे। **उन्होंने** महायाजकों और बुज़ुर्ग लोगों से आकर कहा, ''हमने एक ज़बरदस्त
१५ प्रण किया है। वह यह कि जब तक हम पौलुस को जान से मार नहीं लेते, तब तक हम भूखे रहेंगे।'' **इसलिए** तुम
सभा के साथ एक मत होकर कमाण्डर को इशारा करो, कि वह पौलुस को तुम्हारे पास कल अच्छी तरह से पेश करे।
यह उसके बारे में और ज्यादा जानने का एक बहाना होगा। इसके पहले कि वह यहाँ आए हम उसे जान से मारने
१६ के लिए तैयार रहेंगे। **जब** पौलुस के भाँजे ने ताक लगा कर घात करने की योजना के बारे में सुना, तो बैरेक में जाकर
१७ पौलुस को यह खबर दे दी। **तब** पौलुस ने एक सूबेदार को बुलाकर कहा, ''इस व्यक्ति को कमाण्डर के पास ले जाओ,
१८ वह कुछ कहना चाहता है।'' **इसलिए** वह उसे कमाण्डर के पास ले गया और कहा, ''कैदी पौलुस ने मुझे बुलाकर
१९ मुझे कहा कि मैं इस नवजवान को तुम्हारे पास लाऊँ, क्योंकि यह कुछ कहना चाहता है।'' **तब** कमाण्डर ने उसके
२० हाथ पकड़कर उसे एक किनारे अकेले में ले जाकर पूछा, ''तुम मुझे क्या बताना चाहते हो,'' **उसने** कहा, ''यहूदियों
ने यह ठान लिया है कि पौलुस को कल सभा के सामने इस बहाने से लाएँ कि उन्हें कुछ और सही-सही जानकारी

२३:१ ''विवेक'' - न्यू टेस्टामेन्ट में पौलुस के संदेश और चिट्ठयों में यह शब्द करीब २३ बार आता है। न्यू टेस्टामेंन्ट के दूसरे हिस्सों मे यह सिर्फ नौ बार आया है। कुछ खास आयतें रोमि २:१५; १ तिमो १:५,१९; ३:८; ४:२; २ तिमो १:३, तीतुस १:१५; इब्रा ६:६,१४; १०:२२; १ पत ३:१६ हैं ।

विवेक, वह भीतरी योग्यता है जो सही और गलत मे अन्तर करती है। यह एक भीतरी अलार्म है, जो उसे समय बोलती है जब अपने सही-गलत के पैमाने के खिलाफ कोई इन्सान कुछ करता है। यह शान्त और नर्दोष रहता है जब अपने पैमाने के अनुरुप करता है। पौलुस ने यह ज़ोर डाला कि एक ''साफ सुथरा'' विवेक रखा जाए (१ तिमो १:१९)। २४:१६ और २ कुरि. १:१२ में वह एक ऐसा सिद्धान्त देता है जिसे खुद उसने अपनाया था। जब वह मण्डली को सता रहा था तब भी अच्छा विवेक रखे था (२६:९; फिलि ३:६)। वह सोचता था कि जो कुछ कर रहा है सब सही है (२६:९ की तुलना करे यूहन्ना १६:२ से)
इससे मालूम पड़ता है कि विवेक ऐसी योग्यता नहीं है जो गलतियों से परे हो और हमेशा सही हो। परमेश्वर के वचन से इसे सिखाए जाने की ज़रुरत है। इब्राः ६:१४ के नोट्स भी देखें ।

२३:२ यह हनन्याह जो दुष्ट और लालची था, ४८ ए.डी. के आसपास यहूदी महायाजक बन गया। बुराई के बारे में पौलुस की स्थिरता से उसे गुस्सा आता था।

२३:३ ''चूना पुती हुयी दीवार'' मत्ती २३:२७; यहेज १३:१०-१२ से तुलना करें। कुछ ही समय बाद उसकी हत्या कर दी गयी। पौलुस को मारना परमेश्वर के नियम के खिलाफ था क्योंकि नियम शास्त्र के अनुसार बिना आरोप सिद्ध हुए दण्ड देना जायज़ नहीं था।

२३:५ यहाँ ऐसा लगता है कि या तो पौलुस की आँखें खराब थी या हनन्याह अपनी खास पोशाक पहने हुआ नही था या वह अपनी खास जगह पर नहीं था। वह सभा जल्दबाज़ी मे बुलायी गयी थी। पौलुस निर्गमन २२:२८ की तरफ इशारा करता है।

२३:६ यहाँ पौलुस अपनी बुद्धिमानी से अपने दुश्मनों के बीच फूट पैदा कर देता है। फरीसी के रूप में उसे बढ़ाया गया था ।(फिलि ३:५, मत्ती ३:७ के नोट्स देखें) लेकिन महायाजक और सेन्हेड्रिन के दूसरे सदस्य, सदूकी थे।

२३:७ कभी-कभी धार्मिक मतभेद बहुत हिंसात्मक होते है ''हिम्मत बाँधो - १८:८,१०

२३:१२-३५ पौलुस के बदलाव के बाद ही से यहूदी उसे मार डालना चाहते थे (९:२३-२५;२८-३०; १४:१९; १७:५)। वे ऐसा नहीं कर पाए। पौलुस की हिफाज़त लिए प्रभु ने उसके भाँजे का इस्तेमाल किया (पद १६)। परमेश्वर ने रोमी सूबेदार को भी इस्तेमाल किया (पद

२१ चाहिए। **लेकिन** उनकी एक मत सुनना, क्योंकि उनमें से करीब चालीस जन घात लगाए बैठे हैं, कि मौका मिलते ही
हमला करें। उन्होंने यह कसम खायी है कि जब तक पौलुस को मार न डालें, तब तक न खाएँगे और न पीएँगे। अब
२२ वे आपकी तरफ से आदेश के इन्तज़ार में हैं। **इसलिए** कमाण्डर ने उन जवानों को यह हुक्म देकर विदा किया, ''जो
२३ बातें तुमने मुझसे कहीं हैं, उन्हें किसी और को मत बताना।'' **उसने** दो सूबेदारों को बुलाकर उनसे कहा, ''२०० सैनिकों,
२४ सत्तर घुड़सवारों और दो सौ भाले वाले सिपाहियों को रात के नौ बजे कैसरिया भेजो। **पौलुस** को किसी घोड़े पर
२५,२६ बैठाकर गवर्नर फेलिक्स के पास सुरक्षित पहुँचा दो।'' **उसने** इस तरह की एक चिट्ठी लिखी :**महाप्रतापी** फेलिक्स
२७ हाकिम को क्लौदियुस लूसियास का सलाम। **इस** आदमी को यहूदियों ने पकड़ लिया था और उसे मार डालने पर थे।
तभी मैं अपनी फौज के साथ वहाँ पहुँच गया और उसे बचा लिया क्योंकि मुझे मालूम पड़ा कि वह रोमी नागरिक है।
२८,२९ **जब** मैं उस पर लगाए गए आरोप का कारण जानना चाहता था,तो उसे सभा के सामने लाया। **मैंने** यह भी पाया कि
यहूदियों की धर्म पुस्तक के बारे में उठने वाले सवालों के बारे में ही उसे गुनाहगार माना जा रहा था। लेकिन
३० मौत की सज़ा या हिरासत के लायक कोई भी गुनाह उसने नहीं किया था। **जब** मुझे यह मालूम पड़ा कि कुछ
यहूदी उसे घात करने की ताक में थे, तब मैंने उसे आपके पास भेज दिया। आरोप लगाने वालों को मैंने यह भी
३१ कहा कि वे आपकी मौजूदगी में उस आरोप को साबित करें। **तब** जैसी आज्ञा उन सैनिकों को मिली थी, वे
३२ पौलुस को एन्टीपॅट्रिस के पास रात ही में ले आए। **अगले** दिन उस के साथ जाने के लिए उन्होंने घुड़सवारों को
३३ छोड़ दिया और वापस बैरेक लौट आए। **जब** वे घुड़सवार कैसरिया पहुँचे, उन्होंने गवर्नर को पत्र देकर पौलुस को भी
३४,३५ उनके सामने पेश किया। **गवर्नर** ने पत्र पढ़ते ही यह जानना चाहा, कि वह किस प्रान्त का है। **जब** उसे मालूम
हुआ कि वह किलकिया का है तो कहा,''जब तुम पर आरोप लगाने वाले आएंगे तब मै तुम्हारी सुनूँगा।'' उसने यह
२४ भी कहा कि उसे हेरोदेस की सरकार के निवास पर रखा जाए। **पाँच** दिन के बाद हनन्याह महायाजक तमाम
अगुवों/बुजुर्गों और एक वकील तिरतुल्लुस के साथ वहाँ पहुँचा। उन्होंने पौलुस के खिलाफ लगाए गए आरोपों को गवर्नर
२ के सामने रखा। **जब** पौलुस को भीतर बुलाया गया तिरतुल्लुस पौलुस के खिलाफ़ में आरोपों को पेश करने लगा। उसने
३ फेलिक्स राजा से यह भी कहा, **महाराजा,** ''आपकी वजह से हम चैन से रह रहे और आपकी देखरेख में इस देश
४ के हित के लिए सब कुछ किया जा रहा है। महाराजधिराज, फेलिक्स! **हर** जगह और हमेशा हम धन्यवाद के साथ
५ इस बात को मानते हैं। **लेकिन** कि हमने यह पाया है कि यह आदमी दुनिया मेंऔर सब यहूदियों के बीचबलवा पैदा
६ करने वाला है। यह नासरी समुदाय का लीडर भी है। **इसने** प्रार्थना भवन(मन्दिर) को अशुद्ध करने की भी हिम्मत की
७ है। हमने इसे पकड़ लिया है और नियमशास्त्र के मुताबिक इसका इन्साफ भी कर दिया होता। **लेकिन** कमाण्डर
८ लायसिअस ने ज़बरदस्ती आकर उसे हमारे हाथों से छुड़ा लिया। उसने **आरोपियों** को यह आज्ञा दी कि वे आप से
९ मिलें। आप खुद उसकी जाँच पड़ताल करके यह समझ सकते हैं कि हमारे आरोपों मे कितना दम है।'' **यहूदियों** ने
१० भी इन बातों को सुनकर हामी भरी। **गवर्नर** का इशारा पाते ही पौलुस ने यह जवाब दिया,''क्योंकि मैं यह जानता
११ हूँ कि बहुत सालों से आप इस देश के जज रहे हैं, इसलिए मैं खुद अपनी सफाई खुशी से देता हूँ। ''**आप** यह जान
१२ सकते हैं, की अभी बारह दिन भी नहीं हुए जब मैं आराधना करने यरुशलेम को गया था। **वहाँ** न ही आराधनालय
१३ और न ही शहर में उन्होंने मुझे किसी के साथ बहस करते या बलवा शुरु करते देखा। **न** ही वे उन बातों का सबूत
१४ दे सकते हैं, जिसके बारे मे वे मुझे गुनाहगार ठहराने की कोशिश कर रहे हैं। **लेकिन** मैं यह दावे के साथ कहता
हूँ कि जिस मत को कुपन्थ का नाम दिया जा रहा है, मैं उसी की रीति पर नियमशास्त्र और भविष्यद्वक्ताओं की किताबों
१५ की ही बातों को मानता और अपने बापदादों के परमेश्वर की उपासना करता हूँ। **मुझे** परमेश्वर से जो आशा है
१६ उसे वे भी मानते हैं। वह यह कि मरे हुए जी उठेंगे, चाहे वे धर्मी हों या अधर्मी। **मैं** परमेश्वर और मनुष्य की तरफ

१७), रोमी कमाण्ड़र को (पद १८), २०० सिपाहियों को, ७० घुड़सवारों को, २०० भाले लिए हुए सैनिकों को (पद २३) यहूदियों के रोमी गवर्नर को (पद ३४)। अगर जरुरत पड़ती तो प्रभु ने स्वर्ग से स्वर्गदूतों की फौज भेज दी होती।

२३:२६ ५२ ए.डी. मे फेलिक्स, यहूदिया का रोमी गवर्नर बन गया था। वह निर्दयी और कामुक था।

२४:१ २३:२ देखे ''वकील'' - था

२४:५ ''महामारी'' - १६:२०; १७:६ एक बार फिर सुलह कराने वाले को एक उपद्रव करवाने वाला कहा गया। सच पूछें तो पौलुस के विरोधी समस्या पैदा कर रहे थे। ''नासरियों'' - २:२२, मत्ती २:२३। उसका मतलब था कि पौलुस ओर उसके समान सोचने वालों ने यहूदियों के मजहब का छोड़ कर यीशु को अपनाया था। पौलुस और उसके साथियो को वे निन्दा करने वाला और गलत बातें सिखाने वाले समझाते थे ।

२४:१४ ''मार्ग'' ९:२; २२:४। नियमशास्त्र और नबियों का मतलब यहूदियों की किताब से था (मत्ती ५:१७; लूका २४:२७)। पौलुस कहता है कि उस पर उसे यकीन है। यह खास बात है। ''संघ'' या ''गलत शिक्षा''

२४:१५ ''फिर जी उठना'' - दानिय्येल १२:२; यूहन्ना ५:२८,२९ कुछ लोग (पद १,९) फरीसी रहे होंगे अगर वे मरे हुओं के जी उठने को मानते होंगे (२३:८)

२४:१६ २३:१ के नोट्स देखें

१७ एक शुद्ध विवेक रखने का कष्ट भी उठाता हूँ। ‘‘**बहुत** सालों के बाद गरीबों के लिए दान और भेंट लाने के लिए मैं
१८ अपने देश में आया था। **उसी** समय अगर उनके पास मेरे खिलाफ कोई बात थी, तो उन्हें आज यहाँ अपनी बात
१६ आपके सामने रखनी चाहिए थी **या** फिर जो यहाँ पर हैं, वे बताएँ कि जब मैं सभा के सामने खड़ा किया गया था,
२१ तब उन्होंने मुझ में क्या खोट पाया था। **हाँ** सिर्फ एक बात हो सकती है जो मैंने चिल्ला कर कही थीः वह थी मरे
२२ हुओं के जी उठने पर मेरा विश्वास शायद इसी के लिए आज मेरा न्याय हो रहा है।’’ **जब** फेलिक्स ने सभी बातों
का सही-सही खुलासा सुना, तो सभा यह कहते हुए टाल दि कि, जब लायसिअस कमाण्डर यहाँ हाज़िर होगा, तब मैं
२३ अच्छी तरह से इस मसले पर सही-सही बयान दे सकूँगा। **उसने** एक सूबेदार को यह हुक्म दिया, कि पौलुस को
हिरासत में तो रखे, लेकिन कुछ आज़ादी भी दे। साथ ही यह भी कि उसके दोस्तों को उसकी सेवा करने या भेंट देने
२४ से रोका न जाए। **कुछ** दिनों के बाद फेलिक्स अपनी यहूदी पत्नी ड्रसिल्ला के साथ आया। उसने पौलुस को बुलवाकर
२५ यीशु पर उसके विश्वास के बारे में सुना। **पौलुस** ने धर्मी ठहराए जाने, आत्म संयम और आनेवाले न्याय के बारे
में उसे बताया। डरते और काँपते हुए फेलिक्स ने जवाब में कहा, ‘‘अभी तुम वापस चले जाओ, जब मेरे पास समय
२६ होगा, तब मै तुम्हें बुलवाऊँगा’’ **वह** पौलुस को छोड़ने के बदले में उससे कुछ धन की अपेक्षा भी कर रहा था। इसलिए
२७ वह उसे बार-बार बुलाकर उससे बातचीत किया करता था। **दो** साल के बाद पुरखियुस फेस्तुस, फेलिक्स की जगह पर
नियुक्त किया गया। फेलिक्स यहूदियों को खुश करना चाहता था इसलिए पौलुस को जेल ही में रहने दिया।
२५,२ **तीन** दिन के बाद फेस्तुस प्रान्त में आया। वह कैसरिया से यरुशलेम को गया। **तब** महायाजक और यहूदियों के अगुवों
३ ने पौलुस के खिलाफ शिकायत करते हुए बिनती की। **उन्होंने** पौलुस को यरुशलेम बुलवाने के लिए कहा, ताकि वे रास्ते
४ मे छिप कर उस पर वार करके मार डालें। **लेकिन** फेस्तुस ने कहा कि उसे कैसरिया ही में रहने दिया जाए। वह जल्दी
५ ही वहाँ जाएगा। **इसलिए** उसने उत्तर दिया, ‘‘तुममें से जो योग्य हैं, मेरे साथ चलें और अगर उसकी कुछ गलती है,तो
६ उसे साबित करें।’’ **जब** वह वहाँ उनके साथ दस दिन से ज़्यादा ठहरा रहा तभी कैसरिया गया। अगले दिन न्याय आसन
७ पर बैठते ही उसने पौलुस को उसके सामने पेश किए जाने की आज्ञा दी। **जब** उसे वहाँ लाया गया तभी यरुशलेम
८ से बहुत यहूदियों ने आकर उसे घेर लिया और ऐसे आरोप लगाए, जिनका उनके पास कोई सबूत नहीं था। **उसने**
अपने आप से कहा, ‘‘मैने किसी भी तरह से यहूदियों की धार्मिक आस्था को चोट नही पहुँचाया है। न ही मैंने प्रार्थना
६ भवन या कैसर के खिलाफ कुछ कहा है।’’ **लेकिन**, यहूदियों को खुश करने के लिए पौलुस को जवाब में कहा, ‘‘क्या
१० तुम यरुशलेम जाकर मेरे सामने इन्साफ के लिए खड़े होने के लिए तैयार हो?’’ **तब** पौलुस ने कहा, ‘‘मैं आज सीज़र
के न्याय आसन के सामने खड़ा हूँ, यहीं मेरा इन्साफ होना चाहिए। जैसा तुम जानते हो, मैंने यहूदियों का कुछ भी
११ नहीं बिगाड़ा है। **अगर** मैंने कुछ गलत किया है, मौत की सज़ा के लायक कुछ किया है, तो मै मरने के लिए तैयार

२४:१७ रोमि १५:२५-२७; १ कुरि. १६:१-४

२४:१८,१६ २१:२६-२६ देखें

२४:२०,२१ २२:३०-२३:१० देखें

२४:२२ पद १८; २१:३१; २३:२३-२६

२४:२४ ड्रसिल्ला यहूदी थी और फेलिक्स की तीसरी पत्नी। हालाँकि देश में फेलिक्स सबसे ज्यादा ताकतवर था और पौलूस के मामले को सुलझाना चाहता था, पौलूस उसे यीशु के बारे में बताने से हिचकिचाया नही। तुलना करे २०:२४; मत्ती १०:१८

२४:२५ फेलिक्स को संयम नहीं था (२३:२६)। पौलुस सीधे उसके मन की बुराई और ज़रुरत तक पहुँचा। हर युग में उसके समान लोग होते हैं - वह अपने फैसले को टालना चाहता था। ऐसे लोग जो परमेश्वर के खिलाफ बलवा करने वाले होते हैं, क्या उनके लिए कोई उचित समय आता है?

२४:२६ उसे स्वर्गिक खज़ाना मिलना था लेकिन पृथ्वी पर अधिकार चाहने वाले तमाम लोगों की तरह ही वह था। घूस (रिश्वत) पर देखें - निर्ग २३:८; १ शमू ८:३; १२:३; भजन १५:५; २६:१०; यशा ३३:१५। न ठहरने वाली बातों (चीज़े) के लिए कितनी बार लोग हमेशा ठहरने वाली चीज़ों को तुच्छ समझते हैं।

२४:२७ क्या यह अजीब नहीं लगता है कि सबसे बड़े प्रेरित को परमेश्वर ने दो साल तक नज़रबन्द रखा? १२:२-७ से तुलना करें। पौलूस का जेल मे रहना बेकार नहीं गया। पिता के साथ सहभागिता गवाही और चिट्ठी लिखने के लिए काफी समय उसे मिल गया।

२५:१ प्रेरितों के काम नामक किताब के अलावा हम फेस्तुस के बारे मे कम जानते हैं। लगभग ६० ए.डी. में वह गवर्नर हो गया था और दो साल पूरे होने से पहले मर गया।

२५:३ २३:१२,२१ देखे

२५:७ २४:१३ देखे

२५:१० रोम का राजा कैसर था। रोम यहूदिया पर राज्य करता था और रोमी गवर्नर अपराधिक मामलों मे जज था।

२५:११ रोमी नागरिक के रुप में उसे यह माँग करने का अधिकार था कि रोम मे राजा के सामने उसका मुकद्दमा है। यह भी कि राजा खुद फैसला सुनाए (पद २१)। पौलुस ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि सही फैसले की संभावना कम थी। फेलिक्स यहूदियों को खुश करना माँगता था। पौलुस को भी मालूम था कि प्रभु उसे रोम भेज रहा है (२३:११)

हूँ। लेकिन अगर मेरे खिलाफ लगाए गए आरोपों में कुछ दम नहीं है, तो उनके हाथों में मुझे सुपुर्द करने का हक किसी
१२ को नहीं है। सीज़र से मैं यही कहना चाहता हूँ । **तब** सभा के साथ सलाह मशविरा करने के बाद फेस्तुस ने जवाब
१३ दिया, ''क्या तुमने सीज़र के सामने अपील की है? तुम्हे सीज़र के सामने खड़ा होना पड़ेगा। **कुछ** दिनों के बाद
१४ राजा अग्रिप्पा और बर्निस फेस्तुस से भेंट करने कैसरिया आए। **कई** दिन गुज़रने के बाद, फेस्तुस ने पौलुस के विषय
१५ को राजा के सामने पेश करते हुए कहा, ''फेलिक्स ने एक व्यक्ति को जेल में रख छोड़ा है। **जब** मैं यरुशलेम में था,
१६ उस समय महायाजकों और यहूदी बुज़ुर्गों ने उसके खिलाफ फैसला सुनाने के लिए मुझसे कहा था। **मैंने** जवाब में उनसे
कहा कि यह रोमी लोगों की रीति नही है,कि किसी आरोपी को मौत की सज़ा सुनाएँ जब तक कि आरोपी को अपने
१७ विरोधियों के सामने अपनी निर्दोषता सिद्ध करने का मौका न मिले। **इसलिए**, जब वे यहाँ पर आए थे, बिना देर किए
१८ हुए दूसरे दिन ही मैं न्यायासन पर बैठा और उस व्यक्ति को भीतर लाने का हुकुम दिया। **जब** आरोपी खड़े हुए तो
१९ जैसा मैंने सोचा, वैसा आरोप वे उसके खिलाफ नहीं लाए थे। **उनके** अपने धर्म से सम्बन्धित उसके खिलाफ कुछ सवालों
के साथ, यीशु नामक व्यक्ति के मरे हुओं मे से जी उठने के बारे में पौलुस के विश्वास से सम्बन्धित सवाल भी थे।
२० **क्योंकि** इन सब सवालों के बारे में मुझे शक था, मैंने उससे जानना चाहा कि वह इस विषय पर इन्साफ किए जाने
२१ के लिए यरुशलेम जाना चाहेगा या नहीं। **लेकिन** जब पौलुस ने कहा कि औगस्तुस का फैसला उसे मंजूर होगा, मैंने
२२ आज्ञा दी कि जब तक मै उसे सीज़र के पास न भेज दूँ, तब तक उसे यहीं रखा जाए।'' **तब** अग्रिप्पा ने फेस्तुस से
२३ कहा, ''मैं इस व्यक्ति के मुँह से सब कुछ सुनना माँगता हूँ। **अगले** दिन जब अग्रिप्पा और बर्निस बड़ी शान शौकत
के साथ आए और उसको सुनने के लिए कमाण्डरों और गणमान्य लोगों के साथ महल में दाखिल हुए तब फेस्तुस
२४ की आज्ञानुसार पौलुस को यहाँ लाया गया। **फेस्तुस** ने कहा, राजा अग्रिप्पा और यहाँ उपस्थित हर एक जन देख ले
कि यहूदियों ने मुझसे इस व्यक्ति की शिकायत की है। यरुशलेम और यहाँ के लोगों की यही माँग है कि इस इन्सान
२५ का ज़िन्दा नहीं रहने दिया जाए। **लेकिन** मैंने यह पाया है कि इसने मौत की सज़ा के लायक कोई गुनाह नहीं किया है।
२६ यह भी कि उसने चाहा कि ऑगस्तुस के साम्ने उसके केस की सुनवाई हो, मैंने उसे वहाँ भेजने का इरादा किया, **लेकिन**
मेरे पास ऐसा उसके खिलाफ कुछ सबूत नहीं है जिसे मैं अपने राजा को बताऊँ। इसलिए राजा अग्रिप्पा मै उसे आपके
२७ सामने पेश कर रहा हूँ, ताकि जाँच पड़ताल के बाद मेरे पास लिखकर भेजने के लिए कुछ होगा **क्योंकि** मुझे
इसमें कुछ समझदारी नही दिखती कि एक कैदी को बिनी किसी आरोप पत्र दाखिल किए आपके पास भेजूँ।''
२६ **तब** अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, 'तुम्हें इज़ाजत है कि अपने बचाव के लिए कुछ कहो'' तब पौलुस ने अपने हाथ फैलाकर
२ कहाः ''**यहूदियों** की तरफ से जो भी इल्ज़ाम मुझ पर लगाए गए हैं उनके बारे में जो मौका मुझे आज दिया गया है,
३ उसके लिए राजा अग्रिप्पा मै खुश हूँ। **खासकर** इसलिए क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि आप यहूदियों के बीच के
४ रीतिरिवाज़ों और सवालों के बारे में निपुण हैं। इसलिए मेरी यह बिनती है कि आप धीरज से मेरी बातों को सुनें। ''**मेरी**
५ जवानी के समय से सभी यहूदी मेरे जीवन को जानते हैं। यह भी कि मेरे शुरु के साल यरुशलेम मे ही गुज़रे थे। **शुरु**
ही से वे लोग यह गवाही देने में राज़ी थे कि हमारे मज़हब के सबसे सख्त फिरके 'फरीसियों' का मैं एक हिस्सा था।
६ आज **मै** यहाँ खड़ा हूँ और उस वायदे की उम्मीद के लिए मेरा इन्साफ हो रहा है, जिसे परमेश्वर ने हमारे बापदादों
७ को दिया था **इस** वायदे के पूरे होने के लिए हमारे बारह गोत्र दिन-रात आराधना करते हैं। राजा आग्रिप्पा, इसी आशा की
८ वजह से मुझे आज दोषी करार दिया जा रहा है। ''**आपको** इस बात से अचम्भा क्यों होता है, कि परमेश्वर मरे हुओं
९ को ज़िन्दा करते हैं? **मैं** सचमुच में यह सोचता था कि मुझे नासरत के यीशु के नाम के खिलाफ बहुत कुछ करना है
१० **और** मैंने यरुशलेम में ऐसा किया भी। महायाजकों से अनुमति पाकर मैंने यीशु के बहुत से लोगों को जेल में डलवाया
११ भी। जब उन्हें जान से मारा जाता था, मैं भी उनके विरोध मे शामिल हुआ करता था। **अक्सर** मैं उन्हें आराधनालय

२५:१३ यह अग्रिप्पा हेरोद अग्रिप्पा (१२:१) का बेटा था। वह यहूदिया के उत्तर में कुछ दायरे में राजा था। बर्निस उसकी छोटी बहन थी।

२५:१९ फेस्तुस को खुशखबरी की कोई जानकारी नही थी। इन्सान की ज़िन्दगी से सम्बन्धित सबसे ज़रुरी बातों से वह अनजान था।

२५:२४ २१:३६; २२:२२ देखें

२६:४-६ २२:२,३ २३:६ देखें

२६:७ यहाँ निर्दोष ठहराए लोगों के फिर से जी उठने की आशा की बात करता है - दानि. १२:२; यूहन्ना ५:२८,२९

२६:८ जिस परमेश्वर ने दुनिया को बनाया और पृथ्वी पर मनुष्य को रखा, वह आसानी से मरे हुओं को जिला सकते हैं। ध्यान दें खुशखबरी देते समय फिर से जी उठने की शिक्षा मुख्य धारा में थी (१:३)

२६:९ २२:३-५, १ तिमो १:१३ मण्डली को सताते समय पौलुस सोच रहा था कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है और सच्चे विश्वास को बचा रहा है, तुलना यूहन्ना १६:२

२६:१० ८:१-३; ९:१,२; २२:४ देखें

२६:११ मत्ती ९:३ में निन्दा पर नोट्स देखें। यही एक वह जगह है जहाँ यह कहा गया कि पौलुस ने मसीहियों को निन्दा करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की ।

में ही क्लेश पहुँचाता था। मैं निन्दा करने के लिए उन पर दबााव डाला करता था। उनके प्रति गुस्से में आकर मैं
१२ बड़े-बड़े शहरों तक उन्हे सताया करता था। **एक** बार जब मैं महायाजकों से इज़ाज़त पाकर अधिकार के साथ दमिश्क
१३ जा रहा था, **दोपहर** ही में, हे राजा सड़क पर आसमान से एक रोशनी आ गिरी। यह सूरज की रोशनी से भी ज्यादा
१४ थी। इस रोशनी ने मुझे और मेरे साथ के लोगों को घेर लिया। **जब** हम सभी ज़मीन पर गिर पड़े, मैने इब्रानी भाषा
में किसी को यह कहते सुना, 'शाऊल, शाऊल, तुम मुझे दुख क्यों दे रहे हो, तुम्हारे लिए हल के फ़ाल पर पैर मारना
१५,१६ मुश्किल होगा। **मैंने** जवाब में कहा, ''आप कौन हैं प्रभु?'' उन्होंने कहा, ''मैं यीशु हूँ जिसे तुम दुख दे रहे हो। **उठो**
१७ अपने पैरों के बल खड़े हो जाओ। कुछ बातें तुम ने देखी हैं, और बहुत कुछ मैं तुम्हे बताऊँगा। यह सब इसलिए **ताकि**
तुम इन सभी बातों के गवाह और मेरे सेवक बनों। ताकि तुम लोगो की आँखें खोल सको। उन्हें अँधेरे में से रोशनी
और शैतान की ताकत से परमेश्वर की तरफ मोड़ सको। यह सब इसलिए ताकि वे गुनाहों की माफी और मुझ पर
१९ भरोसा करने से शुद्ध किए हुए लोगों के साथ मीरास पा सकें। ''**इसलिए** हे राजा अग्रिप्पा, मैं स्वर्ग से मिले हुए दर्शन
२० का आनाज्ञाकारी न हुआ। **लेकिन** मैंने दमिश्क, यरुशलेम, यहूदियों के सारे प्रदेश के रहने वालों और फिर गैर यहूदियों
को बतलाया कि उन्हें अपना मन बदलना चाहिए। उन्हें मन बदलाव के बाद जिस तरह से जीना चाहिए, वैसे जीएँ भी।
२१ **इन्हीं** कारणों से यहूदियों ने मुझे प्रार्थना भवन में पकड़कर मार डालना चाहा। **इसलिए** परमेश्वर से मदद पाकर आज
तक छोटे-बड़े सभी को गवाही देता हूँ। जिन बातों की भविष्यद्वाणी भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने की थी, उसके आलावा
२३ मैं कुछ भी नहीं कहता रहा हूँ। **यह** कि मसीह दुख उठाएँगे और पहले वह व्यक्ति होंगे जो मरे हुओं में से जी उठेंगे।
२४ उन्हीं लोगों को और गैरयहूदियो को रोशनी देंगे।'' **इस** तरह से जब पौलुस ने अपनी सफाई दी तो बड़ी ऊँची आवाज़
२५ में फेस्तुस ने कहा, ''पौलुस तुम पागल हो गए हो। बहुत ज्ञान ने तुम्हें बावला बना दिया है।'' **लेकिन** उसने कहा,
२६ ''महाराजाधिराज मैं पागल नहीं हूँ, लेकिन सच्चाई और समझदारी की बात कहता हूँ। **राजा,** जिनके सामने मैं बड़ी
आज़ादी के साथ बोल रहा हूँ, इन सब बातों को अच्छी तरह से जानते हैं। **मुझे** पूरी तरह से मालूम है कि ये बातें
२७ उनसे छिपी नहीं हुयी हैं, क्योंकि यह बात किसी कोने में नहीं हुयी है। **हे** राजा अग्रिप्पा, क्या तू भविष्यद्वक्ताओं का विश्वास
२८ करता हैं? हाँ मैं जानता हूँ कि तू विश्वास करता है **तब** अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, ''तुम मुझे अपने मत में मिलाना

२६:१२-१५ ९:३-५; २२:५-६ देखें।

२६:१४ पौलुस के बदलाव के बारे में तीन में से इसी जगह हल के फाल के खिलाफ मारने की बात कही गयी हैं। मसीही लोगों के सताव में पौलुस के एक बलवई बैल की तरह मालिक के तेज हल के फाल के खिलाफ अड़ जाने की बात कही गयी है, जो उसे अपने वश में करना चाहता है। दूसरे शब्दों में पौलुस के मन मे कुछ बैचेनी और दर्द रहा होगा, कि वह लोगों के साथ बुरा क्यों कर रहा है।

२६:१६-१८ देखे, ९:६,१५, २२:१४,१५,२१ यहाँ पौलुस उन शब्दों को देता है जिनसे प्रभु ने उसे सेवक ठहराया

२६:१८ उसकी खुशखबरी देने वाले का काम यहाँ दिखता है। वह मसीह का वह हथियार था जो लोगों में सच्चाई, शैतान से आज़ादी (तुलना यूहन्ना ८:३३-३५,४४; इफि २:१,२तिमो २:२६ लाता है। १ इतिहास २१:१ मे शैतान पर नोट्स देखें। गुनाहों की माफी (मत्ती २६:२८, लूका २४:४७) और परमेश्वर के लोगों के मीरास (२०:३२; इफि १:११; कुल १:१२; १ पत १:४) यही काम खुशखबरी सुनानेवाले का भी है। पवित्र किया जाना मसीह पर भरोसा करना है - लोगो को अपना बनाने के लिए परमेश्वर विश्वासियों को अलग करते हैं।

२६:१९ पौलुस जैसा कि पहले भी कह चुका है कि उसका बदलाव वाद विवाद और लोगों के ज़ोर शोर के प्रचार से नही लेकिन स्वर्ग से मिलने वाले ज्ञान से (गल १:११,१२) उसका पुरा जीवन उसी के ऊपर निर्भर था।

२६:२० ९:२०-२०,२८। यहाँ बदलाव पर ज़ोर देखें। उसकी वजह से जीवन और रहनसहन में बदलाव दिखता है। देखें मत्ती ३:२,८; ४:१७; लूका १३:२-५। कोई प्रचारक जो बदलाव पर ज़ोर नहीं देता है, मसीह की खुशखबरी नही देता है। मण्डली में भी ऐसे लोग हैं, जिनका जीवन दुनिया के लोगों की तरह ही है

२६:२२ ''छोटे-बड़े'' से पौलुस को कुछ लेना देना नहीं था। किसी को भी खुशखबरी देते समय वह इसकी शर्तो को सामने रखता था।

२६:२३ लूका २४:२५-२७, ४६,४७ "ज्योति" - लूका १:८, ७८,७९: २:३२; यूहन्ना ८:१२

२६:२४ फेस्तुस रोमी था और वे बहुत से ईश्वरों को मानने के साथ अजीब अन्धविश्वास के शिकार भी थे। फिर भी फेस्तुस सोचता था कि यीशु के जी उठने पर विश्वास करना बेवकूफी है (मरकुस ३:२०,२१ से तुलना करें) लेकिन उसने पहचाना कि पौलुस विद्वान है तुलना करें ४:१२

२६:२५ जिन बातों को आत्मिक अन्धेरे में रहनेवाले लोग पागलपन समझते है, वे ही प्रायः सच और मानने लायक होती हैं, उसके लिए जिन्हें परमेश्वर सच्चाई में लाए हैं। पागल लोग तो वे हैं, जो अपने रास्ते पर चल रहे हैं, सच्चे परमेश्वर के भूखे नहीं हैं और यीशु की परमेश्वरीय सच्चाई पर ध्यान नही देते देखें सभो. ९:३ ।

२६:२६ यह देखे कि फेस्तुस दिलचस्पी नहीं दिखा रहा है, वह अग्रिप्पा की तरफ मुड़ जाता है।

२६:२८ हमें नही मालूम अग्रिप्पा कितना गंभीर था।

२९ चाहते हो" **पौलुस** ने कहा, "परमेश्वर ऐसा करे कि आप और मेरी सुनने वाले सभी लोग आज इस मत
३०,३१ में आ जाएँ।" **उसकी** इन बातों को सुनकर राजा, गवर्नर, बर्निस और वे सभी जो बैठे हुए थे, उठ खड़े हुए। **जैसे**
ही वे वहाँ से हटे, आपस में एक दूसरे से कहने लगे, "हिरासत में रखने और मौत की सजा के लायक इस व्यक्ति
३२ ने कुछ नहीं किया है।" **तब** अग्रिप्पा ने फेस्तुत से कहा, "अगर इस व्यक्ति ने सीज़र को अपील न की होती, तो यह
२७ छूट गया होता।" **जब** यह इरादा किया गया कि हम इटली को रवाना हों; तब उन्होंने पौलुस और दूसरे कैदियों
२ को औगुस्तुस के रेजीमेण्ट के सूबेदार जूलियस के हाथ सुपुर्द कर दिया। **अद्रमुत्तियुम** का एक जहाज एशिया के
किनारे की जगहों से होकर जाने पर था। हम उस पर चढ़ कर समुद्री सफर के लिए निकल पड़े। उस समय
३ अरिस्तर्खुस नामक थिस्सलुनीके का एक मकिदुनी हमारे साथ था। **अगले** दिन हम सिदोन पहुँचे। जूलियस पौलुस के
४ साथ नर्मी से पेश आया और उसे अनुमति दी कि वहाँ सेवा सत्कार होने के लिए अपने दोस्तों के पास जाए। **वहाँ** से जब
५ हम जलयात्रा के लिए समुद्र में उतरे, तो साइप्रस के नज़दीक से गुज़रे, क्योंकि हवा हमारे खिलाफ़ थी। **हम** किलिकिया
६ और पफूलिया के समुद्र से चले और लूकिया के मूरा में उतरे। **वहाँ** सूबेदार को एलेक्ज़ेन्ड्रिया का एक जहाज इटली
७ जाता हुआ मिला और उसने हमें उस पर चढ़ा दिया **जब** हम लोग बहुत दिनों तक खेते खेते मुश्किल से कनिदुस के
सामने पहुँचे, तो इसलिए कि हवा हमें आगे बढ़ने नहीं देती थी, हम सलमोने के सामने से होकर क्रीट की आड़
८ में खेने लगे। **उसके** किनारे-किनारे बड़ी मुश्किल से खेते हुए हम एक जगह पहुँचे जो मनोहर लंगरबारी कहलाता था।
९ वहाँ से लसया नगर पास था। **जब** बहुत दिन बीत गए और जलयात्रा भी जोखिम भरी हो गयी यहाँ तक कि उपवास
१० के दिन भी बीत चुके थे। इसलिए पौलुस उन्हें यह कहकर चेतावनी देने लगा, "**हे** भाइयो, मुझे ऐसा लगता है कि इस
११ समुद्र यात्रा में सामान और जहाज की ही नही लेकिन हमें अपनी जान की भी हानि हो सकती है।" **फिर** भी प्रधान मल्लाह
१२ और जहाज के मालिक से सूबेदार ज़्यादा कायल हुआ बजाए पौलुस की कही हुयी बातों से। **और** इसलिए कि जाड़े
में बन्दरगाह पर ठहरना अक्लमन्दी नहीं थी, ज्यादातर लोगों ने वहाँ से भी रवाना होने की सलाह दी। ताकि वे फीनीके
१३ पहुँचकर वहीं जाड़ा बिताँए। यह क्रेते का टापू है और दक्षिण पश्चिम तथा उत्तर पश्चिम की तरफ है। **जब** दक्षिण हवा
१४ धीरे चलने लगी तो यह समझकर कि उनका लक्ष्य पूरा हो गया है, लंगर उठाकर वे क्रेते के पास पास खेने लगे। **लेकिन**
१५ कुछ ही देर में यूरोक्लायडन नामक हवा, जहाज के खिलाफ चलने लगी। **जब** जहाज बीच ही में फँस गया और हवा
१६ का सामना न कर सका, तो हमने इसे हवा के रुख में बहने दिया। **क्लौडा** नामक टापू की आड़ में बहते-बहते,
१७ जीवन-नौका को बचाने में हमें बहुत मेहनत करनी पड़ी। **जब** उन्होंने इसे उठाया तब काफी तरकीब से जहाज़ को
१८ नीचे से बान्धा। लेकिन इस डर से कि कहीं बाजू के ढेर पर न गिर जाए,पाल को नीचे करते बहते चले गए। **और**
१९ जब हम तूफान से हिचकोले और धक्के खाने लगे, तो जहाज का सामान फेंकना शुरु कर दिया। **तीसरे** दिन अपने
२० हाथों से हमने जहाज का सामान फेंका। **बहुत** दिनों तक जब न सूरज और न तारे दिखाई दिए और बड़ा तूफान
२१ उठा हुआ था, तो हमने अपने बचने की उम्मीद तक छोड़ दी। **काफी** समय भूखा रहने के बाद पौलुस उनके बीच खड़ा
होकर कहने लगा, हे भाइयो, तुम्हें मेरी बात सुननी चाहिए थी और इस नुकसान से बचने के लिए क्रेते से रवाना ही
२२,२३ नहीं होना था। **लेकिन** अब हिम्मत बाँधो, क्योंकि जहाज को छोड़कर किसी की जान का नुकसान नहीं होगा। **क्योंकि**
२४ बीती रात जिस परमेश्वर का मैं हूँ और जिसकी सेवा करता हूँ, उनका एक स्वर्गदूत मेरे पास आ खड़ा हुआ। **उसने**
कहा, "पौलुस मत डरो। तुम्हे सीज़र के सामने खड़ा होना पड़ेगा हाँ, जो लोग तुम्हारे साथ यात्रा कर रहे हैं, उन्हें
२५,२६ परमेश्वर ने तुमको दे दिया है। **इसलिए**, भाइयो, हिम्मत रखो; क्योंकि जैसा मैं विश्वास करता हूँ, मुझे बताया गया

२६:२९ अधिकारियों और दूसरे उपस्थितजनों के सामने इस कैदी का मन कैसा था - वह चाहता है कि सभी मसीह के विश्वासी बनें। २ कुरि. ५:१३-१५ को सच्चाई कार्यरत थी।

२७:१ जहाँ रोमन साम्राज्य की राजधानी थी, वही इटली थी।
"हम" लूका पौलुस के साथ था
"सुबेदार", सौ सैनिको का रोमी मिलिट्री मुखिया

२७:२ "अरास्तंखस" - १९:२९; २०:४; कुल ४:१०; फिलेमान २४

२७:९ यहा "उपवास" प्रायश्चिम के दिन को दिखाता है। लैव्य. १६;२३:१६-३२ में नोट्स देखें। यह सितम्बर के आखिर और अक्टूबर की शुरुआत के बीच मे आता है। इस समय को भूमध्यसागर में जलयात्रा के लिए खतरनाक समझा जाता है। नवम्बर के आधे भाग से आगे तो जलयात्रा मानो असंभव है।

२७:१० पौलुस एक नबी था और परमेयश्वर ने उसे यह बताया भी था

२७:२२-२४ दूसरे और मुश्किल समयों में परमेश्वर ने पौलुस की किसी अलौकिक तरीके या किसी और तरीके से हिम्मत बढ़ाई थी

२७:२५ यह इशारा सिर्फ किसी खास पवित्रात्मा के ज्ञान की तरफ नही था लेकिन उस की तरफ जिसे बाईबल में दिया गया है। इसी तरह से वह अपनी ज़िन्दगी के सभी तूफानों को झेल सका था। तुलना कीजिए २४:१४; रोमि ४:२०,२१; २ कुरि. ४:१३,१४; २ तिमो. १:१२; ४:१८ ।

२७ है, वैसा ही होगा।' **फिर** भी यह ज़रुरी है कि हम किसी टापू पर जहाज को उतारें। **चौदहवीं** रात को जब हम आद्रिया
२८ में हिचकोले खा रहे थे, बीच रात में हमें लगा कि ज़मीन के पास पहुँच रहे हैं। **इस** डर से कि वे चट्टान से टकरा
३० न जाएँ, उन्होंने जहाज के पिछले भाग से चार लँगर डाले और दिन की रोशनी का इन्तज़ार करने लगे। **जब** ही मल्लाह जहाज
३१ से भाग निकलने पर थे, **पौलुस** ने सूबेदार और सैनिकों से कहा, "अगर वे जहाज में ठहरेंगे नहीं, तो हम बच नहीं
३२,३३ सकते" **तब** सैनिकों ने नाव की रस्सी काट डाली और इसे गिरने दिया। **जब** दिन निकलने पर था, पौलुस ने खाना
खाने के लिए ज़ोर डालते हुए कहा, "आज इन्तज़ार करते-करते चौदहवाँ दिन हो गया है, तुम लोगों ने कुछ खाया
३४ भी नहीं है। **इसलिए** मैं तुमसे बिनती करता हूँ कि अपनी सेहत की खातिर खाना खाओ। तुम्हारा बाल-बाँका भी नहीं
३५ होगा।" **उसकी** यह बात सुनकर उसने हाथ में रोटी लेकर सबकी मौजूदगी में परमेश्वर को धन्यवाद दिया। तोड़ने के
३६,३७ बाद वह खाने लगा। **तब** सभी ने हिम्मत बाँधी और खाना खाया। **जहाज** पर हम सब करीब दो सौ छिहत्तर लोग
३८,३९ थे। **जब** उन्होंने काफी खा लिया, अनाज को समुद्र में डाला और जहाज को हल्का कर दिया। **जब** सुबह की रोशनी हुयी
तो सूखी ज़मीन न देख पाए। लेकिन उन्होंने एक खाड़ी देखी, जो चौरस थी। उन्होंने इरादा किया कि अगर संभव हो
४० तो जहाज को उसी तट पर लगा दिया जाए। **उन्होंने** लंगर उतारकर समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों
४१ के बन्धन ढीले कर दिए और हवा के रुख में छोटे पाल खोलकर तट की तरफ चल पड़े। **लेकिन** दो समुद्र के मिलने
की जगह पर उन्होंने जहाज को टिकाया और उसका अगला हिस्सा ऐसा फंस गया कि हिल न सका। और पिछला भाग
४२ लहरों के थपेड़ों से टूटने लगा। **सैनिक** यह सोच रहे थे कि कैदियों को मार डाला जाए जिससे कि कैदी भी तैर कर
४३ फरार न हो जाएं। **लेकिन** सूबेदार ने पौलुस को बचाने के लिए ऐसा करने से रोका और हुकुम दिया कि जिन्हें तैरना
४४ आता है, वे पहले कूदकर किनारे पर पहुँच जाएँ। **बाकी** लोग उनके बाद पटरों और जहाज के दूसरे टुकड़ों के सहारे
२८ निकल जाएँ। इस तरह वे सभी सूखी ज़मीन पर सुरक्षित पहुँच गए। **जब** वे वहाँ से बच निकले, उन्हें मालूम पड़ा
२ कि उस टापू का नाम माल्टा है। **वहाँ** के आदिवासी लोग हमारे साथ नम्रता से पेश आए। उन्होंने हमारा स्वागत किया।
३ साथ ही उस ठण्ड में हमें गर्मी देने के लिए आग जला कर रखी। **जब** पौलुस ने एक लकड़ियों के गठ्ठे को आग
४ पर रखा, एक जहरीला साँप भाग निकलने के चक्कर में पौलुस के हाथ पर लिपट गया। **जब** उन लोगों ने इस साँप
को उसके हाथ पर लिपटे हुए देखा तो कहा, ज़रुर यह आदमी एक हत्यारा है। हालाँकि वह समुद्र के जोखिम से बच
५,६ निकला, लेकिन इन्साफ उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा। **पौलुस** ने साँप को झिड़क दिया और वह आग में गिर पड़ा। **वे** लोग
यह सोच रहे थे कि उसका बदन सूज जाएगा या वह गिर पड़ेगा। लेकिन उन्होंने देखा कि काफी समय के बाद भी
७ उसका कुछ नुकसान नहीं हुआ। यह देखकर वे सोचने लगे कि पौलुस कोई ईश्वर है। **उस** इलाके में टापू के एक नामी
८ व्यक्ति के खेत थे, जिसका नाम था पुबलियुस। उसने हमारा स्वागत किया और तीन दिन तक आवभगत की। **पुबलियुस**
का पिता तीन दिन से पेचिश और बुखार से परेशान था। पौलुस ने उसके घर जाकर उस पर हाथ रखकर उसे ठीक
९,१० कर दिया। **इस** घटना के बाद टापू के दूसरे बीमार भी आए और ठीक कर दिए गए। **उन्होंने** हमें बहुत इ़ज़्ज़त दी।
११ जब हम वहाँ से रवाना हुए तो हमारी ज़रुरत की चीजों को जहाज़ पर लाद दिया। **तीन** महीनों के बाद हम
१२ एलेक्ज़ेन्ड्रिया के जहाज पर रवाना हुए, जो सर्दियों में चिन्ह टापू पर ही था। इसके **सुरकूसा** पर पहुँचकर हमने तीन
१३ दिन वहीं बिताया **वहाँ** से चक्कर लगाने के बाद हम रेगियुम पहुँचे। एक दिन बाद दक्षिण हवा चली और हम अगले

२७:२७ "अद्रिया" एड्रियाटिक समुद्र जो इटली, माल्ला, क्रेते और यूनान के बीच था ।

२७:२८ "पुरसा" - समुद्र को नापने का एक शब्द जो मल्लाह इस्तेमाल करते थे। यह दो मीटर से कुछ कम होता है।

२७:३५ वे लोग आशीषित हैं जो अपने सभी अनुभवो में ऐसा भरोसा रखते हैं और दूसरों के लिए एक उदाहरण (नमूना) बनते हैं।
"धन्यवाद दिया" - मती १४:१९, इफि ५:२०; १ थिस्स. ५:१८; लैव्य ७:१२,१३; भजन ७:१७; ५०:१४,१५; ५६:१२

२७:४२ सैनिक डरे हुए थे कि कैदियों के भाग निकलने पर उन्हे सज़ा मिलेगी (१२:१९; १६:२७)

२७:४३ एक बार फिर परमेश्वर ने अपने सेवक की जान बचाई (२३:१२-३५)

२७:४४ २२-२५ पद

२८:१ "मलीता" अभी यह माल्टा कहलाता है। वह टापू सिसली के दक्षिण में यह १०० कि.मी. दूर है।
"गैर यूनानी लोग" - रोमि १:१४ के नोट्स देखें। मलीता के लोग बारबेरियन नही थे।

२८:४ रोमि २:१४,१५ से तुलना करें। परमेश्वर ने इन्साफ का विचार सभी जगह सभी लोगों में रखा है। ये लोग मानते है कि ईश्वर सही-सही बदला देते हैं
"लोग" या "बारबेरियन" यूनानी लोग दूसरे लोगों को ऐसे ही बुलाते थे हालाँकि लोग सभ्य हो चुके थे।

२८:५ मरकुस १६:१८ इस तरह का यही एक उदाहरण नए नियम में है।

२८:६ उन्होंने सोचा कि पौलुस के पास अलौकिक ताकत थी। वे सोचते थे कि सिर्फ ईश्वर ही ऐसी शक्ति रखते थे। तुलना करें १४:११-१८

२८-८ मरक्रुस १६:१८

२८:१२ सिसली टापू का सिराकूज़ खास बन्दरगाह था।

२८:१३ रेहजियम इटली के सबसे दक्षिण में था। पुतयोली, दक्षिण इटली का मुख्य बन्दरगाह था। आज के नेपल्स के पास यह था।

१४ दिन पुतियुली आ गए। **वहाँ** पर हमने कुछ भाइयों को पाया जिन्होंने हमसे कहा कि उनके साथ सात दिन तक रहें।
१५ इसलिए हम रोम को रवाना हो गए। **जब** भाइयों ने हमारे बारे में सुना, तो वे अप्पियुस और तीन सराए तक हमसे
१६ मिलने आ गए। जब पौलुस ने उन्हें देखा तो परमेश्वर को धन्यवाद किया और हिम्मत की। **जब** हम रोम पहुँचे तब
सूबेदार ने कैदियों को सुरक्षा दल के प्रधान को सौंप दिया। लेकिन पौलुस को एक सिपाही की सुरक्षा में अकेले रखा
१७ गया। **तीन** दिन बाद पौलुस ने यहूदियों के अगुवों को बुलाया। जब वे इकट्ठे हुए उसने उनसे कहा, "हे भाइयो, हालाँकि
मैंने लोंगो के खिलाफ न ही अपने बुज़ुर्गों के रीति रिवाज़ों के खिलाफ कुछ किया है, यरुशलेम ही से मुझे एक गुनाहगार
१८ की तरह रोमियों के सुपुर्द किया गया। **मुझे** परखने के बाद मुझे छोड़ देना चाहिए था, क्योंकि मुझमें मौत की सज़ा
१९ का कोई कारण नहीं पाया गया था। **लेकिन** जब यहूदियों ने मौत की सज़ा पर ज़ोर डाला, तो सीज़र के सामने अपील
२० करने को मैं मजबूर हो गया। यह इसलिए नहीं क्योंकि मुझे अपने देश से कोई शिकायत थी। **इसलिए**, इसी वजह
से मैंने तुम्हें बुलाया है कि तुमसे मिलकर बातचीत करुँ क्योंकि इस्राएल की आशा के लिए मै इस जंजीर से बंधा हुआ
२१ हूँ।" **उन्होंने** उस से कहा, "तुम्हारे बारे में हमने यहूदिया से कोई चिट्ठी नही पायी है। जो लोग यहाँ पर आए उन्होंने
२२ तुम्हारे बारे में कुछ बुरा भी नही कहा है। **लेकिन** हम तुमसे वह सब सुनना चाहते हैं, जो तुम सोचते हो। जहाँ तक
२३ इस मत का सवाल है हम जानते हैं, कि हर जगह इसके खिलाफ कहा जाता है।" **और** जब उन्होंने उसके लिए एक
दिन ठहराया बहुत से लोग वहाँ उससे मिलने आए। उसने परमेश्वर के राज्य के बारे मे साफ-साफ बतलाया। सुबह
से शाम तक मूसा के नियमशास्त्र और भविष्यवक्ता की किताबों से वह बड़े ज़ोरदार तरीके से यीशु के बारे में सिखाता
२४,२५ रहा। **कुछ** लोग उन बातों से चिढ़ गए और कुछ ने विश्वास किया। **जब** आपस में वे एक विचार के नहीं थे और
पौलुस के कुछ कहने पर कि उसे छोड़कर चले गए। उसने कहा था, "हमारे पुरखों से पवित्रात्मा ने यशायाह को इस्तेमाल
२६,२७ करके कहा था **तुम** सुनते तो रहोगे, लेकिन समझोगे नहीं । देखते रहोगे, लेकिन बूझोगे नहीं। **क्योंकि** तुम्हारा मन
मोटा है कान बहरे हो गए हैं। उन्होंने अपनी आँखे बन्द की हैं, ताकि ऐसा न हो कि वे कभी देखें और कानों से सुनें।
२८ मन से समझें मन बदल जाएँ और मैं उन्हें ठीक (स्वस्थ) कर दूँ। **इसलिए** तुम जान लो कि परमेश्वर की यह मुक्ति
२९ गैर यहूदियों के पास भेजी गई है और वे इसे सुनेंगे। **जब** उसने यह कहा तो यहूदी आपस में बहुत बहस करने लगे
३०,३१ और वहाँ से चले गए। **वह** पूरे दो साल किराए के घर में रहा **जो** लोग उसके पास आते थे, उन सब से वह भेंट
करता रहा और बिना किसी रुकावट और डर के परमेश्वर के राज्य की खुशखबरी देता और यीशु मसीह की बातें
सिखाता रहा ।

२८:१४,१५ "भाई" न्यूटेस्टामेन्ट में मसीह को अपनाने वालो के लिए यह इस्तेमाल किया गया है। काफी लम्बी, खतरनाक यात्रा के बाद मिलने वाले स्वागत से पौलुस का मन हरा भरा हो गया

२८:१६ पौलुस को काफी आज़ादी मिली थी (पद ३०) क्योंकि उसके खिलाफ कोई आरोप नहीं था (२५:२५-२७; २६:३१,३२) और वह एक रोमी नागरिक था

२८:१७ बिना समय बर्बाद किए रोम मे यहूदी लोगों तक उसने पहुँचना चाहा था। देखें रोमि ९:१-३

२८:१९ २२:२१ देखें

२८:२० "आशा" २३:६; २४:१५; २६:६

२८:२२ "संघ" वे सोच रहे थे कि मसीही मत यहूदी मत का एक बेइज़्जत हिस्सा है।

२८:२३ "परमेश्वर का राज्य" - १:३; ८:१२; १४:२२; १९:८; २०:२५; मत्ती ४:१७
"नियमशास्त्र" - भविष्यद्वक्ताओं, पूरे ओल्ड टेस्टामेन्ट की तरफ इशारा करता है। पौलुस के तरीके को देखें, जो खुशखबरी फैलाने के लिए उसने इस्तेमाल किया। उसने परमेश्वर के ज्ञान को अच्छे से बताया और ओल्ड टेस्टामेन्ट से वादविवाद भी किया। उसका संदेश विश्वसनीय और सच्चा था (२७:३५)। वह परमेश्वर के वचन पर ही टिका था।

२८:२४ मत्ती १०:३४ से तुलना करें, यूहन्ना १०:१२,१३; १०:१९-२१

२८:२५-२७ यशा. ६:६,१०; मत्ती १३:१३-१५; रोमि ११:८ "पवित्र आत्मा ने कहा" शब्दों पर ध्यान दें। पौलुस जानता था कि ओल्ड टेस्टामेन्ट पवित्र आत्मा की प्रेरणा से है (२ तिमो. ३:१६)। इसमें भी वह यीशु का सच्चा शिष्य था मत्ती ५:१७,१८; यूहन्ना १०:३५)। यहूदियों की किताब ही में उनके न सुनने की बात कही गयी थी

२८:२८ देखें १४:४६-४८; १८:६; २२:१८,२१; रोमि १:१६

२८:३१ पद २३ हम फिर से देखते है कि प्रेरितों के परमेश्वर के राज्य की खुशखबरी देने और यीशु के बारे मे शिक्षा निकटता से जुड़ी है। मत्ती ४:१७ में परमेश्वर के राज्य की शिक्षा देखें। लूका शुरुआती मण्डली के इतिहास को रोम मे पौलुस के साथ बन्द करता है। उसका एक मकसद यह था कि दिखाए कि मसीह की बातें १:८ में कैसे पूरी हुयीं। जो कुछ उसे करने के लिए भेजा गया था, वह उसने पूरा किया। इसके पहले कि पौलुस इन्साफ के लिए राजा के सामने लाया जाए, वह लिख चुका था।

रोम में इस समय के आखिर में पौलुस के साथ क्या हुआ था, हमें नही मालुम। हमे जानने की ज़रुरत भी नही। इतिहास बताता है कि आखिर में उसका सिर अलग कर दिया गया। इस तरह से कुछ ही समय में सभी प्रेरित और पौलुस का देहान्त होने पर मसीह के पास चले गए । मसीह का काम किसी इन्सान पर नहीं टिका हुआ है। जो यीशु ने शुरु किया (१:१) वह जारी है और पूरा होकर रहेगा। वे खुश हैं जो उसमें हिस्सा लेते हैं।